गोचर विचार

(PLANETARY TRANSITS)

विषय सूची

1

गोचर का स्वरूप और उसका आधार

गोचर में गुरु और शनि का महत्त्व। गोचर अष्टक-वर्ग का ही एक भाग है। चन्द्र लग्न से ही गोचर फलादेश क्यों किया जाता है। सूर्यादि ग्रहों का गोचर फल।

ब्रह्माण्ड में स्थित ग्रह अपने-अपने मार्ग पर अपनी-अपनी गति से सदैव भ्रमण करते हुए एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते रहते हैं। जन्म समय में ये ग्रह जिस राशि में पाए जाते हैं वह राशि उनकी जन्मकालीन राशि कहलाती है जो कि जन्म कुण्डली का आधार है और जन्म के पश्चात् किसी भी समय वे अपनी गति से जिस राशि में भ्रमण करते हुए दिखाई देते हैं, उस राशि में उनकी स्थिति गोचर कहलाती है। गोचर शब्द 'गम्' धातु से बनता है और उसका अर्थ है 'चलने वाला'। ब्रह्माण्ड में करोड़ों तारे हैं। वे सब स्थिरप्राय हैं। तारों से ग्रहों की पृथक्ता को दर्शाने के लिए उनका नाम 'गो' अर्थात् चलने वाला रखा गया। 'चर' शब्द का अर्थ भी चलना है अर्थात् गतिमय होना। तो 'गोचर' शब्द का अर्थ हुआ—ग्रहों का निरन्तर चलना, अर्थात् निरन्तर गतिमय होना है। गोचर ग्रहों के प्रभाव उनके राशि परिवर्तन के साथ-साथ बदलते रहते हैं। जातक के वर्तमान समय की शुभाशुभ जानकारी के लिए गोचर विचार सरल और उपयोगी विचार है। वर्ष भर के समय की जानकारी गुरु और शनि से, मास की सूर्य से और प्रतिदिन की चन्द्रमा के गोचर से प्राप्त की जा सकती है। **वास्तविकता तो यह है कि किसी भी ग्रह का गोचर फल उस ग्रह की अन्य प्रत्येक ग्रह से स्थिति के अनुरूप ही कहना चाहिए न कि केवल चन्द्रमा की स्थिति से।** अष्टक वर्ग में इसी विधि का उल्लेख किया गया है। इसी अष्टक वर्ग पद्धति से ही चन्द्रमा की स्थिति से अन्य ग्रहों की स्थिति का फल लिखा जाएगा। इस सन्दर्भ को वृहज्जातक अध्याय 9 श्लोक 1 में स्पष्ट किया गया है कि चन्द्रमा से अमुक-अमुक भावों में सूर्य कब अच्छा फल करता है। या किन-किन

भावों में मंगल अच्छा फल करता है आदि-आदि। **चन्द्र अष्टक वर्ग के ही विस्तृत वर्णन का नाम गोचर पद्धति है।** इस पद्धति में जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, ग्रहों की चन्द्र से किस भाव में स्थिति है से ही फलों का निर्णय किया गया है। जन्म कुण्डली में ग्रहों का फल भी बिना चन्द्रकुण्डली से ग्रह स्थिति को देखे सत्य रूप से नहीं कहा जा सकता। चन्द्र का महत्त्व लग्न से कम नहीं है। ज्योतिष शास्त्र के पिता ने (बृहत्पाराशर होराशास्त्र अध्याय 12, श्लोक 11 में) कहा है :

''एवं चन्द्राच्च विज्ञेयं फलं जातककोविदैः''

अर्थात् ज्योतिष शास्त्र के पंडितों को लग्न की भांति चन्द्र लग्न से भी फलादेश कहना चाहिए।

गोचर में ग्रहों का विचार लग्न से किया जाये अथवा जन्म राशि से—यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। इस प्रश्न का उत्तर 'ज्योतिर्निबन्ध' का निम्नांकित श्लोक कुछ हद तक निर्देशित करता है :

''विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत।''

अर्थात् विवाह और अन्य मंगल कार्यों में, यात्रा आदि में, और ग्रहों के 'गोचर' विचार में जन्मराशि की प्रधानता है न कि नाम राशि की। दक्षिण भारत के मान्य ज्योतिष ग्रन्थ 'फलदीपिका' में भी चन्द्र लग्न से अर्थात् जन्म राशि से गोचर विचार करने का निर्देश है :

''सर्वेषु लग्नेष्वपि सत्सु
चन्द्रलग्नं प्रधानं खलु गोचरेषु।''

अर्थात् सब प्रकार की लग्नों (लग्न, सूर्य लग्न, चन्द्र लग्न) के होते हुए भी गोचर विचार में प्रधानता चन्द्र लग्न ही की है। अर्थात् चन्द्र लग्न का महत्त्व ज्योषिशास्त्र में कुछ कम नहीं। इसका अनुमान 'जातक पारिजात' के राजयोग अध्याय 7 के निम्नलिखित श्लोक 13 से भी हो जाएगा—

''नीचं गतो जन्मनि यो ग्रह स्यात्
तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः
सचन्द्रलग्नाद् यदि केन्द्रवर्ती
राजा भवेद् धार्मिको चक्रवर्ती।''

अर्थात् जन्म के समय जो ग्रह नीच राशि में स्थित हो, यदि उस नीच राशि का स्वामी या उस ग्रह के उच्च स्थान का स्वामी चन्द्र लग्न से केन्द्र में हो तो वह जातक चक्रवर्ती राजा होता है। यहाँ केन्द्र स्थिति चन्द्र से कही है जिससे चन्द्र की लग्न

रूप से महिमा व्यक्त है। **देवकेरलम्** में भी पृष्ठ 300 पर श्लोक संख्या 3005 में लिखा है—

"चन्द्रलग्नं शरीरं स्यात् लग्नं स्यात् प्राणसंज्ञकम्
ते उभे संपरीक्ष्यैव सर्वं नाडी फलं स्मृतम्।"

अर्थात् **चन्द्र लग्न शरीर है** तथा लग्न प्राण है, इन दोनों का सम्यक् विचार करने के उपरान्त ही कुण्डली का फल कहना चाहिए।

लग्न और चन्द्र लग्न दोनों का एक जैसा ही महत्त्व है। यही कारण है कि उत्तर भारत में यह प्रथा है कि चाहे छोटे ब्योरे वाली जन्मपत्री ही क्यों न हो उसमें लग्न कुण्डली के साथ चन्द्र कुण्डली भी अवश्य बना दी जाती है।

चन्द्र लग्न में लग्न की अपेक्षा क्या विशेषता है, इस ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहेंगे। अष्टक वर्ग पद्धति में, जिसका कि गोचर एक अंग मात्र है, समस्त ग्रह और लग्न मिलकर इस बात का निर्णय करते हैं कि वे किसी भी ग्रह विशेष को कहाँ-कहाँ शुभ अंक दे सकते हैं। उनके द्वारा शुभता प्रदान करने का यह कार्य उनके पारस्परिक गुण-दोषों, शत्रुता-मित्रता, नैसर्गिक शुभता-अशुभता आदि ग्रह प्रदर्शित बातों पर ही निर्भर करता है। शत्रुत्व अथवा मित्रत्व का यह कार्य दो ग्रहों ही के बीच में अधिक विचारणीय है न कि किसी ग्रह और लग्न राशि के बीच में, विशेषतया इसलिए कि लग्न एक नहीं बारह हैं। ग्रहों के लिए यह कैसे संभव था कि वे अपना शुभ प्रभाव बारह लग्नों से विविध स्थानों पर एक साथ क्रमानुसार व्यक्त कर ही देते। अत: यह इच्छा रखते हुए भी कि ग्रहों का फल गोचर में लग्न से कहा जाए हम अष्टक वर्ग पद्धति में ऐसा नहीं कर सकते। **महर्षियों ने गोचर फल निर्णय के लिए एक ऐसे संवेदनात्मक ग्रह को अर्थात् चन्द्र को चुना जो ग्रह होने के साथ-साथ लग्न रूप भी है। बस, इसलिए गोचर में जन्मकालीन चन्द्र को न कि लग्न को आधार माना गया है।**

सूर्य का गोचर में फल

जन्मकुण्डली में चन्द्रमा जहाँ स्थित है वहाँ से 3, 6, 10 और 11वें भाव पर सूर्य का जो प्रभाव है वह उन स्थानों में सूर्य के लिए बलप्रद तथा शुभताप्रद है। इसी बात को हम ऐसे भी कह सकते हैं कि जब सूर्य चन्द्रमा से तृतीय, छठे, दसवें और ग्यारहवें भाव में गोचर वश पहुँचता है तब शुभ फल करता है, शेष भावों में सूर्य का फल अशुभ माना गया है।

चन्द्र लग्न में जब गोचर का सूर्य आता है तब धन का नाश होता है, व्यक्ति के मान-सम्मान में कमी आती है, स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। रक्तचाप, हृदय रोग, थकावट, उदर विकार, पेट तथा नेत्र के रोगों से कष्ट उठाना पड़ता है। प्रत्येक कार्य में विलम्ब होता है, समय पर भोजन नहीं मिलता, बिना किसी उद्देश्य के भटकना होता है और जातक को अपने परिवार से दूर होना पड़ता है। सम्बन्धियों, मित्रों और सज्जनों से विवाद होने के कारण मानसिक व्यथा रहती है।

चन्द्र लग्न में द्वितीय स्थान में जब गोचर का सूर्य जाता है तब दुष्ट और बुरे लोगों से मुलाकात होती है। व्यक्ति का निज स्वभाव भी धूर्तता तथा नीचता से भरा होता है। सिर और आँखों में पीड़ा रहती है। व्यापार और धन-सम्पत्ति में हानि का भय रहता है। मित्रों और सम्बन्धियों से विवाद होता है और व्यक्ति के लिए सूर्य गोचर का पूरा महीना सुख-रहित व्यतीत होता है।

चन्द्र लग्न से तृतीय स्थान में जब सूर्य गोचर वश आता है तो रोगों से मुक्ति, सुख, चैन आदि शुभ फल मिलते हैं। सज्जनों एवं उच्च राज्याधिकारियों से मेल-मुलाकात होती है। पुत्रों तथा मित्रों से धन-लाभ तथा सम्मान होता है। शत्रु सरलता से परास्त होते हैं तथा व्यक्ति धन, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इस अवधि में प्रायः पद की प्राप्ति होती है और व्यक्ति सबसे सद्व्यवहार करते हुए कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

चन्द्र से चतुर्थ स्थान में जब गोचर का सूर्य जाता है तब मानसिक और शारीरिक व्यथा रहती है, घरेलू झगड़ों के कारण सुखों में कमी आ जाती है और जमीन-जायदाद सम्बन्धी अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो जाती है, अच्छी सुख-सामग्री नहीं मिलती। यात्रा में असुविधा होती हैं। लोग परेशान करते हैं, पत्नी सुख में भी अड़चन आती है। मान-हानि की संभावना रहती है।

चन्द्र से पंचम भाव में गोचर का सूर्य जब जाता है तब विशेषतया मानसिक भ्रम उत्पन्न होता है। शारीरिक और मानसिक शक्ति में कमी आती है। धनहानि भी होती है। स्वयं और सन्तान को रोग सताता है। राज्याधिकारियों से वाद-विवाद बढ़ता है। यात्रा में दुर्घटनाएं होती हैं। धनहानि भी होती है। व्यक्ति दीनता का अनुभव करता है।

चन्द्र से छठे स्थान में जब सूर्य गोचर में आता है तब कार्यसिद्धि और सुख की प्राप्ति होती है, अन्न-वस्त्रादि का लाभ होता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। रोगों का नाश होता है। राज्याधिकारियों से लाभ रहता है। निज प्रताप में वृद्धि होती है। शोक-मोह आदि भावों का नाश होकर चित्त और शरीर स्वस्थ रहते हैं।

चन्द्र से सातवें स्थान में सूर्य गोचर से दाम्पत्य जीवन में वैमनस्य होता है। स्त्री और पुत्र बीमार रहते हैं। कार्यों में असफलता होती है। व्यवसाय में बाधायें उत्पन्न होती हैं। कष्टकारी यात्राएं करनी पड़ती हैं। उदर पीड़ा, सिर पीड़ा आदि रोग होते हैं। धन और मानहानि के कारण व्यक्ति के मन में क्लेश रहता है।

चन्द्र से अष्टम भाव में गोचर के सूर्य के जाने पर जातक को अपने बुरे कर्मों का फल मिलता है। शत्रुओं से झगड़ा होता है। शरीर में पीड़ा रहती है। बवासीर, अपच आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। राज भय (जुर्माना, मुकदमा, गिरफ्तारी) होता है। स्त्री को भी कुछ कष्ट होता है। अधिक व्यय होता है। कभी-कभी ज्वर, रक्तचाप आदि के कारण मृत्यु भी हो सकती है। अपमान का भी विशेष भय रहता है।

चन्द्र से नवम स्थान में गोचरवश जब सूर्य जाता है तब भी कांति का क्षय, झूठा आरोप, बिना कारण धन और पुण्य की हानि, आय में कमी, रोग एवं अशान्ति उत्पन्न होते हैं। बड़ों से, मित्रों से तथा भाइयों से विरोध रहता है। अपमान का भय रहता है। हर प्रयत्न में असफलता मिलने के कारण व्यक्ति दीन-सा बना रहता है।

चन्द्र से दशम भाव में गोचरवश सूर्य के जाने पर धन, स्वभाव, मित्र आदि का सुख प्राप्त होता है। राज्याधिकारियों और प्रतिष्ठित लोगों से मित्रता बढ़ती है। सज्जनों द्वारा लाभ होता है, प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है। पदोन्नति का सुअवसर प्राप्त होता है। मान, गौरव तथा प्रताप बढ़ते हैं।

चन्द्रमा से एकादश भाव में गोचरवश सूर्य के जाने से धन-प्राप्ति, उत्तम भोजन, नवीन पद और बड़ों के अनुग्रह की प्राप्ति होती है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है और आध्यात्मिक एवं मंगल कार्य होते हैं। सात्विकता में वृद्धि होती है। राज्य से कृपा प्राप्ति होती है। यह समय पदोन्नति का होता है, पितादि बड़ों से लाभ रहता है।

चन्द्र से द्वादश भाव में गोचरवश रवि के आ जाने से दूर देश में भ्रमण होता है। कार्य एवं पद की हानि होती है। व्यय अधिक रहता है। कई प्रकार की कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं। ज्वर आदि रोग उत्पन्न होते हैं। पेट में अधिक गड़बड़ रहती है। राज्य की ओर से विरोध होता है। आँखों में कष्ट की संभावना रहती है। मित्रों का व्यवहार भी शत्रुतापूर्ण हो जाता है। अपमान का भय रहता है।

सूर्य की राशि प्रवेश की अंग्रेजी तारीखें

उपरोक्त पंक्तियों में चन्द्र लग्न से क्रमश: बारह स्थानों में गोचर वश सूर्य का फल कहा गया है। प्रति मास प्राय: निम्नलिखित तारीखों को सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है और वहाँ करीब एक मास रहता है। इन तारीखों का ध्यान रख कर, बिना पंचांग की सहायता के केवल जन्म राशि से सूर्य की गोचर स्थिति द्वारा किसी भी व्यक्ति का मास में यात्रा, उत्सव आदि का फल बताया जा सकता है—

	सूर्य का राशि प्रवेश		अंग्रेजी तारीखें
1.	मेष राशि प्रवेश		13 या 14 अप्रैल को
2.	वृष	”	14 या 15 मई को
3.	मिथुन	”	15 जून को
4.	कर्क	”	16 या 17 जुलाई को
5.	सिंह	”	16 अगस्त को
6.	कन्या	”	17 सितम्बर को
7.	तुला	”	17 अक्टूबर को
8.	वृश्चिक	”	15 नवम्बर को
9.	धनु	”	16 दिसम्बर को
10.	मकर	”	13 या 14 जनवरी को
11.	कुम्भ	”	12 फरवरी को
12.	मीन	”	14 मार्च को

सूर्य का उपरोक्त राशि संचार भारतीय निरयण पद्धति के अनुसार है न कि पाश्चात्य मतानुसार।

चन्द्र गोचरफल

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जहाँ स्थित है वहाँ से 1, 3, 6, 7, 10 और 11वें भाव पर उसका जो प्रभाव है वह उन स्थानों पर चन्द्र के लिए बलप्रद तथा शुभ फलदायक है। दूसरे शब्दों में जब गोचर का चन्द्रमा जन्म के चन्द्रमा या चन्द्र राशि से उपरोक्त भावों में आता है तो शुभ फल करता है। शेष भावों में उसे अशुभ समझना चाहिए।

चन्द्र लग्न में ही गोचरवश जब चन्द्रमा आता है तब व्यक्ति सुख और आनन्द प्राप्त करता है। रोग-मुक्त रहता है। उत्तम भोजन, वस्त्र और शय्या-सुख प्राप्त होता है। स्त्री संभोग का अवसर आता है। उपहारादि व धन की प्राप्ति होती है।

चन्द्र लग्न से द्वितीय भाव में गोचर का चन्द्रमा मानसिक असन्तोष देता है। कुटुम्ब वालों से नहीं बनती। नेत्रों से पीड़ा या कोई अन्य रोग होता है। अच्छा भोजन व सुख प्राप्त नहीं होता। कार्यों में असफलता मिलती है। पाप कर्मों में प्रवृत्ति होती है विद्या में रुचि नहीं रहती है।

चन्द्र से तृतीय भाव में गोचर का चन्द्रमा आने से धन की प्राप्ति होती है। वस्त्रादि का सुख मिलता है। स्वास्थ्य ठीक रहता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। मन प्रसन्न रहता है। प्रेमिकाओं से सहवास सुख प्राप्त होता है। बन्धुजनों से लाभ रहता है। व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़ता है। भाग्य में वृद्धि होती है।

चन्द्र से चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा के आने से स्वजनों से विवाद होता है। चित्त चंचल रहता है। छाती में विकार होता है। भोजन नहीं मिलता और नींद में बाधा उत्पन्न होती है। जल तथा स्त्री जाति से भय होता है। समाज में भी अपमान का भय रहता है। स्त्री-सुख में कमी आ जाती है।

चन्द्र से पंचम स्थान में गोचर में चन्द्रमा आ जाने पर यात्रा में कष्ट और दुर्घटना की संभावना रहती है। कार्य सफल नहीं होता। मन में अशान्ति रहती है। धन हानि होती है। पेट में जलोदर आदि रोगों की सम्भावना रहती है। कामुकता में वृद्धि होती है तथा जातक उचित सलाह नहीं दे पाता है।

चन्द्र से छठे स्थान में गोचरवश चन्द्रमा के आ जाने पर धन लाभ होता है तथा जातक का स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। यश और आनन्द की प्राप्ति होती है। महिलाओं से सम्पर्क बढ़ता है तथा अपने घर में भी सुख प्राप्त होता है। शत्रुओं की पराजय होती है। रोगों का नाश होता है; परन्तु व्यय में अधिकता रहती है।

चन्द्र से सातवें स्थान में गोचरवश चन्द्र के आने पर धन-लाभ होता है। जातक को पर्याप्त काम-सुख (sexual satisfaction) मिलता है। छोटी-छोटी लाभदायक यात्राएं होती हैं। वाणिज्य तथा व्यवसाय में लाभ रहता है। उत्तम भोजन, क्षीर आदि पेय पदार्थ तथा शयन-सुख मिलता है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है, वाहन और ख्याति की प्राप्ति होती है विशेषतया यदि शुक्र भी गोचर में शुभ फल दे रहा हो।

चन्द्र से अष्टम भाव में गोचर वश चन्द्रमा के आने पर व्यक्ति के अपच, श्वास, खांसी तथा छाती के रोग उत्पन्न होते हैं। झगड़ा-विवाद और मानसिक क्लेश रहता है। नियत समय पर अच्छा भोजन प्राप्त नहीं होता। अचानक महान् कष्ट में ग्रसित हो जाने की सम्भावना रहती है। धन का नाश होता है।

चन्द्र से नवम भाव में गोचरवश चन्द्रमा के जाने पर राज्य की ओर से परेशानी होती है और व्यवसाय में हानि उठानी पड़ती है। पुत्रों से मतभेद रहता है व उनका स्वास्थ्य भी नरम रहता है। उदर छाती की कोई शिकायत जैसे हैजा, निमोनिया आदि होती है। जातक का भाग्य उसका साथ नहीं देता। शत्रु परेशान करते हैं। राज्य की ओर से परेशानी उठानी पड़ती है।

चन्द्र से दशम स्थान में गोचरवश चन्द्रमा जाने पर अभीष्ट कार्य की सिद्धि होती है। सभी कार्य सरलता से पूर्ण हो जाते हैं। जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। राज्य की ओर से धन और सम्मान की प्राप्ति होती है। नौकरी में पदोन्नति होती है। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहते हैं। उत्तम गृह-सुख मिलता है।

चन्द्र से ग्यारहवें भाव में गोचर का चन्द्रमा जाने पर मनुष्य की आय में वृद्धि होती है। व्यापार से पर्याप्त लाभ होता है। पुत्रादि से सुख होता है। उत्तम भोजन समयानुकूल प्राप्त होता है। मित्रों से हास-परिहास और स्त्री-सुख में समय व्यतीत होता है। प्रफुल्लित मन महत्त्वाकांक्षा पूर्ति की ओर अग्रसर होता है। स्त्री पक्ष से लाभ रहता है और तरल पदार्थों से आय की सम्भावना होती है।

चन्द्र से द्वादश में गोचरवश चन्द्रमा के जाने से शारीरिक कष्ट होता है विशेषतया आँखों में रोग का भय रहता है। धन और मान की हानि होती है। पुत्रादि का सहयोग प्राप्त नहीं होता। मानसिक चिन्ताएं बढ़ जाती है। व्यय अधिक होता है। वाराही संहिता में आया है कि : **अन्त्यगो वृषभ चरितान्दोषान् अन्ते करोति हि सव्ययान्** अर्थात् द्वादश भाव में गोचरवश गया हुआ चन्द्र अधिक व्यय के साथ-साथ उन्मत्त बैल का व्यवहार भी करवाता है और शक्ति का अपव्यय तथा अनर्थ करवाता है।

विशेष—दूसरे, पांचवें तथा नवें स्थान में जो गोचर चन्द्र का अशुभ फल लिखा है वह अशुभ फल केवल चन्द्रमा के 'क्षीण' होने पर ही होता है। यदि उक्त भावों में प्रकाशमय बली चन्द्र गोचरवश आये तो वह शुभ फल ही करता है। सूर्य से 72 अंश आगे अथवा पीछे यदि चन्द्र स्थित हो अर्थात् अमावस्या से 6 तिथि आगे या पीछे का चन्द्रमा हो तो वह 'क्षीण' संज्ञा वाला होता है।

मंगल गोचरफल

मंगल चन्द्र लग्न से गोचरवश 3, 6 और 11वें भाव में शुभ फल देता है। शेष भावों में इसका फल अशुभ बताया गया है।

चन्द्र लग्न में यदि गोचरवश मंगल हो तो उस समय कार्य सफल नहीं होते। व्यक्ति ज्वर, व्रण (घाव) और रक्त विकार से कष्ट उठाता है। आग, जहर और हथियार से शरीर कष्ट की सम्भावना होती है। बवासीर आदि रोगों से पीड़ित होना पड़ता है। स्त्री को भी ज्वर आदि से कष्ट होता है। दुर्जनों से कष्ट मिलता है। यात्रा में दुर्घटनाएं होती हैं। अन्य भी कई प्रकार के उपद्रव होते हैं।

चन्द्र से द्वितीय भाव में यदि मंगल गोचरवश जाए तो बल की हानि होती है, कार्यों में असफलता मिलती है। दुष्ट मनुष्यों, चोरों, अग्नि आदि से नुकसान व धन की हानि होती है। जातक कठोर वचन बोलता है। राज्य की ओर से भी दण्डित होने का भय रहता है। शरीर में पित्त की अधिकता से कष्ट रहता है।

चन्द्र से तृतीय भाव में यदि मंगल गोचरवश जाए तो जातक का साहस बढ़ता है तथा उसके शत्रु पराजित होते हैं। धातुओं से धन मिलता है। निज प्रभाव में वृद्धि होती है। राज्य कर्मचारियों या राज्य की ओर से सहायता प्राप्त होती है। तर्कशक्ति बढ़ती है तथा धन की वृद्धि होती है।

चन्द्र से चतुर्थ भाव में यदि मंगल गोचरवश गया हो तो शत्रुओं की वृद्धि और स्वजनों द्वारा विरोध होता है। धन व उपभोग्य वस्तुओं की कमी होती है। जमीन-जायदाद की समस्याएं उत्पन्न होती रहती हैं। घरेलू जीवन का सुख कम होता है। ज्वर, छाती के रोग तथा रक्त विकार से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ा होती है। जातक के मान-सम्मान में कमी आती है। सर्वसाधारण से भी प्रायः विरोध रहता है। माता को कष्ट मिलता है तथा स्वयं के मन में हिंसा तथा क्रूरता की वृत्ति जागृत होती है तथा भयभीत भी रहता है।

चन्द्र से पंचम भाव में मंगल गोचरवश आता है तो धन और स्वास्थ्य का नाश होता है। सन्तान बीमार रहती है। यदि अन्य पाप प्रभाव भी हों तो सन्तान की मृत्यु तक की संभावना रहती है। मन पाप कर्मों की ओर अधिक प्रवृत्त होता है। जातक के गौरव और प्रताप को विशेष धक्का लगता है। शत्रुओं से पीड़ा होती है।

चन्द्र से छठे भाव में जब मंगल गोचरवश आता है, तब धन, अन्न, तांबा, स्वर्ण आदि की प्राप्ति होती है। शत्रुओं पर सरलता से विजय प्राप्त होती है व उनका नाश

होता है। जातक के स्वयं के प्रभाव में वृद्धि होती है। यदि मंगल छठे भाव में उच्चादि राशि में जाए तो स्वास्थ्य ठीक रहता है अन्यथा स्वास्थ्य दोष करता है।

चन्द्र से सप्तम भाव में जब मंगल गोचरवश आता है तो स्वजनों को मानसिक तथा शारीरिक कष्ट होता है। भोजन-वस्त्र आदि में कमी आती है। अपनी स्त्री से कलह रहती है। स्त्री का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। भाइयों से विवाद होता है और दु:ख प्राप्त होता है। नेत्र विकार से पीड़ा होती है।

चन्द्र से अष्टम भाव में जब मंगल गोचरवश आता है तो जातक का परदेशवास होता है। कार्य में हानि होती है, पुरुषार्थ निष्फल जाता है। घाव और रोग से पीड़ा होती है। गुदा अथवा उसके समीप तथा नेत्र में रोग होता है। आघात दुर्घटना आदि से इस समय मृत्यु भी सम्भव है। भाइयों से अनबन रहती है। पाप कर्म में वृत्ति अधिक रहती है। जुआ आदि व्यसन घेरे रहते हैं। शत्रुओं से भय रहता है।

चन्द्र से नवम भाव में जब मंगल गोचरवश आता है तो मनुष्य अनादर पाता है। पट्ठों के दर्द और 'सूखा' (Dystrophy of muscles) रोग से पीड़ित हो सकता है। शरीर में निर्बलता रहती है। भाग्य में ठेस लगने से धन का अभाव होता है। रोजगार में बाधा उत्पन्न होती है। ऑपरेशन आदि के बिगड़ने की संभावना रहती है। मनुष्य शत्रुओं से पराजित होता है। धर्म के विरुद्ध आचरण करता है तथा भाइयों से कष्ट पाता है।

चन्द्र से दशम भाव में मंगल जब गोचरवश आता है तब तामसिक भोजन प्राप्त होता है। शरीर में आघात आदि द्वारा रोग होता है। किसी भी कारणवश घर से बाहर रहना पड़ता है। रोजगार में विघ्न बाधाएं आती हैं। चोरों का भय भी रहता है। परन्तु **'वाराही संहिता'** के अनुसार दशम भाव से गोचरवश जाने वाला मंगल धन की प्राप्ति करवाता है। हमारे विचार में धन प्राप्ति का फल गोचर अवधि के उत्तरार्द्ध में ही संभव मानना चाहिए।

चन्द्र से एकादश भाव से जब मंगल गोचरवश जाता है, तब जय, आरोग्य और धन-धान्य की प्राप्ति होती है। आय में आशातीत वृद्धि होती है। भूमि आदि के लाभ का यह उपयुक्त समय रहता है। मकान के किराये की आय में वृद्धि होती है। भाइयों की वृद्धि होती है तथा व्यक्ति को उनसे लाभ भी रहता है। कार्यों में सफलता मिलती है।

चन्द्र से द्वादश भाव में गोचरवश जब मंगल आता है तो धन का व्यय होता है तथा घर से दूर जाना पड़ता है। मनुष्य नेत्र रोग से पीड़ित होता है। भाइयों में अनबन

रहती है। मान-हानि देता है। स्त्री को कष्ट होता है तथा उससे कलह होती है। पुत्रों को भी कष्ट की प्राप्ति होती है।

बुध गोचरफल

चन्द्र लग्न से 2, 4, 6, 8, 10 और 11वें भाव में गोचरवश विचरता हुआ बुध शुभ फल करता है। शेष भावों में वह अशुभ फल देने वाला होता है।

चन्द्र लग्न में जब गोचरवश बुध आता है तो चुगलखोरी में समय व्यतीत होता है। जातक अप्रिय शब्दों का प्रयोग करता है। धनहानि और बन्धन का भय रहता है। छोटे-छोटे झगड़ों के कारण धन की हानि होती है तथा लोग आदर-सत्कार भी नहीं करते। सम्बन्धियों को हानि पहुँचती है। यदि यात्रा पथ में चलते हुए जातक का स्वागत भी हो तो भी अन्ततोगत्वा उसको को आदर नहीं मिल पाता।

बुध चन्द्र लग्न से द्वितीय भाव में गोचरवश जब आता है तब आनन्द व धन-आभूषणों की प्राप्ति होती है। अपनी भाषण कला से मनुष्य अच्छा धन प्राप्त करता है। विद्या में उन्नति होती है। उत्तम खाद्य पदार्थों की प्राप्ति होती है तथा सम्बन्धियों से भी धन की प्राप्ति होती है।

बुध चन्द्र लग्न से तीसरे भाव में गोचरवश जब आता है तो व्यक्ति डरा-डरा रहता है। उसमें साहस की कमी होती है। बन्धुओं से उसका झगड़ा तथा धन की हानि होती है। 'वाराही संहिता' के अनुसार तृतीय भाव में आया हुआ बुध मित्रों की प्राप्ति करवाता है। जातक भय के कारण भागता फिरता है।

बुध चन्द्र लग्न से चतुर्थ भाव में जब गोचरवश आता है तो धन की प्राप्ति होती है। माता को सुख मिलता है। जमीन-जायदाद में वृद्धि होती है। अच्छे विद्वानों तथा भ्रद पुरुषों से तथा उच्च पदस्थ लोगों से मित्रता बढ़ती है। घरेलू जीवन का सुख भी अच्छा मिलता है।

बुध चन्दमा से पंचम भाव में जब गोचरवश आता है तब मानसिक पीड़ा होती है। विचारित योजनायें सफल नहीं होतीं। पुत्र तथा स्त्री से झगड़ा होता है। आर्थिक रूप से परेशानी रहती है। अन्य स्त्रियों से प्रेम-वार्ता तो होती है, परन्तु असफल रहती है।

बुध चन्द्रमा से छठे भाव में जब गोचरवश आता है तो धन, अन्न और उत्तम वस्त्रों का सुख होता है। अच्छी और मनोरंजक पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिलता है।

शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। सभी लोग जातक का मान-सम्मान करते हैं। प्रचुर शारीरिक और मानसिक सुख प्राप्त होता है। लेखन तथा वाद्य कला में ख्याति मिलती है।

बुध चन्द्रमा से सातवें भाव में जब गोचरवश आता है तो शरीर निस्तेज तथा पीड़ायुक्त रहता है। स्त्री आदि से विवाद रहता है। मित्रों तथा सम्बन्धियों से भी अनबन रहती है। राज्य की ओर से भय रहता है तथा धन का नाश होता है। यात्रा तथा व्यवसाय द्वारा लाभ नहीं होता। मनुष्य चिन्ताओं में ग्रस्त रहता है।

बुध चन्द्र से आठवें भाव में जब गोचरवश आता है तो धन का लाभ तथा पुत्र को सुख होता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। हर कार्य में सफलता से प्रसन्नता बढ़ती है। जातक की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में बढ़ोतरी होती है।

बुध चन्द्रमा से नवम भाव में जब गोचरवश आता है तब खेद, संताप तथा सब कार्यों में विघ्न-बाधाएं आती हैं। यात्रा में असुविधा तथा हानि होती है। धन और मान की भी हानि होती है। सम्बन्धियों तथा भाइयों से वैमनस्य रहता है। धर्म व शास्त्रीय बातों में छिद्रान्वेषण का प्रयत्न करता है।

बुध चन्द्रमा से दशम भाव में गोचरवश आता है तो किसी नये पद की प्राप्ति होती है। शत्रुओं की पराजय का सुख मिलता है। व्यवसाय की वृद्धि होती है। जातक को मानसिक सुख शान्ति के साथ-साथ उत्तम गृहस्थ सुख भी प्राप्त होता है तथा मान में वृद्धि और सफलता प्राप्त होती है। जातक भी जनहित के कार्यों में लगा रहता है।

बुध चन्द्र से एकादश भाव में जब गोचरवश आता है तो स्वास्थ्य, सुख, यश और धन उत्तम रहता है और उनसे सुख मिलता है। सन्तान-प्राप्ति की संभावना भी रहती है। शुभ कार्यों में प्रवृत्ति बढ़ती है।

बुध चन्द्र से द्वादश भाव में जब गोचरवश आता है तो धन तथा सुख में कमी होती है। चित्त में सन्ताप तथा भोजन में अरुचि रहती है। झगड़े आदि के कारण प्राय: सभी कार्यों में रुकावट होती है। शत्रुओं द्वारा अपमान तथा पराजय का अवसर आता है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, सम्बन्धियों से अनबन रहती है तथा विद्या में विघ्न होता है।

बृहस्पति गोचरफल

चन्द्र लग्न से 2, 5, 7, 9 और 11वें भाव में गोचर द्वारा आया हुआ बृहस्पति शुभ फल करता है। शेष भावों में उसका फल अशुभ माना गया है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न में जब गोचरवश आता है तब भय और मान-हानि होती है। रोजगार, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं आती हैं। राजभय और मानसिक व्यथा रहती है। कार्य बहुत विलम्ब से पूरे होते हैं। यात्रा में कष्ट होता है और सुख में बहुत कमी आ जाती है। अत्यधिक व्यय के कारण जातक की आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो जाती है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से दूसरे भाव में जब गोचरवश आता है तो धनागमन होता है। कुटुम्ब में सुख-समृद्धि बढ़ती है। विवाह अथवा पुत्र जन्म का सुख होता है। शत्रु स्वयं ही सन्धि चाहते हैं। जातक की ख्याति बढ़ती है और उसकी रुचि परोपकार और दान आदि में रहती है। चल सम्पत्ति जैसे कैश सर्टिफिकेटस आदि में वृद्धि होती है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से तीसरे भाव में जब गोचरवश आता है तब शारीरिक संताप होती है और कुटुम्बीजनों से झगड़ा होता है। रोजगार में झंझट उत्पन्न होता है। नौकरी छूट जाने तक की संभावना रहती है। राज्य कर्मचारियों की ओर से कष्ट होता है। मित्रों का अनिष्ट तथा धन, मान की हानि होती है। यात्रा भी लाभदायक नहीं होती।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से चतुर्थ भाव में जब गोचरवश आता है तो मन में अशान्ति रहती है। धन तथा कान्ति की हानि होती है। शत्रु-वृद्धि के कारण कष्ट होता है। जातक को जन्म-स्थान से दूर जाना पड़ता है। जमीन-जायदाद तथा परिवार के सदस्यों का सुख नहीं मिलता। राज्य की ओर से भी तरह-तरह का भय लगा रहता है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से पांचवें भाव में जब गोचरवश आता है तब सुख और आनन्द में वृद्धि होती है। हर कार्य में सफलता मिलती है, पद की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय में उन्नति होती है। कोई स्थिर लाभ होता है। घर में मांगलिक उत्सव होते हैं। पुत्र-जन्म की भी संभावना रहती है। तर्कशक्ति, सूझ-बूझ से कार्य सफल होते हैं। सट्टे, चांस गेम आदि व्यवास में लाभ रहता है तथा सद्गुणों में वृद्धि होती है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से छठे भाव में जब गोचरवश आता है तो रोग उत्पत्ति करता है, पुत्रों आदि से वैमनस्य रहता है, धन की कमी अनुभव होती है तथा

पेट के रोगों में वृद्धि होती है। राजकर्मचारियों से विरोध की भी संभावना रहती है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से सातवें भाव में जब गोचरवश आता है तब चिन्ता बढ़ती है तथा चोर आदि से भय रहता है। राज्य कर्मचारियों से अनबन होने से भय रहता है। धन रहते हुए भी कमी का अनुभव होता है। धन के प्रसार (Circulation) में रुकावट आ जाती है। पुत्र, सम्बन्धियों आदि से जातक की नहीं बनती तथा सुख भी नहीं होता।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से आठवें भाव में जब गोचरवश आने से बन्धन, शोक, रोग तथा चोरों और राज्य की ओर से कष्ट होता है। कठोर वचन बोलने के कारण जातक तिरस्कार का भागी होता है। जातक की कान्ति में कमी होती है। नौकरी छूटने तक की नौबत आ जाती है। धन व्यवसाय में भारी हानि होती है। शारीरिक कष्ट बढ़ता है। अपने ही देश में कष्टपूर्ण लम्बी यात्रा होती है। पुत्रादि से विरोध रहता है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से नवम भाव में जब गोचरवश आता है तो धन वृद्धि होती है। पुत्र-जन्म का उत्सव होता है। भाग्य में विशेष वृद्धि होती है। पुत्रों से लाभ होता है। राज्य से मान तथा पद प्राप्ति होती है। हर कार्य में सफलता मिलती है, भाइयों से सुख सहायता प्राप्त होती है तथा धर्म के कार्यों में रुचि बढ़ती है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से दशम भाव में जब गोचरवश आता है तो दीनता होती है, मान-हानि तक की सम्भावना रहती है तथा अन्न धन की भी हानि होती है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से ग्यारहवें भाव में जब गोचरवश आता है तो धन और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। शत्रु पराजित होते हैं और समस्त कार्यों में सफलता मिलती है। विवाह तथा पुत्र जन्म का अवसर प्राप्त होता है। नौकरी में पदोन्नति और व्यापार में अवश्य ही वृद्धि होती है। उत्तम सुख की प्राप्ति होती है। वैभव विलास की वस्तुएं प्राप्त होती हैं। पुत्रों से तथा राज्याधिकारियों से सुख मिलता है। शुभ कार्यों में रुचि होती है तथा रति सुख में वृद्धि होती है।

बृहस्पति चन्द्र लग्न से बारहवें भाव में जब गोचरवश आता है तब पुत्रादि से अलग होना पड़ता है। यात्रा में कष्ट और व्यर्थ धन व्यय होता है। व्यय में अत्यधिक वृद्धि होती है। विश्वासपात्र व्यक्ति के द्वारा कलंकित होना पड़ता है। शरीर अस्वस्थ रहता है। सदाचार हीनता होती है। व्यर्थ का झूठा उपदेश जातक स्वयं देता फिरता है।

शुक्र गोचरफल

गोचर का शुक्र, चन्द्र लग्न से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 और 12वें भाव में शुभ फल करता है। शेष भावों में इसका फल शुभ नहीं माना जाता।

शुक्र चन्द्र लग्न में जब गोचरवश आये तब सुख और धन की प्राप्ति होती है। शत्रु का नाश होता है, परन्तु जातक कुछ दुराचार भी करता है। विवाह और सन्तान जन्म की संभावना होती है तथा विद्या अध्ययन में सफलता प्राप्त होती है। सब प्रकार के आमोद-प्रमोद और वैभव-विलास होते हैं। सत्यता की ओर रुझान होता है। व्यापार में उन्नति होती है। तरल पदार्थों, सुगन्धित द्रव्यों, बनाव-शृंगार तथा सौंदर्य प्रसाधन आदि से आय होती है।

शुक्र चन्द्र लग्न से द्वितीय भाव में जब गोचरवश आता है तब धन की बार-बार प्राप्ति होती है। शरीर स्वस्थ रहता है। जातक नवीन वस्त्र तथा आभूषण धारण करता है। स्त्री-सुख उत्तम रहता है। सन्तान प्राप्ति का भी योग होता है। राज्य की ओर से मान प्राप्त होता है तथा विद्या में रुचि होती है। जातक के सौन्दर्य में निखार आता है। गायन-वादन में रुचि बढ़ती है। शत्रुओं का नाश होता है।

शुक्र चन्द्र लग्न से तृतीय भाव में जब गोचरवश आता है तब मित्रों से सुख तथा शत्रुओं की पराजय होती है। धन मिलता है और जातक का साहस बढ़ता है। नौकर-चाकरों का सुख मिलता है, मान-सम्मान में वृद्धि होती है तथा भाग्योदय होता है। राज्य की ओर से कृपा रहती है। बहिन-भाइयों का सुख रहता है तथा धर्म में रुचि बढ़ती है।

शुक्र चन्द्र लग्न से चतुर्थ भाव में जब गोचरवश आता है तो मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और धन की प्राप्ति होती है। वैभव-विलास की सामग्री तथा वाहन आदि की प्राप्ति होती है। सम्बन्धियों से सहायता मिलती है। सामान्यजन से सम्पर्क तथा प्रेम बढ़ता है। शरीर तथा मन प्रफुल्लित रहते हैं।

शुक्र चन्द्र लग्न से पंचम भाव में जब गोचरवश आता है तो पुत्रादि से स्नेह बढ़ता है, अन्न-धन की प्राप्ति होती है और उत्तम भोजन मिलता है। यश की वृद्धि होती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। पुत्रादि के जन्म की संभावना होती है। प्रेमी-प्रेमिका में निकटता प्रगाढ़ होती हैं। मनुष्य विभागीय परीक्षाओं (Departmental Examinations) में सफल होता है। आमोद-प्रमोद के स्थानों, सिनेमा, क्लब आदि आना-जाना रहता है।

शुक्र चन्द्र लग्न से छठे भाव में जब गोचरवश आता है तो शत्रुओं की वृद्धि और उनकी विजय होती है तथा जातक को उनसे सन्धि करने पर विवश होना पड़ता है। व्यापारिक साझेदारों से झगड़ा होता है। यात्रादि में दुर्घटनाओं से हानि पहुँचती है। स्त्री विमुख हो जाती है।

शुक्र चन्द्र लग्न से सातवें भाव में गोचरवश आने पर अपमानित होने का भय रहता है। बड़े परिश्रम से आजीविका उपार्जन होता है। जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोगों से कष्ट होता है। स्त्री से विवाद होता है। स्त्री के रोग-ग्रस्त होने की सम्भावना रहती है। अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध के कारण हानि और अपमान सहना पड़ता है। यात्राएं अधिक करनी पड़ती हैं।

शुक्र चन्द्र लग्न से आठवें भाव में जब गोचरवश आता है तब धन और सुख में वृद्धि होती है। जातक के समस्त कष्ट दूर हो जाते हैं। विलास की सामग्री में वृद्धि होती है। कुटुम्बियों से धन तथा सुख लाभ होता है। विद्या में रुचि होती है।

शुक्र चन्द्र लग्न से नवम भाव में जब गोचरवश आता है तो उत्तम वस्त्र तथा आभूषणों की प्राप्ति होती है। शरीर स्वस्थ रहता है। आशा से अधिक लाभ रहता है। कोई चिरस्थायी लाभ भी होता है। राज्य द्वारा भाग्य वृद्धि होती है, मित्रों से लाभ रहता है। भाइयों से सहायता तथा स्नेह मिलता है। देश के अन्दर लम्बी यात्रा होती है।

शुक्र चन्द्र लग्न से दशम भाव में जब गोचरवश आता है तो शरीर में पीड़ा रहती है। मानसिक चिन्ता बढ़ती है। धन की हानि होती है। नौकरी और व्यवसाय में विघ्न आते हैं। शत्रु सिर उठाते हैं। कार्यों में सफलता मिलती है। जनसाधारण से विरोध रहता है। स्त्री वर्ग से दु:ख की प्राप्ति होती है। सम्बन्धियों से अनबन रहती है। राज्य की ओर से परेशानी होती है।

शुक्र चन्द्र लग्न से एकादश भाव में जब गोचरवश आता है तब जातक को धन लाभ होता है और प्रताप बढ़ता है। सभी कार्यों में सफलता मिलती है। उत्तम भोजनादि की प्राप्ति होती है। स्त्री सम्बन्धित सुखों में वृद्धि होती है। स्त्रियों से प्रेमालाप के कारण जातक प्रसन्नता अनुभव करता है। मित्रों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है।

शुक्र चन्द्र लग्न से बारहवें भाव में जब गोचरवश आता है तो जातक को मित्रों, धन, अन्न तथा विलास के साधनों की प्राप्ति होती है। यद्यपि जातक का धन बढ़ता है, परन्तु अन्ततोगत्वा उसको कपड़े के व्यापार में हानि उठानी पड़ती है।

शनि गोचरफल

गोचर शनि लग्न से केवल 3, 6 और 11वें भाव में शुभ फल करता है। शेष भावों में उसका फल अशुभ होता है।

शनि चन्द्र लग्न में जब गोचरवश आता है तो बुद्धि काम नहीं करती। शरीर निस्तेज रहता है। मानसिक और शारीरिक पीड़ा होती है। भाइयों तथा स्त्री आदि से झगड़ा होता है। शस्त्र और पत्थर से चोट का भय रहता है। दूर स्थानों की यात्रा होती है। मित्र और घर हाथ से निकल जाते हैं। सभी कार्यों में असफलता मिलती है। अपमान होता है और कभी-कभी राज्य से बन्धन का भय भी रहता है। आर्थिक स्थिति में बहुत गिरावट आ जाती है।

शनि चन्द्र लग्न से द्वितीय भाव में जब गोचरवश आता है तब क्लेश होता है और बिना कारण झगड़ा खड़ा हो जाता है। स्वजनों से वैर रहता है। धन की हानि होती है और कार्य सफल नहीं होते। जातक शारीरिक दृष्टि से कमजोर रहता है और उसे लाभ तथा सुख में बहुत कमी आ जाती है। स्त्री को कष्ट तथा उसकी मृत्यु तक की संभावना बनी रहती है। घर छोड़कर दूर जाना पड़ता है। विदेश यात्रा की भी सम्भावना रहती है।

शनि चन्द्र लग्न से तृतीय भाव में जब गोचरवश आता है तो आरोग्य, पराक्रम और सुख में वृद्धि होती है। हर कार्य में सफलता मिलने के साथ-साथ, धन और नौकरी मिलती है। जातक स्वयं डरपोक भी हो तो भी वह शत्रुओं पर विजयी हाता है और शत्रु उसे धीर-वीर ही समझते हैं। जातक को पशु धन की भी प्राप्ति होती है। जमीन जायदाद खरीदने के लिए भी उपयुक्त समय होता है।

शनि चन्द्र लग्न से चतुर्थ भाव में जब गोचरवश आता है तब शत्रु और रोग बढ़ते हैं। स्थान परिवर्तन अथवा तबादला (Transfer) होता है। सम्बन्धियों से वियोग होता है। धन की कमी रहती है। यात्रा में कष्ट होता हैं और सुखों में कमी आती है। यह समय बहुत अपमानजनक सिद्ध होता है। सामान्यजन तथा राज्य (Govt.) दोनों से कष्ट होता है। जातक के मन में वंचना (ठगी) और कुटिलता का संचार होता है।

शनि चन्द्र लग्न से पंचम भाव में जब गोचरवश आता है तो बुद्धि भ्रमित होती है। योजनाएं न तो बन ही पाती हैं और न सफल ही होती हैं। जनता से ठगी करने का मन होता है। धन और सुख में विशेष कमी आ जाती है। जातक अपना अधिकांश समय दुष्ट स्त्रियों में व्यतीत करता है। पुत्र को रोग अथवा मृत्यु की

सम्भावना रहती है। अपनी स्त्री से वैमनस्य बढ़ता है। व्यापार मन्दी रहता है। स्त्री को वायु रोगों (Wind Troubles) की सम्भावना रहती है। पुत्र के द्वारा हानि होती है।

शनि चन्द्र लग्न से छठे भाव में जब गोचरवश आता है तो धन, अन्न और सुख में वृद्धि होती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। भूमि, मकान आदि की प्राप्ति का समय होता है। जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहता है और उसे स्त्री भोगादि सुखों की प्राप्ति होती है।

शनि चन्द्र लग्न से सातवें भाव में जब गोचरवश आता है तो घर छोड़ कर दूर जाना पड़ता है, बार-बार यात्राएं होती हैं। स्त्री रोगी रहती है, उसकी मृत्यु भी सम्भव है। जातक गुप्त रोगों से कष्ट पाता है। धन हानि और मानसिक व्यथा होती है। यात्रा में कष्ट होता है और दुर्घटना की सम्भावना रहती है। मान-हानि होती है। धन में कमी आती है। नौकरी अथवा व्यापार समाप्त हो जाने तक की नौबत आ जाती है।

शनि चन्द्र लग्न से आठवें भाव में जब गोचरवश आता है तो द्रव्य तथा धन हानि होती है। कार्य सफल नहीं होते। अपमानित होने का भय होता है। राज्य से भय, प्रताड़ना और दण्ड का भय रहता है। पुत्र से वियोग तथा स्त्री की मृत्यु तक की सम्भावना रहती है। जुए इत्यादि व्यसनों और दुष्ट व्यक्तियों से मित्रता के कारण कई प्रकार की परेशानियां आती हैं।

शनि चन्द्र लग्न से नवें भाव में जब गोचरवश आता है तो दुःख, रोग और शत्रुओं की वृद्धि होती है। धर्म के कार्यों से मनुष्य पीछे हट जाता है अथवा धर्म परिवर्तन कर बैठता है। प्रादेशिक अथवा तीर्थ यात्राएं होती हैं, परन्तु लाभप्रद नहीं होतीं। भ्रातृ वर्ग व मित्रों से अनबन व कष्ट पाता है। आय में कमी आ जाती है। भृत्य वर्ग से भी परेशानी रहती है। बन्धन एवं आरोपों का भय रहता है।

शनि चन्द्र लग्न से दशम भाव में जब गोचरवश आता है तो नौकरी अथवा व्यवसाय में परिवर्तन और विघ्न-बाधाएं आती हैं। धन का व्यय करने पर भी सफलता नहीं मिलती। जातक पाप कर्म करता है और मानसिक व्यथा सहता है। उसे घर से दूर रहना पड़ता है वह सामान्यजन से विरोध पाता है। स्त्री से मनमुटाव के कारण अलग रहना पड़ता है। छाती के रोगों की भी सम्भावना रहती है।

शनि चन्द्र लग्न से एकादश भाव में जब गोचरवश आता है तो स्त्री वर्ग से, लोहे आदि से अथवा भूमि से, मशीनरी, पत्थर, सीमेंट, कोयला, चमड़ा आदि से लाभ देता है। रोग से मुक्ति मिलती है। पदोन्नति होती है। भृत्य वर्ग से लाभ रहता है।

शनि चन्द्र लग्न से द्वादश भाव में जब गोचरवश आता है तो अपने कुटुम्ब से दूर रहना पड़ता है। सम्बन्धियों तथा प्रतिष्ठित लोगों से मतभेद चलता है। व्यर्थ धन व्यय होता है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। दूर स्थानों की यात्रा करनी पड़ती है तथा दु:ख उठाना पड़ता है। कुछ भी हो भाग्य पतन का भय रहता है। यह समय सन्तान के लिए भी कष्टप्रद होता है तथा उसकी मृत्यु तक की संभावना रहती है।

राहु गोचरफल

वराह मिहिर आदि पुरातन आचार्यों तथा पराशर आदि ज्योतिष-शास्त्र के प्रवृत्तकों के ग्रन्थों में गोचर विचार में अथवा अष्टक वर्ग में राहु के गोचर फल के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा। यह तो असम्भव है कि ये महान् शास्त्रज्ञ राहु अथवा केतु के अस्तित्व से अनभिज्ञ थे, क्योंकि पराशर दशा पद्धति में राहु तथा केतु की गणना की जाती है और वर्ष दशा में भी इनका समावेश है। परन्तु राहु और केतु के प्रभाव को गोचर अथवा अष्टक वर्ग में स्थान न देने का कोई युक्ति युक्त कारण नहीं मिलता, सम्भवत: कारण यही रहा होगा कि राहु और केतु छाया ग्रह हैं, कोई भौतिक पिण्ड वाले ग्रह नहीं। इन ग्रहों का फल उन पर दूसरे ग्रहों अथवा उनकी स्थिति वाले भावों के प्रभाव पर निर्भर करता है। इस संदर्भ में महर्षि पाराशर के बृहत्पाराशर होराशास्त्र के 34वें अध्याय का निम्नलिखित श्लोक उद्धृत है—

> **''यद्भावेश युतौ वापि यद् यद् भाव समागतौ**
> **तत् तत् फलानि-प्रबलौ प्रदिशेतां तमौ ग्रहौ।''** (16)
> **''यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमौ ग्रहौ**
> **नाथेनान्यतरेणाढ्यौ दृष्टौ वा योगकारकौ।''** (17)

अर्थात् राहु और केतु ये दोनों ग्रह जिस भावेश के साथ अथवा जिस भाव में रहते हैं तदनुसार ही फल करते हैं। राहु और केतु केन्द्र में हों और त्रिकोणाधिपति से युत या दृष्ट हों अथवा त्रिकोण में हों और केन्द्राधिपति से युत या दृष्ट हों तो योगकारक होते हैं।

इसीलिए इन छायाग्रहों के राजयोग का फल इनके अपने अन्यत्र गिनाए भावों के स्वामित्व द्वारा नहीं कहा गया। राहु और केतु के प्रभाव में इस पर निर्भरता के कारण ही शायद गोचर पद्धति में इनको सम्मिलित नहीं किया गया है। इतना कुछ

होते हुए भी यवनाचार्य ने राहु के गोचर फल के सम्बन्ध में कहा है—

'हिमगो: पूजंमसादेर्धनम्' कटपयादि चक्र की कुंजी* से इसका अर्थ यह है कि राहु का फल चन्द्रमा से 1, 3, 5, 7, 8, 9 तथा 10 स्थानों में शुभ होता है। अत: नीचे की पंक्तियों में राहु का गोचर फल यवनाचार्य के मत को ग्रहण करते हुए लिखते हैं।

राहु चन्द्र लग्न में यदि गोचरवश आ जावे तो मान में वृद्धि हो, धन सम्पत्ति बढ़े, पुत्रों के धन में वृद्धि हो। चूँकि राहु चन्द्र का शत्रु है, अत: मानसिक व्यथा भी हो।

कटपयादि संख्या चक्र

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	0
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
1	2	3	4	5	6	7	8	9	0
प	फ	ब	भ	म					
1	2	3	4	5					
य	र	ल	व	श	ष	स	ह		
1	2	3	4	5	6	7	8		

अत: पू = 1, गं = 3, मं = 5, स = 9, द = 8, ध = 9, न = 0 अर्थात् 10 ।

राहु चन्द्र लग्न से द्वितीय भाव में जब गोचरवश आ जाए तो धन की अकस्मात् हानि हो। कुटुम्ब वालों से अनबन रहे। विद्या में रुचि न हो। शत्रु अधिक बन जाए। आँख में कष्ट हो।

राहु चन्द्र लग्न से तृतीय भाव में जब गोचरवश आता है तो शत्रुओं पर विजय हो, धन का लाभ हो, अकस्मात् भाग्य जाग उठे तथा मित्रों से लाभ रहे।

---

* कटपयादि संख्या चक्र ऊपर दिया गया है। अक्षरों से संख्या को लेकर वाम रीति से लिखते चले जाइए। यदि शब्दों में 'न' अथवा 'अ' आ जाए तो उसके स्थान पर शून्य '0' ले लें और व्यंजन को छोड़कर केवल स्वर आ जाए तो भी शून्य '0' ले लें। यदि राशि संख्यक संज्ञा हो और उत्तर 12 से अधिक हो तो 12 पर भाग देने से जो बचे उस अंक को ग्रहण करें।

राहु चन्द्र लग्न से चतुर्थ भाव में जब गोचरवश आता है तो सुख का नाश करता है। राज्य के विरुद्ध विद्रोह की भावना होती है। पैतृक स्थान से दूर ले जाता है। सम्बन्धियों से कोई सहायता नहीं मिलती। सुख में कमी करता है।

राहु चन्द्र लग्न से पंचम भाव में जब गोचरवश आता है तो धन ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि करता है। सट्टे आदि से लाभ करवाता है। भाग्य तथा आय में भी वृद्धि करता है, परन्तु इसकी चन्द्र पर नवम दृष्टि के कारण मानसिक व्यथा भी हो।

राहु चन्द्र लग्न से छठे भाव में जब गोचरवश आता है तो दीर्घकालीन रोगों की उत्पत्ति करता है, मामाओं को बीमार करता है। मानहानि भी करवाता है। इस समय धन की हानि भी होती है तथा आय में कमी आ जाती है। आँखों में कष्ट रहता है और जातक कई प्रकार से व्यसन ग्रस्त हो जाता है।

राहु चन्द्र लग्न से सप्तम भाव में जब गोचरवश आता है तो अचानक व्यापार में वृद्धि करता है। यात्रादि से धन लाभ होता है। राज्य की ओर से कृपा रहती है, मित्रों से सहायता मिलती है। शरीर में पित्त अथवा वायु दोष के कारण साधारण कष्ट होता है। मन में क्लेश रहता है।

राहु चन्द्र लग्न से आठवें भाव में जब गोचरवश आता है तो अकस्मात् धन की वृद्धि होती है परन्तु विदेश यात्रा और भयंकर रोगों की भी संभावना रहती है।

राहु चन्द्र लग्न से नवम भाव में जब गोचरवश आता है तो अकस्मात् आशातीत लाभ होता है जो प्राय: चिरस्थायी होता है। राज्य की ओर से कृपा रहती है। मित्रों से सहायता प्राप्त होती है। परन्तु चन्द्र लग्न पर राहु की दृष्टि के कारण मानसिक व्यथा भी होती है।

राहु चन्द्र लग्न से दशम भाव में जब गोचरवश जाता है तो गंगादि तीर्थों में स्नान का अवसर आता है। दान-पुण्य करने को जी चाहता है। मान में अकस्मात् वृद्धि होती है। कार्य सफल होते हैं। परन्तु शत्रु भी उत्पन्न हो जाते हैं।

राहु चन्द्र लग्न से ग्यारहवें भाव में जब गोचरवश आता है तो शुभ कार्यों में प्रवृत्ति होती है। दान-पुण्यादि में रुचि बढ़ती है; परन्तु धन तथा भाग्य की हानि होती है। पुत्रों को कष्ट पहुँचता है। मित्रों से हानि होती है।

राहु चन्द्र लग्न से द्वादश भाव में जब गोचरवश आता है तो व्यय अधिक होता है। सुख का नाश होता है। घर छोड़ दूर जाना पड़ता है, बन्धन (जेल की यात्रा या अपहरण) की भी संभावना रहती है। धन एवं पशु-सुख की हानि होती है।

केतु गोचरफल

केतु का फल यवनाचार्य के मतानुसार उपरोक्त श्लोक के अनुसार कहते हैं। केतु चन्द्र लग्न से 1, 2, 3, 4, 5, 7, 9 तथा 11 भावों में शुभ फल करता है। शेष भावों में इसका फल अच्छा नहीं होता।

केतु चन्द्र लग्न में यदि गोचरवश आता है तो उस समय मान में वृद्धि होती है। धन बढ़ता है। पुत्रों के भाग्य में अचानक वृद्धि होती है। परन्तु शरीर पर चोट लगने का भय रहता है।

केतु चन्द्र लग्न से द्वितीय भाव में जब गोचरवश आता है तो अकस्मात् धन वृद्धि करता है परन्तु आँख में घाव आदि भी देता है।

केतु चन्द्र लग्न से तृतीय भाव में जब गोचरवश आता है तो भाग्य में अकस्मात् वृद्धि करता है। शत्रु पराजित होते हैं, मित्रों से लाभ रहता है।

केतु चन्द्र लग्न से चतुर्थ भाव में जब गोचरवश आता है तो सुख व मान की वृद्धि, शुभ कार्यों में प्रवृत्ति तथा तीर्थों में स्नान करवाता है। अकस्मात् भूमि आदि प्राप्ति की भी संभावना रहती है।

केतु चन्द्र लग्न से पंचम भाव में जब गोचरवश आता है तो पुत्रों को कष्ट तथा भाग्य में हानि होती है।

केतु चन्द्र लग्न से छठे भाव में जब गोचरवश आता है तो शत्रु, व्यय तथा विघ्न बाधाएं भी अधिक हों। आँखों में कष्ट रहे।

केतु चन्द्र लग्न से सातवें भाव में जब गोचरवश आता है तो राज्य से लाभ, मान में वृद्धि, व्यापार में अकस्मात् वृद्धि तथा धन का विशेष लाभ रहे।

केतु चन्द्र लग्न से आठवें भाव में जब गोचरवश आता है तो अकस्मात् धन की हानि करता है। विदेश यात्रा की संभावना रहती है। गुदा में रोग की संभावना भी रहती है।

केतु चन्द्र लग्न से नवें भाव में जब गोचरवश आता है तो अकस्मात् भाग्य में वृद्धि होती है। मित्रों से लाभ होता है। पुत्रों के भाग्य में भी वृद्धि होती है। मान की प्राप्ति होती है।

केतु चन्द्र लग्न से दशम भाव में जब गोचरवश आता है तो राज्य से हानि होती है। राज्य की ओर से उथल-पुथल मचती है। कार्य निष्फल हो जाते हैं। मन में बेहद अशान्ति रहती है।

केतु चन्द्र लग्न से ग्यारहवें भाव में जब गोचरवश आता है तो लाभ ही लाभ रहता है। अकस्मात् व सरलता से धन की प्राप्ति होती है। मित्रों से तथा सट्टे आदि से लाभ रहता है।

केतु चन्द्र लग्न से द्वादश भाव में जब गोचरवश आकर व्यय करवाता है। आँख में कष्ट देता है। सभी सुखों का नाश करता है। मातृभूमि से वियोग करवाता है। मन में अत्यधिक अशान्ति उत्पन्न करता है।

2

गोचर फलादेश के सिद्धान्त

ग्रह की जन्मकालीन स्थिति से उस ग्रह के गोचर फल, ग्रहों का वेध और विपरीत वेध, वेध तालिका।

1. ग्रह गोचर द्वारा ग्रहों की **मनुष्य को मुख्यतः ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुरूप ही अच्छा अथवा बुरा फल मिलता है।** इस विषय में मंत्रेश्वर ने '**फल दीपिका**' के अध्याय 20 श्लोक 34 में लिखा है :

   ''यद् भावगो गोचरतो विलग्नात् देशेश्वरः
   सर्वोच्च सुहृदय गृहस्थः तद् भाव वृद्धि
   कुरुते तदानीं बलान्वितश्चेत् प्रजननेऽपि तस्य''

   अर्थात् यदि कोई ग्रह जन्मकुण्डली में बली होकर गोचर में भी अपनी उच्च राशि, अपनी राशि अथवा मित्रराशि में जा रहा हो तो लग्न से जिस भाव में वह गोचर द्वारा जा रहा होगा, उसी भाव के शुभ फल को बढ़ायेगा। इसी विषय को पुनः अशुभ फल के रूप में भी फल दीपिकाकार इस प्रकार उसी 20वें अध्याय के श्लोक 35 में लिखते हैं :

   ''बलोनितो जन्मनि पाकनाथो मौढ्यं स्वनीचं रिपुमन्दिरं वा।
   प्राप्तश्च यद् भावमुपैति चारात् तद्भाव नाशकुरुते तदानीम्॥

   अर्थात् यदि जन्मकुण्डली मे कोई ग्रह जिसकी दशा चल रही हो निर्बल है, अस्त है, नीच राशि में अथवा शत्रु राशि में स्थित है तो वह ग्रह गोचर में लग्न से जिस भाव को देखेगा या जायेगा उस भाव का नाश करेगा।

2. यदि जन्म कुण्डली में कोई ग्रह अशुभ भाव का स्वामी हो या अशुभ स्थान में पड़ा हो या नीच राशि अथवा नीच नवांश में हो तो वह ग्रह गोचर में शुभ स्थान में आ जाने पर भी अपना गोचर का पूर्ण अशुभ फल देगा।

3. यदि कोई जन्म कुण्डली में शुभ हो, और गोचर में बलवान होकर शुभ स्थान में भ्रमण कर रहा हो तो उत्तम फल करता है।
4. यदि कोई ग्रह जन्मकुण्डली के अनुसार शुभ हो, गोचर में भी शुभ भाव में होकर नीच आदि प्रकार से अधम हो तो कम शुभ फल करता है।
5. यदि कोई ग्रह जन्मकुण्डली में अशुभ हो और गोचर में शुभ भाव में हो, परन्तु नीच, शत्रु आदि राशि में हो तो वह बहुत कम शुभ फल करेगा। अधिकांश अशुभ फल ही करेगा।
6. यदि कोई ग्रह जन्मकुण्डली में अशुभ है और गोचर में भी अशुभ भाव में अशुभ राशि आदि में स्थित है तो वह अत्यन्त अशुभ फल करेगा।
7. जब ग्रह गोचरवश शुभ स्थान से जा रहा हो और जन्मकुण्डली में स्थित दूसरे शुभ ग्रहों से अंशात्मक दृष्टि योग कर रहा हो तो विशेष शुभ फल करता है।
8. गोचर में जब ग्रह मार्गी से वक्री होता है अथवा वक्री से मार्गी होता है तब विशेष प्रभाव दिखलाता है।
9. जब गोचर में कोई ग्रह अग्रिम राशि में चला जाता है और कुछ समय के लिए वक्री होकर पिछली राशि में आ जाता है तब भी वह आगे की राशि का फल करता रहता है।

सूर्य और चन्द्र का गोचरफल

10. जिस जातक के जन्म नक्षत्र पर सूर्य या चन्द्र ग्रहण पड़ता है तो उस व्यक्ति के स्वास्थ्य, आयु आदि के लिए बहुत अशुभ होता है।

इस सम्बन्ध में '**मुहूर्त्त चिन्तामणि**' का निम्नलिखित श्लोक देखिए—

''जन्मर्क्षे निधने ग्रहे जनिभतो घातः क्षति श्रीर्व्यथा,
चिन्ता सौख्यकलदौस्थ्यमृतयः स्युर्माननाशः सुखम्।
लाभोऽपाय इति क्रमातदशुभध्वस्त्यै जयः स्वर्णं,
गोदानं शान्तिरथो ग्रहं त्वशुभदं नो वीक्ष्यमाहुवरे॥''

अर्थात् जिस व्यक्ति के जन्म नक्षत्र पर ग्रहण पड़ा हो उसकी सूर्य तथा चन्द्र के द्वारा जन्म नक्षत्र पर गोचर भ्रमण के समय जान जा सकती है। यही फल जन्म राशि पर ग्रहण लगने से कहा है। जन्म राशि से द्वितीय

स्थान पर ग्रहण पड़े तो धन की हानि, तृतीय पर पड़े तो धन की प्राप्ति होती है, पांचवें पड़े तो चिन्ता, छठे पड़े तो सुखप्रद होता है, सातवें पड़े तो स्त्री से पृथक्ता हो या उसका अनिष्ट हो, आठवें पड़े तो रोग हो, नवम पड़े तो मानहानि, दशम पड़े तो कार्यों में सिद्धि, ग्यारहवें पड़े तो विविध प्रकार के लाभ और बारहवें पड़े तो अधिक व्यय तथा धन-नाश होता है।

11. यदि वर्ष का फल अशुभ हो अर्थात् शनि, बृहस्पति और राहु गोचर में अशुभ हों और मास का फल उत्तम हो तो उस मास में शुभ फल बहुत ही कम आता है।
12. यदि वर्ष और मास दोनों का फल शुभ हो तो उस मास में अवश्य अतीव शुभ फल मिलता है।

शुभ फलों का गोचर में प्रतिवाद

13. ग्रहों का गोचर में शुभ अशुभ फल जो उनके चन्द्र राशि में भिन्न भावों में आने पर कहा है उसमें बहुत बार कमी आ जाती है। उस कमी का कारण 'वेध' भी होता है। जब कोई ग्रह किसी भाव में गोचर वश चल रहा हो तो उस भाव से अन्यत्र एक ऐसा भाव भी होता है जहाँ कोई अन्य ग्रह स्थित है तो पहले ग्रह का वेध हो जाता है अर्थात् उसका शुभ अथवा अशुभ फल नहीं हो पाता। जैसे सूर्य चन्द्र लग्न से जब तीसरे भाव में आता है तो वह शुभ फल करता है, परन्तु यदि गोचर में ही यदि चन्द्र लग्न से नवम भाव में कोई ग्रह बैठा हो तो फिर सूर्य की तृतीय स्थिति का शुभ फल रुक जाएगा, क्योंकि तृतीय स्थित सूर्य के लिए नवम वेध स्थान है। इस प्रकार चन्द्रमा जब गोचर में चन्द्र लग्न से पंचम भाव में स्थित हो तो कोई भी ग्रह यदि चन्द्र लग्न से छठे भाव में गोचर द्वारा आ जाए तो पंचम चन्द्र को वेध हो जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी वेध द्वारा फल का रुक जाना समझ लेना चाहिए।

सूर्य तथा शनि पिता पुत्र हैं, इसलिए इनमें परस्पर वेध नहीं होता। इसी प्रकार चन्द्र बुध पिता पुत्र है। अतः चन्द्र और बुध में भी परस्पर वेध नहीं होता।

पाठकों की सुविधार्थ हम एक तालिका दे रहे हैं, जिसमें नौ ग्रहों के चन्द्र लग्न से विविध भावों पर आने से कहाँ-कहाँ वेध होना है, दर्शाया गया है। अंकों से इस तालिका में तात्पर्य भाव संख्या से है जोकि चन्द्र लग्न से गिनी जाती है।

जन्म कालीन लग्न से भिन्न भावों में ग्रहों के बेध स्थान

भाव / ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एकादश	द्वादश
सूर्य	1	2	9	3	6	12	7	8	10	4	5	11
चन्द्र	5	1	9	3	6	12	2	7	10	4	8	11
मंगल	1	2	12	3	4	9	6	7	8	10	5	11
बुध	2	5	4	3	7	9	6	1	8	8	12	11
गुरु	1	12	2	5	4	6	3	7	10	9	8	11
शुक्र	8	7	1	10	9	12	2	5	11	4	3	11
शनि	1	2	12	3	4	9	6	7	8	10	5	11
राहु	1	2	12	3	4	9	6	7	8	10	5	11
केतु	1	2	12	3	4	9	6	7	8	10	5	11

उदाहरण—जैसे सूर्य तृतीय भाव में हो तो नवम भाव स्थित ग्रह (शनि को छोड़कर) इसको वेध करेगा। यदि चतुर्थ भाव में हो तो तृतीय भाव स्थित ग्रह (शनि को छोड़कर) इसका वेध करेगा। यदि पंचम भाव में हो तो छठे भाव में स्थित कोई भी ग्रह (शनि को छोड़कर) इसको वेध करेगा इत्यादि।

14. **वाम-बेध**—मुहूर्त्तचिन्तामणि के प्रकरण 4, श्लोक 4 में आया है कि—
   "दुष्टोऽपि खेटो विपरीतवेधाच्छुभो द्विकोणे शुभदः सितेऽब्जः॥"
   अर्थात् कोई ग्रह यदि गोचर में दुष्ट है अर्थात् जन्म राशि से अशुभ स्थानों में स्थित होने के कारण अशुभ फलदाता है और फिर वेध में आ गया है तो वह शुभ फलदाता हो जाता है। दूसरे शब्दों में वेध का प्रभाव नाशात्मक है। यदि अशुभता का नाश होता है तो शुभता की प्राप्ति स्वतः सिद्ध होती है।
15. एक और बात जो गोचर में चल रहे ग्रहों के फल के तारतम्य के सिलसिले में याद रखना है, वह यह है कि फल बहुत अंशों में ग्रह अष्टक वर्ग पर निर्भर करता है। जैसे कोई ग्रह गोचर में चन्द्र लग्न से

अनिष्ट स्थानों से जा रहा है, परन्तु अपने अष्टक वर्ग में उसे उस स्थान में चार से अधिक बिन्दु प्राप्त होते हैं (अध्याय 7) तो उस ग्रह की अशुभता बहुत कुछ दूर हो जाएगी। यदि उसे चार से कम बिन्दु मिलते हैं तो जितने-जितने कम बिन्दु होते जायेंगे उतनी ही फल में अशुभता बढ़ती जाएगी। यदि उसे कोई बिन्दु प्राप्त नहीं तो फल बहुत वही अशुभ होगा। यदि गोचरवश शुभ ग्रह को चार से अधिक बिन्दु प्राप्त होते हैं तो स्पष्ट है कि जितने-जितने अधिक बिन्दु होंगे उतना ही फल उत्तम होता जायेगा।

गोचर में ग्रह कब फल देते हैं

16. ग्रहों की जातक विचार में फल देने की जो विधि है वही गोचर में भी है। फलदीपिकाकार लिखते हैं—

''क्षितितनय पतङ्गो राशि पूर्व त्रिभागे,
सुरपतिगुरुशुक्रौ राशिमध्य त्रिभागे।
तुहिनकिरणमन्दौ राशि पाश्चात्य भागे,
शशितनय भुजङ्गौ पाकदौ सार्वकालम्॥''

अर्थात् सूर्य और मंगल गोचरवश जब किसी राशि में प्रवेश करते हैं तो तत्काल ही अपना प्रभाव दिखलाते हैं। एक राशि में 30 अंश होते हैं, इसलिए सूर्य और मंगल 0° से 10° तक ही विशेष प्रभाव करते हैं। बृहस्पति और शुक्र राशि के मध्य भाग में अर्थात् 10 अंश से 20 अंश तक विशेष प्रभाव शुभ तथा अशुभ दिखलाते हैं। चन्द्रमा और शनि राशि के अन्तिम तृतीयांश अर्थात् 21 से 30 अंश तक विशेष प्रभावशाली रहते हैं। बुध और राहु सारी राशि में अर्थात् 0 अंश से 30 अंश तक सर्वत्र एक-सा फल दिखाते हैं।

17. ग्रहों के गोचर में फल प्रदान करने के विषय में 'काल प्रकाशिका' थोड़ा-सा मतभेद चन्द्र और राहु के सम्बन्ध में है। कहा है—

''सूर्योदौ फलदावादौ गुरुक्रौतु मध्यगौ
मन्दाही फलदावन्तये बुधचन्द्रौ तु सर्वदा।''

अर्थात् सूर्य और मंगल राशि के आदि में, गुरु, शुक्र मध्य में, शनि और राहु अन्त में तथा बुध और चन्द्र सर्वदा सब समय में फल देते हैं।

3

जन्मकालीन ग्रहों पर से गोचर ग्रहों के भ्रमण का फल

सूर्य आदि गोचर ग्रहों का जन्मकालीन ग्रहों पर तथा उनसे कुछ विशिष्ट स्थानों पर से गोचर और उसका स्थिति तथा दृष्टि के प्रभाव द्वारा फल।

जन्मकुण्डली के ग्रहों पर से जब गोचर ग्रह विचरण करते हैं तो स्थान और राशि के अनुसार विशेष शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। प्रस्तुत अध्याय में इसी विचरण से सम्बन्धित कुछ उपयोगी जानकारी दी जा रही है।

गोचर रवि का जन्मकालीन ग्रहों पर से विचरण करना

जन्मस्थ सूर्य पर से या उससे सातवें स्थान (जन्मकुण्डली) से गोचर के सूर्य का प्रस्थान व्यक्ति को कष्ट देता है। धन लाभ होता रहता है, परन्तु किसी भी स्थिति में टिकता नहीं, खर्च हो जाता है। व्यवसाय ठीक नहीं रहता। पित्त, विकार-बुखार आदि होते हैं। नकसीर फूटती रहती है। पाचन-क्रिया बिगड़ जाने से कब्ज रहती है। पिता बीमार रहता है। यदि दशा अन्तर्दशा भी अशुभ हों तो पिता की मृत्यु भी हो सकती है। इस अवधि में जातक की अपने पिता से नहीं बनती।

जन्मस्थ चन्द्रमा पर से या इससे सप्तम स्थान से गुजरता हुआ गोचर सूर्य अपनी जन्मकालीन स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल देता है। यदि सूर्य जन्मकुण्डली में अशुभ स्थान का स्वामी हो तो गोचर के समय मन को कष्ट होता है। इस अवधि में सर्दी, जुकाम की शिकायत बनी रहती है। यदि रवि शुभ स्थान का स्वामी हो तो शुभ फल देता है। व्यापार और आमदनी में वृद्धि होती है तथा मन प्रसन्न रहता है।

जन्मस्थ मंगल जन्मकालीन स्थान पर से या सातवें स्थान पर से गोचर रवि का प्रस्थान प्रायः अशुभ फल देता है। झूठ बोलने से, झूठे व्यवहार से, मित्रों और सम्बन्धियों में गलत फहमी फैलाने से शारीरिक और मानसिक कष्ट होता है। राज्य के अधिकारी असंतुष्ट हो जाते हैं। कुछ दिन के लिए व्यवसाय बन्द रह सकता है। यदि जन्मकुण्डली के अनुसार मंगल बहुत ही शुभ हो तो व्यवसाय में उन्नति होने लगती है और अन्त में कार्य पूरा हो जाता है।

जन्मकालीन बुध पर से या उसके सातवें स्थान से गोचर के रवि का प्रस्थान सामान्यतया शुभ है, इस दौरान बुद्धि तेज हो जाती है। अध्ययन में सफलता मिलती है। परीक्षाओं में व्यक्ति सरलता से उत्तीर्ण हो जाता है। सब कार्यों में मन लगता है और काम जल्दी हो जाते हैं। लेखन कार्य सरलता से किया जा सकता है। परन्तु सम्बन्धियों से वैमनस्य की संभावना रहती है।

जन्मस्थ बृहस्पति पर से या उससे सातवें स्थान से जब गोचर सूर्य जाता हो तो वह शुभ नहीं होता। घर के सभी लोग प्रायः बीमार रहते हैं, धन हानि होती है और व्यापार ठीक नहीं चलता। नौकरी में कष्ट होता है तथा इस अवधि में पदोन्नति की संभावना बहुत कम रहती है।

जन्मस्थ शुक्र पर से या उससे सातवें स्थान पर से जातक के सूर्य के जाने के समय स्त्री सुख नहीं मिलता। स्त्री बीमार रहती है। कई प्रकार की बाधाएं पड़ती हैं। मनोरंजन, भोग, विलास, व्याभिचार और अतिथियों पर धन व्यय होता है। राज्य की ओर से कष्ट होता है।

जन्मस्थ शनि से अथवा उससे सप्तम स्थान पर से जब गोचर सूर्य जाए तो वह समय कष्टपूर्ण होता है। यात्राओं में परेशानी तथा धन-हानि होती है। आर्थिक अड़चनों तथा विभिन्न असफलताओं का सामना करना पड़ता है। नौकर आदि आज्ञा का पालन नहीं करते, व्यवसास में हानि होती है। वृद्ध-बुजुर्ग लोगों से नहीं बनती। स्त्री पक्ष से हानि रहती है। टांग आदि में कष्ट की संभावना रहती है।

गोचर चन्द्र का जन्मस्थ ग्रहों पर से प्रस्थान

जन्म के रवि अथवा उससे सप्तम भाव पर गोचर के चन्द्र का शुभाशुभ प्रभाव, जन्मस्थ चन्द्र के शुभाशुभ होने पर निर्भर है। फिर भी प्रायः इस अवधि में विशेषतया जबकि जन्मकुण्डली में चन्द्रमा पक्ष बल में क्षीण हो और गोचर द्वारा जन्मस्थ सूर्य युति करे तो ऐसी स्थिति में स्वास्थ्य नरम रहता है। धन की कमी रहती है, प्रयत्न

करने पर भी कार्य सफल नहीं होते। राज्य से कुछ विरोध रहता है। आँखों में कष्ट रहता है।

जन्म के चन्द्र से अथवा सप्तम पर से जब गोचर चन्द्र जाए और जन्म के समय बलवान् और शुभ हो तो उसकी गोचर अवधि के दिन आराम से बीतते हैं। खुशी के समाचार मिलते हैं। पुरुषार्थ से धन वृद्धि होती है। मान वृद्धि होती है। यदि चन्द्रमा जन्मकुण्डली में क्षीण तथा अशुभ हो तो गोचर काल में मानसिक चिन्ता देता है। धन की कमी अनुभव होती है।

जन्मस्थ मंगल पर से अथवा उसके सप्तम स्थान से क्षीण तथा अशुभ चन्द्र का गोचर शत्रुओं से पराजय करवाता है। भूमि का क्षय जतलाता है। शक्ति को कम करता है। जन्मकालीन शुभ चन्द्रमा का फल शुभ ही जानें।

जन्मस्थ बुध पर से अथवा उससे सप्तम स्थान से जब गोचर से चन्द्र जाता है और साथ ही जन्म चन्द्र में क्षीण तथा अशुभ है तो लिखने-पढ़ने का अवसर नहीं मिलता। अशुभ तथा चिन्ताजनक समाचार मिलते हैं। व्यापार में कई प्रकार की परेशानियाँ खड़ी हो जाती हैं। किसी सम्बन्धी से भी तू-तू-मैं-मैं हो जाती है। यदि चन्द्र बलवान् हो (जन्म का) तो इसका शुभ फल मिलता है।

जन्मस्थ बृहस्पति पर से अथवा उससे सप्तम भाव पर से गोचर के चन्द्र का भ्रमण प्रायः अशुभ फल देता है, विशेषतया यदि जन्म का चन्द्रमा क्षीण तथा अशुभ हो। इस गोचर में काम नहीं बनते। धन प्राप्ति में बाधाएं आती हैं। शारीरिक कष्ट भी होता है। भाई, बन्धुओं तथा राज्य कर्मचारियों के प्रति जातक का व्यवहार अनुचित हो जाता है। सुख में कमी होती है। यदि जन्म चन्द्र शुभ तथा बलवान् हो तो इसके विपरीत शुभ फल मिलता है।

जन्म के शुक्र पर अथवा उससे सप्तम स्थान में जब गोचरवश चन्द्रमा आता है तो इस काल में स्त्री-सहवास का सुख मिलता है। सुन्दर महिलायें सम्पर्क सम्पर्क में आती हैं। मनोरंजन और ऐशो-आराम के साधन स्वतः ही जुट जाते हैं। धन का भी लाभ होता है। ये फल जन्मकुण्डली में चन्द्रमा शुभ तथा बलवान् होने पर गोचर चन्द्र द्वारा मिलते हैं अन्यथा इसके विपरीत अशुभ फल होता है।

जन्मस्थ शनि पर से अथवा उससे सप्तम स्थान पर से जब गोचर का चन्द्रमा गुजरता है और जन्मकालीन चन्द्र बलवान तथा शुभ हो तो सामान्यतया धन की प्राप्ति होती रहती है। यदि जन्मस्थ चन्द्र पापी तथा निर्बल हो तो नौकर-चाकरों पर मनुष्य बरस पड़ता है तथा हानि उठाता है। व्यापार में भी कुछ मन्दी या नुकसान रहता है।

गोचर के मंगल का जन्मस्थ ग्रहों पर से प्रस्थान

जन्म के सूर्य पर से अथवा उससे सातवें, छठे अथवा दसवें स्थान पर से गोचर का मंगल जब जाता है तब उस अवधि में टाइफाइड, मलेरिया बुखार तथा अन्य पित्तजनित रोगों से कष्ट होता है। खर्च बढ़ता है। व्यवसाय में अड़चन आती है। कार्यालय में भी वरिष्ठ अधिकारी खुश नहीं रहते। आँखों में कष्ट होता है तथा पेट के आपरेशन की संभावना रहती है। पिता को कष्ट पहुँचता है तथा उसको चोट भी लग सकती है।

जन्म के चन्द्र पर या उससे सातवें, छठे अथवा दसवें स्थान पर गोचरवश जब मंगल आता है तो शारीरिक चोट की संभावना रहती है तथा क्रोध अधिक आता है। भाइयों द्वारा कष्ट उठाना पड़ता है। धन का नाश होता है। हाँ, यदि जन्मकुण्डली में मंगल बलवान् हो, राजयोग कारक हो या अन्य किसी प्रकार से शुभ हो तो धनादि का विशेष लाभ रहता है।

जन्मस्थ मंगल पर या उससे सातवें, छठे अथवा दसवें स्थान में गोचरवश जब मंगल आता है तो यदि वह जन्मकुण्डली में दूसरे, चौथे, पाँचवें, सातवें, आठवें, नवें अथवा बारहवें स्थान में हो और विशेष बलवान् न हो तो धन हानि, कर्ज, नौकरी छूटना, बल में कमी, भाइयों से कष्ट, लड़ाई-झगड़े आदि देता है। इस गोचर काल में चेचक, खसरा, फोड़े, सूखा, रक्त विकार आदि बीमारियाँ भी होती हैं।

जन्मस्थ बुध पर अथवा उससे सातवें, छठे अथवा दसवें भाव से गोचर के मंगल का विचरण सामान्यता अशुभ फल करता है। बड़े व्यापारियों के दो नम्बर के खाते किसी शत्रु द्वारा शिकायत के कारण इसी गोचर में पकड़े जाते हैं। झूठी गवाही या जाली हस्ताक्षरों से सम्बन्धित मुकदमे चलते हैं। लोग निन्दा करते हैं। लेखकों का प्रकाशकों से वाद-विवाद होता है। उनकी पुस्तकों की सराहना नहीं होती। व्यापार में हानि होती है तथा विशेषकर मातृपक्ष के सम्बन्धियों को कष्ट होता है।

जन्मस्थ बृहस्पति पर से अथवा उससे सातवें, छठे अथवा दसवें भाव से गोचर द्वारा जब मंगल जाता है तो प्राय: शुभ फलदायी होता है। जातक का अधिकार क्षेत्र बढ़ता है। कई प्रकार से उन्नति होती है तथा लाभ होता है। धार्मिक कार्यों, अध्यापन तथा वकालत इत्यादि कार्यों से लाभ होता है, परन्तु सन्तान को कष्ट होता है।

जन्मकालीन शुक्र पर से अथवा उससे सातवें, छठे अथवा दसवें भाव से जब गोचरवश मंगल जाता है तो काम-वासना तीव्र होती है। वेश्यादि स्त्री के संग के

कारण यौन (Veneral) रोग होने की भी संभावना रहती है। आँख में कष्ट की तथा पत्नी को कष्ट या स्वास्थ्य दोष की भी संभावना रहती है।

जन्मस्थ शनि पर से अथवा उससे सातवें, छठे अथवा दसवें भाव में जब गोचर का मंगल आता है तो यदि जन्मकुण्डली में शनि द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, अष्टम, नवम अथवा द्वादश भाव में शत्रु राशि में स्थित हो तो उस गोचरकाल में दुःख और कष्ट बहुत होते हैं। भूमि व्यवसाय (Estate) भूमि द्वारा या अन्य प्रकार से हानि होती है। झगड़े मुकदमे बहुत खड़े हो जाते हैं। स्त्री वर्ग से हानि होती है। निम्न स्तर के लोगों, नौकर-चाकरों आदि से हानि होती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि और मंगल दोनों की स्थिति शुभ हो तो विशेष नुकसान नहीं होता; बल्कि जमीन सम्बन्धी स्थायित्व का कोई कार्य होता है। परन्तु मस्तिक में तनाव रहता है।

गोचरवश बुध का जन्मस्थ ग्रहों पर से विचरण

बुध के सम्बन्ध में यह मौलिक नियम है यह है कि यदि बुध शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो शुभ और पापी ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो पापफल करता है। इसलिए गोचर के बुध का फल उस ग्रह के फल के अनुरूप होता है जिससे या जिनसे जन्म कुण्डली में बुध अधिक प्रभावित है। यदि बुध पर सूर्य, मंगल, शनि आदि नैसर्गिक पापी ग्रहों का प्रभाव शुभ ग्रहों की अपेक्षा अधिक हो तो ऊपर में दिये गए सूर्य, मंगल, शनि, आदि ग्रहों के गोचर फल जैसा फल करेगा। विपरीत रूप से यदि जन्म-कुण्डली में बुध पर प्रबल प्रभाव चन्द्र, गुरु अथवा शुक्र का हो तो इन ग्रहों के गोचरफल जैसा फल भी देगा। तारतम्य आवश्यक है।

गोचर के बृहस्पति का जन्मस्थ ग्रहों पर से प्रस्थान

जन्म के सूर्य पर से अथवा उससे सप्तम, पंचम अथवा नवम भाव से गोचर वश जाता हुआ गुरु यदि चन्द्र लग्न के स्वामी का मित्र है तो यह गोचर राज्य, सम्मान, अधिकारी वर्ग व उच्च वर्ग से लाभ, स्वास्थ्य, धन, सुख में संतोष देगा। यदि गुरु साधारण बली है तो साधारण फल होगा यदि गुरु चन्द्र लग्नेश का शत्रु तथा शनि राहु आदि अधिष्ठित राशियों का स्वामी है तो यह गोचर हृदय रोग, आँखों का कष्ट, राज्य से हानि, अधिकारी वर्ग का रोष, रोग, नौकरी छूट जाना जैसे कुछ अनिष्ट फल दे सकता है।

जन्मस्थ चन्द्र पर से अथवा इससे सप्तम, पंचम अथवा नवम भाव में गोचरवश लाया हुआ गुरु, अशुभ फल करता है। यदि जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा 2, 3, 6, 7, 10 और 11 राशि में हो और गुरु, शनि अथवा राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी हो तो ऐसा गोचर का गुरु रोग देता है तथा माता से वियोग कराता है। धन का नाश तथा व्यवसाय में हानि होती है। कर्ज के कारण बहुत मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। प्राय: ऐसे नेष्ट गुरु का गोचर कष्टदायक होता है तथा घर से दूर भी करता है।

जन्मस्थ मंगल पर से युक्त अथवा उससे सप्तम, पंचम अथवा नवम भाव में गोचरवश आया हुआ गुरु प्राय: शुभ फल करता है। इस गोचर में शारीरिक और मानसिक उत्साह बढ़ता है। जातक से वरिष्ठ अधिकारी उसके कार्यों से प्रसन्न रहते हैं। वृद्धि तथा ऊहापोह शक्ति में सात्विकता तथा व्यापकता आती है। यदि कुण्डली में गुरु, राहु या शनि अधिष्ठित राशियों का स्वामी हो तो रक्त विकार, दुर्घटना, भाइयों से विवाद आदि अशुभ घटनाएं घटती हैं।

जन्मस्थ बुध पर से युक्त अथवा उससे सप्तम, पंचम अथवा नवम भाव में आया हुआ गोचर का बृहस्पति निम्न प्रकार से फल देता है।

1. यदि बुध अकेला हो और किसी ग्रह के प्रभाव में न हो तो विद्या में बढ़ोतरी, सम्बन्धियों से लाभ, व्यापार का प्रसार, लेखन कला में पारंगतता, भाषण दक्षता तथा धन देता है।
2. यदि बुध पर गुरु के मित्र ग्रहों का अधिक प्रभाव हो तो गोचर के गुरु का वही फल होगा जो उन-उन ग्रहों पर गुरु की शुभ दृष्टि का होता है। स्पष्ट है कि यह शुभ फल होगा।
3. यदि बुध पर गुरु के शत्रु ग्रहों का प्रभाव अधिक हो तो फिर गुरु अनिष्ट फल देगा। विशेषतया उस स्थिति से जबकि जन्मकुण्डली में गुरु, शनि, राहु अधिष्ठित राशियों का स्वामी हो और बुध पर 'दैवी' श्रेणी (देखो—दशाफल रहस्य पृष्ठ 77, रंजन पब्लिकेशन्स, दरियागंज दिल्ली) के ग्रहों का प्रभाव हो।
4. यदि बुध अधिकांशत: आसुरी श्रेणी के ग्रहों से प्रभावित हो तथा गुरु, शनि और राहु अधिष्ठित राशियों का स्वामी हो तो गुरु के गोचर फल में कुछ हद तक शुभता भी आ सकती है।

जन्मस्थ बृहस्पति पर से युक्त अथवा उससे सप्तम, पंचम अथवा नवम भाव में गोचरवश आया हुआ गुरु शुभ फल देने में असमर्थ हो जाता है, यदि यह जन्मकुण्डली में 3, 6, 8 अथवा 12 भाव में शत्रु राशि में स्थित हो या पाप युक्त, पाप दृष्ट हो या

शनि तथा राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी हो। ऐसी स्थिति में वह गोचर में विपरीत फल अर्थात् धन नाश, राज्य-कृपा में कमी, पुत्रों से कष्ट आदि अनिष्ट फल देता है।

यदि गुरु जन्म समय में शुभ और बलवान हो तो शुभ फल होता है।

जन्मस्थ शुक्र पर से अथवा इससे सप्तम, पंचम अथवा नवम भाव में जब गोचरवश बृहस्पति आता है तो शुभ फल देता है, यदि शुक्र जन्म कुण्डली में बलवान हो अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम अथवा द्वादश भाव में स्थित हो। यदि शुक्र जन्मकुण्डली में अन्यत्र हो और गुरु भी पाप दृष्ट, पाप युक्त हो तो गोचर का गुरु शत्रुता, विद्वानों से अनबन उत्पन्न करता है तथा राज्य कर्मचारियों से वैमनस्य उत्पन्न करता है। सुख तथा भोग के साधनों में कमी लाता है। पत्नी को कष्ट में डालता है तथा व्यवसाय में मन्दी लाता है।

जन्मस्थ शनि पर से अथवा इससे सप्तम, पंचम अथवा नवम भाव में गोचरवश जब गुरु आता है तो शुभ फल करता है। यदि शनि जन्मकुण्डली में प्रथम, द्वितीय, तृतीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, दशम अथवा एकादश भावों में हो तो इस अवधि में डूबा हुआ धन पुन: मिलता है, भूमि (Estates) की प्राप्ति होती है। कुल, बिरादरी आदि में मान मिलता है, सुख में वृद्धि होती है। यदि जन्म का शनि अन्य भावों में हो और पाराशरीय नियमों के अनुसार अशुभ आधिपत्य भी हो तो फिर गुरु का गोचर कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता है। आर्थिक व सामाजिक स्थिति बहुत साधारण रहती है, बल्कि हानिप्रद भी सिद्ध हो सकती है।

गोचरस्थ शुक्र का जन्मस्थ ग्रहों पर से संचार

जन्म के सूर्य पर से अथवा इससे सप्तम स्थान में गोचरवश जाता हुआ शुक्र प्राय: स्वास्थ्य के लिए शुभप्रद होता है। इस समय मनुष्य सत् कर्मों की ओर प्रेरित होता है। यदि शुक्र का आधिपत्य अशुभ हो तो व्यसनों में समय बीतता है।

जन्मस्थ चन्द्र पर से अथवा इससे सप्तम स्थान में गोचरवश आया हुआ शुक्र मन में विलासिता उत्पन्न करता है और भोगात्मक रुचि देता है। इस समय मोटर कार आदि वाहनों का सुख रहता है, धन वृद्धि होती है, स्त्री वर्ग से लाभ रहता है। चन्द्र यदि निर्बल हो तो धनादि अल्प मात्रा में मिलते हैं।

जन्मस्थ मंगल पर से अथवा उससे सप्तम भाव में गोचर वश आया हुआ शुक्र बल वृद्धि करता है, काम-वासना में भी वृद्धि करता है, भाइयों के सुख को बढ़ाता है और भूमि आदि से लाभ का योग करता है।

जन्मस्थ बुध पर से अथवा उससे सप्तम भाव में गोचरवश आया हुआ शुक्र विद्या कराता है। इस अवधि में सगे सम्बन्धियों से खूब प्यार बढ़ता है तथा उनसे लाभ भी होता है। स्त्री वर्ग से तथा व्यापार से अधिक लाभ रहता है। यह फल तब ही होता है जब बुध अकेला हो। यदि बुध किसी ग्रह विशेष से प्रभावित हो तो गोचर का फल उस ग्रह पर से शुक्र के संचार जैसा होता है।

जन्मस्थ बृहस्पति पर से अथवा उससे सातवें भाव में गोचरवश जब शुक्र आता है तो सज्जनों से सम्पर्क बढ़ता है, विद्या में वृद्धि होती है, पुत्र से धन मिलता है, राज्य कृपा में वृद्धि होती है और सुख बढ़ता है। यदि शुक्र निर्बल हो और शनि-राहु अधिष्ठित राशियों का स्वामी हो तो फल इसके विपरीत होता है।

जन्मस्थ शुक्र पर से अथवा उससे सप्तम स्थान से जब शुक्र जाता है तो विलास की वस्तुओं और स्त्रियों से सम्पर्क में वृद्धि करता है। तरल पदार्थों से लाभ देता है, स्त्री सुख को अधिक करता है तथा व्यापार में वृद्धि करता है। यदि जन्मकालीन शुक्र निर्बल हो तो यह फल कम होता है।

जन्मस्थ शनि पर से अथवा इससे सप्तम भाव से गोचरवश जब शुक्र आता है तो मित्रों की वृद्धि, भूमि आदि की प्राप्ति, स्त्री वर्ग से लाभ, भृत्य आदि की प्राप्ति, परिश्रम में कमी आदि शुभफल होता है। यदि शुक्र निर्बल हो तो यह फल कम होता है।

गोचर शनि का जन्मस्थ ग्रहों पर से संचार

जन्म के सूर्य पर से अथवा उससे सप्तम, एकादश अथवा चतुर्थ भाव में जब गोचरवश शनि भ्रमण करता है तब राज्य की ओर से परेशानी उठानी पड़ती है, नौकरी आदि छूटने का भय रहता है, पेट में रोग होता है तथा पिता को कष्ट पहुँचता है।

जन्मस्थ चन्द्र पर से अथवा इससे सप्तम, एकादश अथवा चतुर्थ भाव में जब गोचरवश चन्द्र भ्रमण करता है तब धनहानि, मन में उदासीनता तथा चिन्ता रहती है। छाती के रोग रहते हैं। जुकाम, न्यूमोनिया, खांसी आदि से पीड़ा होती है। यदि चन्द्र लग्न आसुरी श्रेणी की हो (देखिए शुक्र का गोचर) तो मिश्रित फल मिलता है। आर्थिक रूप से लाभ की संभावना भी रहती है।

जन्मस्थ मंगल पर से अथवा इससे सप्तम भाव से गोचरवश यदि शनि जाए तो शत्रुओं से पाला पड़ता है, स्वभाव में क्रूरता बढ़ती है तथा भाइयों में अनबन रहती है। राज्य से परेशानी होती है। रक्त विकार तथा मांसपेशियों में कष्ट व पीड़ा होती है। बवासीर आदि रोग होते हैं।

जन्मस्थ बुध पर से अथवा इससे सप्तम, एकादश अथवा चतुर्थ भाव में जब गोचरवश शनि जाता है तो बुद्धि नाश, विद्या हानि, सम्बन्धियों से वियोग, व्यापार में मन्दी, मामा से अनबन तथा अन्तड़ियों में रोग होते हैं। यदि बुध आसुरी श्रेणी का हों तो धन में विशेष वृद्धि होती है।

जन्मस्थ गुरु पर से अथवा इससे सप्तम, एकादश अथवा चतुर्थ भाव में जब गोचरवश शनि भ्रमण करता है तब राज्य कर्मचारियों की ओर से विरोध होता है, धन में कमी आती है तथा पुत्र से अनबन अथवा वियोग होता है। सुख में कमी आती है, जिगर के रोग होते हैं तथा गुरुजनों से अनबन होती है।

जन्मस्थ शुक्र पर से अथवा इससे सप्तम, एकादश या चतुर्थ भाव से गोचरवश करता हुआ शनि पत्नी से वैमनस्य कराता है। यदि शुक्र जन्मकुण्डली में राहु, शनि आदि से पीड़ित हो तो तलाक भी करवा सकता है। प्राय: धन और सुख में ह्रास होता है, सिवाय उस स्थिति के जबकि जन्म लग्न आसुरी (देखिए शुक्र का गोचर) श्रेणी का हो। आसुरी लग्न होने पर शनि गोचर धनदायक सिद्ध होता है।

जन्मस्थ शनि पर से अथवा इससे सप्तम, एकादश अथवा चतुर्थ भाव में जब गोचरवश चन्द्र भ्रमण करता है तो निम्न वर्ग के लोगों से हानि, भूमि नाश, टांगों में दर्द तथा अन्य कई प्रकार के दु:ख देता है। यदि लग्न तथा चन्द्र लग्न आसुरी श्रेणी के हों (देखिए शुक्र का गोचर) तो धन, पदवी आदि सभी बातों का सुख मिलता है।

गोचरवश राहु तथा केतु का जन्मस्थ ग्रहों पर से विचरण

राहु और केतु छाया ग्रह हैं, अन्य ग्रहों की भाँति इनका भौतिक अस्तित्व नहीं। सम्भवत: यही कारण है कि इनको गोचर पद्धति में सम्मिलित नहीं किया गया है। तो भी ज्योतिष की प्रसिद्ध लोकोक्ति है, "शनिवत् राहु कुजवत् केतु" अर्थात् राहु के गुण-दोष शनि की भाँति और केतु के मंगल की भाँति है, अत: हम यह कह सकते हैं कि गोचर का राहु जन्मस्थ अन्य ग्रहों पर से गुजरते हुए शनि जैसा फल देता है। इसी प्रकार गोचर का केतु गोचर के मंगल के सामान ही फल करता है।

ध्यान रखना चाहिए कि राहु और केतु का गोचर मानसिक विकृति द्वारा ही शरीर, स्वास्थ्य तथा जीवन के लिए अनिष्ट कारक होता है, विशेषतया जबकि जन्मकुण्डली में भी राहु तथा केतु पर शनि, मंगल तथा सूर्य का प्रभाव हो, क्योंकि

ये छाया ग्रह जहाँ भी प्रभाव डालते हैं वहाँ न केवल अपना बल्कि इन पाप एवं क्रूर ग्रहों का भी प्रभाव डालते हैं।

राहु और केतु की पूर्ण दृष्टि नवम और पंचम भाव पर भी (गुरु की भाँति) रहती है। अतः गोचर में इन ग्रहों का प्रभाव और फल देखते समय पहले यह देख लेना चाहिए कि ये अपनी पंचम और नवम, अतिरिक्त दृष्टि से किस-किस ग्रह को पीड़ित कर रहे हैं।

ऐसा भी नहीं कि सदा ही राहु तथा केतु का गोचर फल अनिष्टकारी होता हो। कुछ एक स्थितियों में यह प्रभाव सट्टा, लाटरी, घुड़दौड़ आदि द्वारा तथा अन्यथा भी अचानक बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। वह तब जब कुण्डली में राहु अथवा केतु शुभ तथा योगकारक ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हों और गोचर में ऐसे ग्रह पर से भ्रमण कर रहे हों जो स्वयं शुभ तथा योगकारक हों।

उदाहरण के लिए यदि योगकारक चन्द्रमा तुला लग्न में हो और राहु पर जन्मकुण्डली में शनि की युति अथवा दृष्टि हो तो गोचरवश राहु यदि बुध अथवा शुक्र अथवा शनि (जो सभी शनि की भाँति आसुरी श्रेणी के ग्रह हैं) पर अपनी सप्तम, पंचम अथवा नवम दृष्टि डाल रहा हो तो राहु के गोचर काल में धन का विशेष लाभ होगा, यद्यपि राहु नैसर्गिक पाप ग्रह है।

4

शनि की साढ़े साती-एक विवेचन

साढ़े साती का अर्थ, साढ़े साती, ढैय्या अथवा पंचम शनि क्यों कष्टप्रद होते हैं। कब साढ़े साती कष्ट नहीं देती।

शनि का बारह राशियों में गोचर काल लगभग 29 वर्ष साढ़े दस मास का होता है। यदि हम इस समय को 30 वर्ष समझें तो शनि का एक राशि में रहने का समय लगभग 30 ÷ 12 = 2½ वर्ष होता है। जब जन्म राशि (जन्म समय चन्द्रमा जिस राशि में हो) से 12वें भाव में शनि गोचरवश आता है तब साढ़े साती प्रारम्भ होती है, तथा शनि के जन्म राशि तथा उससे दूसरे भाव से निकलकर तीसरे भाव में आ जाने तक रहती है। इस प्रकार शनि जन्म राशि सहित तीन राशियों (द्वादश, चन्द्र लग्न और द्वितीय) में 7½ वर्ष में भ्रमण कर लेता है।

सामान्यतया शनि की साढ़े साती अशुभ और कष्टप्रद समझी जाती है, फिर भी सारे 7½ वर्ष एक जैसे व्यतीत नहीं होते। शनि के अशुभ फल का कारण यह है कि जब वह जन्म राशि के द्वादश स्थान में होता है तो वह अपनी पूर्ण तृतीय दृष्टि से धन स्थान पर बुरा प्रभाव डालता है और अपनी पूर्ण दशम दृष्टि का प्रभाव जन्म राशि से नवम भाव (भाग्य स्थान) पर डालता है। स्पष्ट है कि धन और भाग्य भाव का नाश मनुष्य के लिए बहुत कष्टप्रद सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त शनि द्वादश भाव में स्थित होकर व द्वितीय पर दृष्टि रख कर चन्द्रमा और चन्द्र लग्न के दोनों ओर अपना पाप प्रभाव डालता है। इसका अर्थ यह होता है कि साढ़े साती लगने पर चन्द्रमा और चन्द्र लग्न दोनों के पीड़ित होने के कारण जातक की स्त्री को सभी प्रकार से हानि पहुँचती है। लग्न की हानि का अर्थ है स्वास्थ्य, धन और मान आदि की हानि। इस प्रकार साढ़े साती के पीछे जो डर है उसका एक कारण तो शनि का जन्म राशि, उससे द्वितीय तथा नवम भाव पर प्रभाव है। इसी प्रकार शनि चन्द्र लग्न में आने पर तृतीय (पुरुषार्थ), चन्द्र लग्न (मन), सप्तम (पत्नी) और दशम

(व्यवसाय) भावों को पीड़ित करता है। चन्द्र लग्न से द्वितीय (धन) भाव में आकर द्वितीय (धन), पंचम (पुत्र), अष्टम(आयु) और एकादश (आय) भावों को पीड़ित करता है परन्तु मुख्य प्रभाव तो चन्द्रमा के पीड़ित होने का ही है।

इसी प्रकार जब शनि जन्म राशि से चतुर्थ और अष्टम स्थान में आता है तो इस गोचर को छोटी साढ़े साती या "ढैय्या" कहा जाता है। यह 2½ वर्ष की होती है तथा इसका फल भी शनि की साढ़े साती जैसा ही होता है। यहाँ भी कारण शनि की लग्न तथा द्वितीय भाव पर दृष्टि ही है।

कर्नाटक प्रदेश में साढ़े साती से अधिक डर चन्द्र लग्न से पंचम शनि गोचर का मानते हैं। शनि जब पंचम भाव में हो तो उसकी दृष्टि धन-दौलत के दोनों भावों अर्थात् द्वितीय तथा एकादश पर पड़ती है और साथ ही व्यापार के स्थान (सप्तम भाव) पर भी। इस प्रकार उनका यह डर भी निर्मूल नहीं। कन्नड़ भाषा में एक बहुत प्रसिद्ध कहावत है—"पंचमी शनि हॉचेन्यात्र उसासतान" अर्थात् पंचम शनि फूटे मटके में खाना खिलाता है।

भारतीय ज्योतिषानुसार साढ़े साती की अवधि में जातक के पाँवों में पीड़ा, सिर दर्द, धन का नाश, पुत्रों को कष्ट तथा अपमान आदि होता है। द्वादश भाव चन्द्र कुण्डली में अन्तिम भाव होने से पाँवों का प्रतिनिधि है, इसलिए पाँवों में दर्द कहा। यह भाव पुत्र स्थान से अष्टम पड़ता है, अत: पुत्रों की आयु और स्वास्थ्य से इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। अत: पुत्रों को कष्ट कहा। द्वितीय भाव तथा चन्द्र लग्न धन तथा मान के द्योतक हैं। इसलिए धन तथा मान की हानि कही। इसी प्रकार चतुर्थ और अष्टम शनि भी चूँकि लग्न और धन पर दृष्टि डालते हैं, धन का नाश, रोग की उत्पत्ति, विदेश में वास, चिन्ता और कर्ज को ला खड़ा करते हैं।

जिन लोगों की कुण्डलियों में शनि बलवान, उच्च, स्वगृही, मित्रगृही, या योग कारक होता है, उन लोगों को शनि की साढ़े साती में विशेष कष्ट नहीं होता। इसके विपरीत निर्बल और शत्रु क्षेत्री शनि वाली कुण्डलियों में शनि साढ़े साती, ढ़ैय्या आदि अवधि में विशेष अनिष्टकारी रहता है।

नक्षत्रीय प्रभाव और शनि

गोचर शनि का जन्म राशि और उससे द्वितीय और द्वादश भावों में जो फल है उसका अच्छा, बुरा होना उन नक्षत्रों पर निर्भर करता है जो इन तीनों भावों में पड़ते हों। मान लीजिए कि किसी व्यक्ति की जन्म राशि मेष है। अब जब शनि मीन में

प्रवेश करेगा तो उसके लिए साढ़े साती आरम्भ हो जाएगी। अब मीन राशि में पूर्वा भाद्रपद का एक चरण, उत्तरा भाद्रपद का पूरा नक्षत्र (चारों चरण) और रेवती पूरा नक्षत्र (चारों चरण) पड़ते हैं। स्पष्ट है कि शनि जब पूर्वा भाद्रपद से गुजरेगा तो इस नक्षत्र के स्वामी गुरु से राशि मैत्री के अनुसार सम होने के कारण नरम पड़ जायेगा। अतः अधिक कष्ट न पहुँचायेगा। इसी प्रकार जब अन्य दो नक्षत्रों—स्वयं शनि के और बुध के नक्षत्रों पर से गुजरेगा तो अपने और मित्र के नक्षत्रों के कारण शनि बुरा फल बिल्कुल न देगा। अतः मेष राशि वालों को गोचरवश द्वादश स्थान में आया हुआ शनि हानिकारक सिद्ध न होगा। कहने का भाव यह है कि सदा ध्यान रखें कि शनि जिन नक्षत्रों में गोचरवश से जा रहा है, उनको शत्रु समझता है अथवा मित्र अथवा सम।

सूर्य और मंगल शनि के शत्रु हैं और नैसर्गिक पाप ग्रह हैं। इसलिए जन्मकाल में ये ग्रह जिस राशि में होते हैं गोचरवश उस राशि में अथवा उससे सातवीं राशि में शनि के जाने का समय बहुत खराब व्यतीत होता है।

दीर्घजीवी मनुष्य के जीवन में साढ़े साती दो या अधिक से अधिक तीन बार आती है। जातक पर पहली साढ़े साती का आक्रमण प्रायः बड़े वेग से होता है और उसे नाना प्रकार से व्यथित कर देता है। द्वितीय साढ़े साती का कष्ट अधिक नहीं होता है। अन्तिम साढ़े साती तो प्रायः मृत्यु को ही बुला लाती है और बहुत कम जातक ही इस साढ़े साती से पार पा पाते हैं।

विद्वानों का अनुभव यह भी है कि जब किसी कुटुम्ब में कई व्यक्तियें को एक साथ ही एक ही ग्रह के कारण कष्ट होता है जैसे कि वे सब राहु की दशा में से गुजर रहे हों तो उस कुटुम्ब का मुखिया भी कष्ट में होता है, चाहे उसे भी राहु की दशा लगी हो या न लगी हो। यही बात साढ़े साती के विषय में लागू होती है। पं. गोपेश कुमार ओझा ने भी लिखा है और हमारे अनुभव में भी यही आया है कि जब एक कुटुम्ब में कई व्यक्तियों की एक ही राशि होती है तब उस कुटुम्ब के अधिपति को भी (साढ़े साती के दौरान) कष्ट उठाना पड़ता है।

शनि पाया विचार

जन्म के चन्द्रमा की राशि से यदि शनि 1, 6, 11वीं राशि में हो तो सोने का चरण या पाया; 2, 5, 9वीं राशि में हो तो चाँदी का पाया; 3, 7, 10वीं राशि में हो तो ताँबे का और 4, 8, 12वीं राशि में हो तो लोहे का पाया माना जाता है।

उदाहरण के लिए शनि ने 23 जुलाई सन् 1975 ई. को मिथुन से कर्क रशि में प्रवेश किया है। अतः शनि का कर्क राशि का गोचर विविध जन्म राशियों (चन्द्र राशियों) को निम्न प्रकार से पायों के अनुसार फल देगा।

मेष राशि को शनि चतुर्थ राशि पड़ेगा, अतः यह लोहे का पाया है। अतः घरेलू सुख में अशान्ति रहेगी, सम्बन्धियों से बिगाड़ की सम्भावना, व्यापार में हानि, स्वास्थ्य में कष्टदायक रहेगी।

वृषभ राशि को शनि तीसरे पड़ता है, इसलिए उनके लिए ताँबे का पाया है। शुभ समाचार की प्राप्ति, कार्यों में सफलता, राज्य की ओर से मान तथा धन आय सम्बन्धी फल रहेगा।

मिथुन राशि को शनि दूसरे स्थान में चाँदी के पाये में आता है। जायदाद सम्बन्धी कार्यों में लाभ, राज्य से भाग्योदय, सम्बन्धियों से मेल-मिलाप इसके शुभ फल हैं।

कर्क राशि को पहले भाव में सोने के पाये में प्रवेश मिला। सम्बन्धियों से बिगाड़, धन व्यय और झूठा अपराध या लांछन लगना ये इसके फल हैं।

सिंह राशि को बारहवें भाव में लोहे के पाये में शनि आयेगा। अतः शत्रुओं की ओर से कष्ट, स्त्री को कष्ट, धन-हानि तथा यात्राएं अधिक होना, ये फल रहेंगे।

कन्या राशि को शनि ग्यारहवें भाव में सोने के पाये में पड़ेगा। अतः सन्तान को कष्ट, स्वास्थ्य में बिगाड़, बने हुए कार्यों में विघ्न आदि फल होंगे।

तुला राशि को शनि का गोचर कर्क राशि से होगा जो कि ताँबे का पाया होगा। अतः फल स्त्री से सुख, बिगड़े हुए कार्यों में सफलता, शत्रुनाश आदि होंगे।

वृश्चिक राशि को यह शनि गोचर तुला पड़ता है। अतः चाँदी का पाया हुआ। फल होंगे, धर्म में रुचि, सन्तान से सुख, व्यापार में वृद्धि आदि।

धनु राशि को यह शनि गोचर आठवें पड़ता है जो कि ताँबे का पाया हुआ। अतः व्यापार में वृद्धि, घर में मंगल कार्य आदि शुभ फल होंगे।

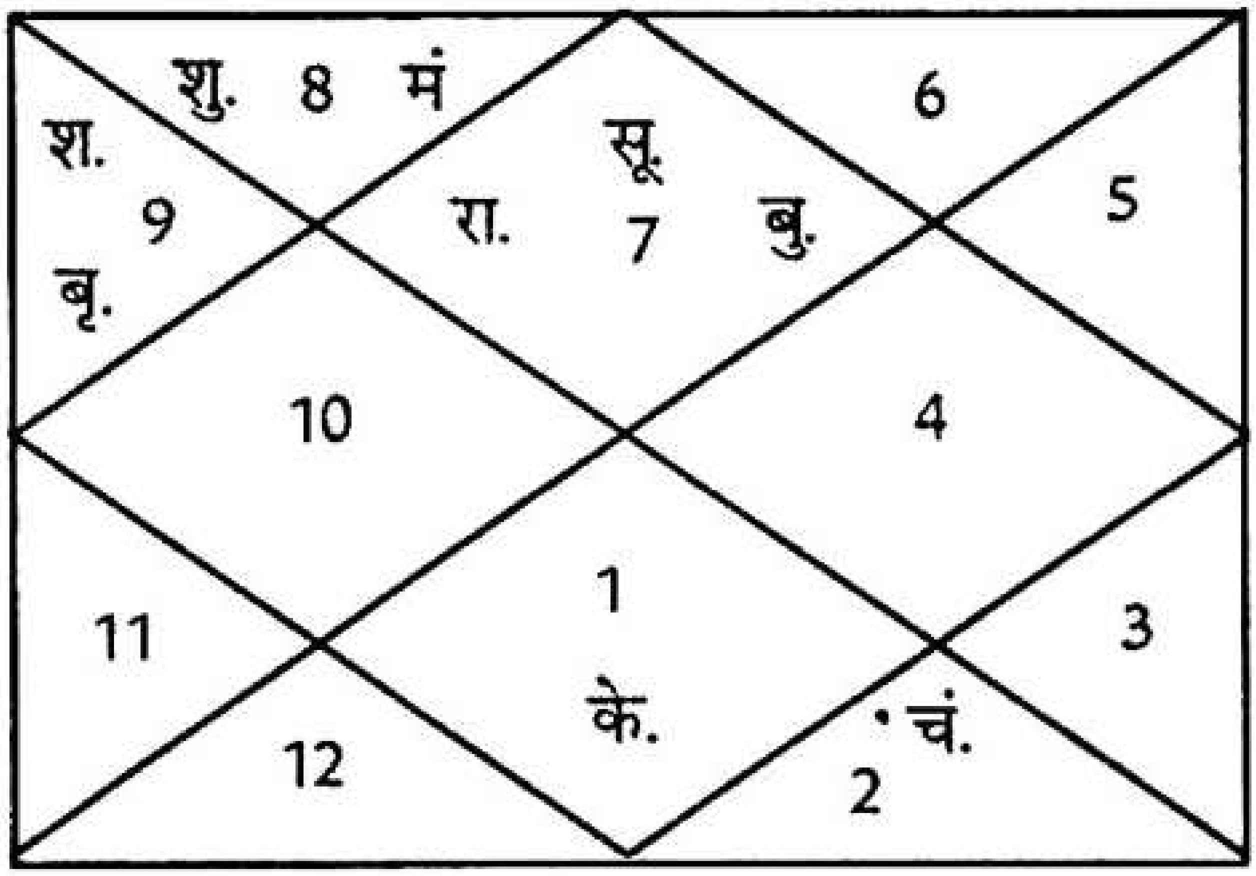
कुम्भ राशि को यह शनि गोचर छठे पड़ता है, अतः स्वर्ण का पाया हुआ। अतः फल होगा शत्रुओं से भय, झगड़े में धन अपव्यय, धन-हानि आदि।

मीन राशि को यह शनि गोचर पाँचवें पड़ता है, अतः उनके लिए चाँदी का पाया है। फल होगा, धन का लाभ, सन्तान को सुख आदि।

अब साढ़े साती को समझने के लिए कुछ वास्तविक जन्मकुण्डलियाँ पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं।

निम्नांकित कुण्डली वाले जातक का जन्म 31 अक्तूबर 1910 । जातक की पहली दोनों साढ़े सातियाँ सामान्यतया ठीक ही रहीं। ये साढ़े सातियाँ 8 जुलाई 1909, 26 अप्रैल 1939 और तीसरी साढ़े साती 7 मार्च 1969 से क्रमश: आरम्भ हुईं। यहाँ शनि अशुभ होने के कारणों पर पाठक विशेष ध्यान दें—

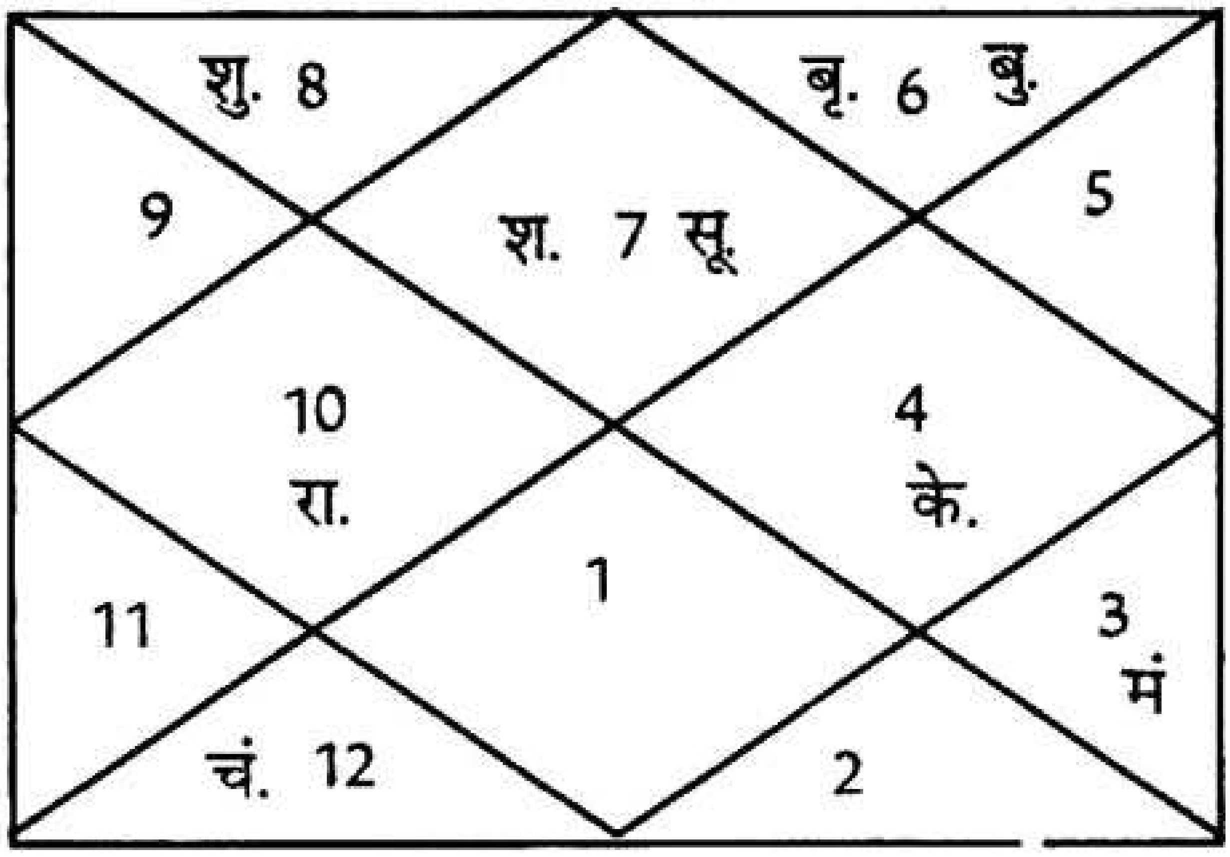
1. तुला लग्न के लिए शनि शुभ भावाधिपति होने से शुभ फलदायक ग्रह है, क्योंकि वह केन्द्र और त्रिकोण का एक साथ स्वामी होने से राजयोग कारक है, इसलिए साढ़े साती में हानिकर सिद्ध नहीं हुआ।
2. चन्द्र लग्न से विचार करने पर भी शनि विशेष शुभ फलदायक होता है; क्योंकि वह पुन: केन्द्र (दशम), और त्रिकोण (नवम) का स्वामी बनता है। इसलिए भी साढ़े साती खराब नहीं गई।



3. प्रथम साढ़े साती के समय जातक राहु महादशा से गुजर रहा था। राहु चूँकि छाया ग्रह है, उसे उन ग्रहों का फल करना है जिनके कि साथ यह स्थित है, अर्थात् सूर्य तथा बुध का फल करेगा जो कि भाग्याधिपति तथा लाभाधिपति हैं और लग्न में स्थित हैं। अत: साढ़े साती के समय भी अशुभ दशा का बुरा फल नहीं हुआ।
4. द्वितीय साढ़े साती के समय शनि की महादशा चल रही थी। शनि इस कुण्डली के लिए लग्न व चन्द्र लग्न दोनों से योगकारक है। धनु राशि में वैसे भी अशुभ नहीं माना जाता है साथ ही गुरु के साथ तो शुभ ही है और लग्नेश तथा चन्द्र लग्न के एक स्वामी शुक्र के नक्षत्र में होने से भी बलवान और शुभ है। इसलिए द्वितीय साढ़े साती भी अशुभ सिद्ध नहीं हुई।

तीसरी साढ़े साती में जातक बहुत दु:खी हुआ। पत्नी की मृत्यु भी इसी अवधि में हुई और व्यापार भी बुरी तरह ठप्प हुआ। जातक स्वयं भी बहुत अधिक बीमार रहा। भय था कि कहीं इस साढ़े साती में प्राण न त्याग दे।

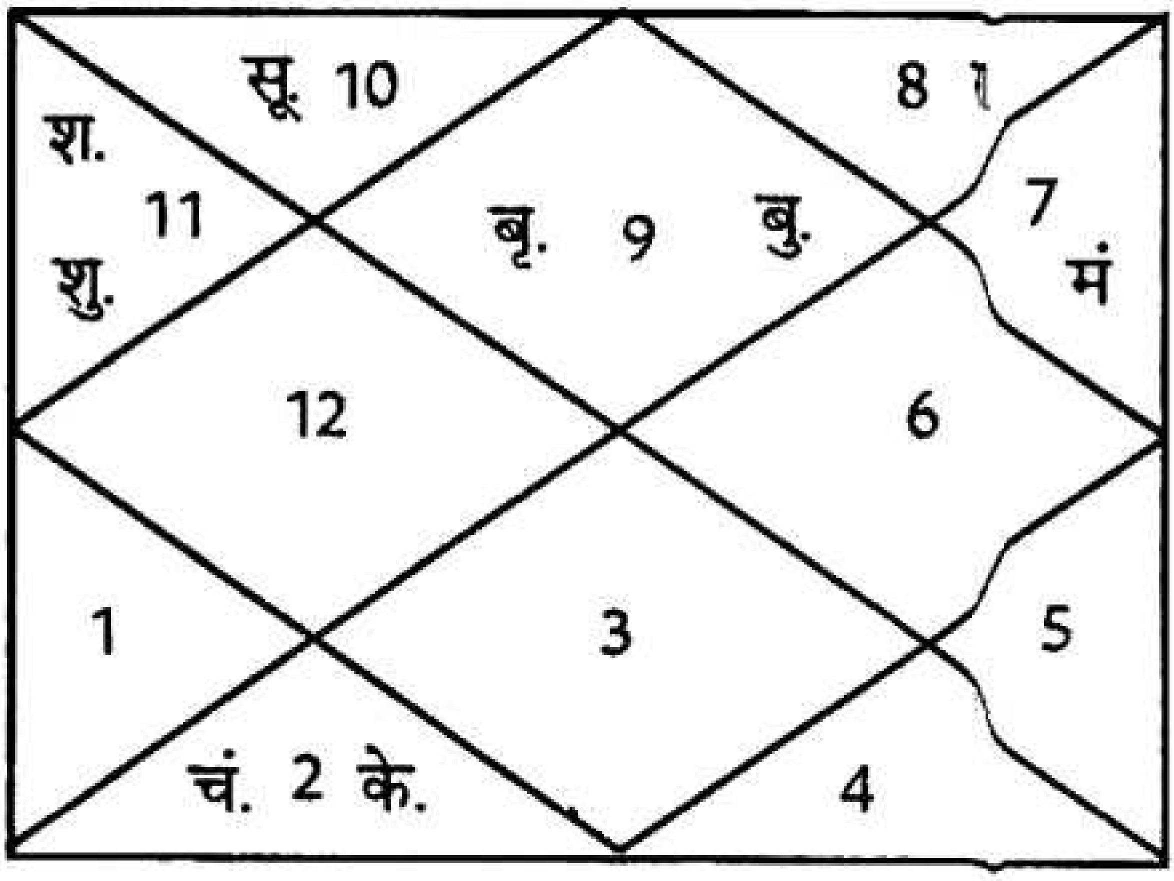
निम्नांकित कुण्डली वाले का जन्म अक्टूबर 1896 को हुआ। इस व्यक्ति को तीसरी साढ़े साती 27–1–1964 से शनि के कुम्भ राशि में प्रवेश के साथ प्रारम्भ



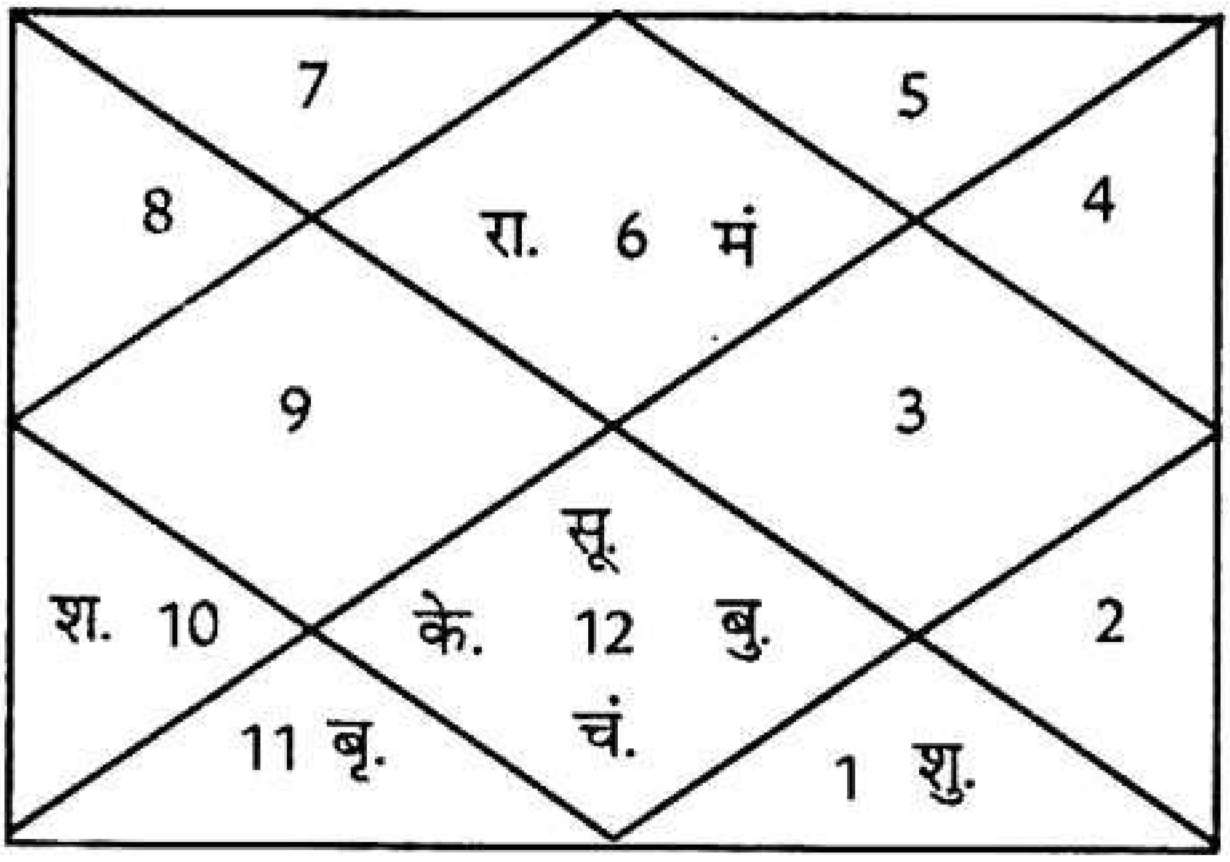
हुई। जब तक शनि इसकी राशि में रहा, समय बहुत खराब बीता। शरीर में वायु की शिकायत बहुत बढ़ गई। कारण था गोचर शनि की लग्नेश शुक्र पर दृष्टि। पुराना दाद जो ठीक था, पुन: उभर आया। याद रहे कि शनि जन्मकुण्डली में राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी है, अत: राहु के वायु के और चर्म रोग के प्रभाव को रखता है। घर के पशु बीमार हो गए। कारण था शनि की दृष्टि , पशु भाव (द्वितीय) और वृषभेश शुक्र दोनों पर पड़ने लगी थी। पुत्र की नौकरी छूट गई थी। कारण था शुक्र का राहु अधिष्ठित राशि के स्वामी से दृष्ट होना व पुत्र भाव से भाग्येश होना। पुत्र की नौकरी उसका भाग्य तो है ही, जो शनि के पृथकताजनक प्रभाव में आकर उससे अलग हो गया। स्त्री का स्वास्थ्य खराब रहने लगा। कारण, शनि की सप्तम भाव और उसके कारक शुक्र दोनों पर दृष्टि। अपयश, झगड़ा और झूठे कलंक भी लगे। अपयश तो इसलिए कि लग्नेश यश का प्रतिनिधि होता है, उसका शनि द्वारा पीड़ित होना अपयश देगा ही, विशेषतया इसलिए कि शुक्र सूर्य अधिष्ठित राशि का स्वामी होने से सूर्य को भी बीच में ला खड़ा करता है और सूर्य का शुक्र के माध्यम से पीड़ित होना भी अपयश देगा। मीन राशि में शनि के आते ही स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ, कारण कि मीन में जो अधिकांश भाग है वह शनि और बुध के नक्षत्रों का है जो शनि के मित्र हैं। जन्म स्थान पुन: लौटने का अवसर आया। कारण शनि द्वारा नक्षत्र चार में जिस नक्षत्र में आने पर उसने मकर का अर्थात् चतुर्थ भाव का फल दिया। इसी कारण से जमीन–जायदाद की प्राप्ति हुई, मेष राशि में शनि के प्रवेश करने पर जातक को निवास बदलना पड़ा। कारण चतुर्थेश शनि साढ़े साती में पुन: मित्र शुक्र के नक्षत्र में आकर चन्द्र लग्न से चतुर्थ (निवास) स्थान पर दृष्टिपात किया और पुराने मकान में प्रवेश करवा दिया।

इसी तीसरी साढ़े साती में जातक का स्वर्गवास हो गया।

फरवरी 1937 के तृतीय सप्ताह में जन्मे इस व्यक्ति की द्वितीय साढ़े साती 9-4-1966 को आरम्भ हुई। जातक के व्यवसाय में स्थान परिवर्तन हुआ और उसे जन्म-स्थान छोड़कर आसाम जाना पड़ा। कारण गोचर शनि की चन्द्र लग्न से चतुर्थेश पर दृष्टि है जोकि जन्म-स्थान (Birth Place) का द्योतक होता हुआ। वह शनि के पृथकताजनक प्रभाव में है। वहाँ व्यवसाय में नुकसान उठाया। कारण था भाग्येश का द्वितीय स्थान में शत्रु शनि की राशि में आना और उस पर गोचर शनि की दृष्टि ने जातक के भाग्य (नवम) को हानि पहुँचाई। स्त्री के स्वास्थ्य में गड़बड़ रही और गर्भपात हुआ। कारण शनि का पृथकताजनक प्रभाव पंचम भाव और पंचमेश (गर्भ) मंगल पर होने तथा गोचर का गर्भस्थान में नीच राशि का होकर गर्भ हानि करना है। शनि के वृष राशि में प्रवेश करते ही जातक जन्म स्थान पर लौट आया। कारण, बाहर जाने पर भी चतुर्थ स्थान पीड़ित रहा जिससे उस स्थान को भी छोड़ना पड़ा। उसकी वृद्धा माता का स्वर्गवास भी हो गया। कारण था शनि का मातृ कारक चन्द्र पर से गोचर और चन्द्र अधिष्ठित राशि के स्वामी शुक्र पर दृष्टि। साथ ही शनि की दृष्टि माता की मृत्यु स्थान के स्वामी अर्थात् शुक्र पर पड़ी। लगभग एक वर्ष बाद बड़े भाई का स्वर्गवास हो गया। कारण, वही वृषभस्थ गोचर। शनि बड़े भाई के लग्नेश और अष्टमेश (दोनों आयु स्थान) शुक्र पर दृष्टि डालता है। शुक्र, चन्द्र लग्न से एकादश भाव का (बड़े भाई का) अष्टमेश है, अतः पीड़ित होकर बड़े भाई का स्वर्गवास देता है।

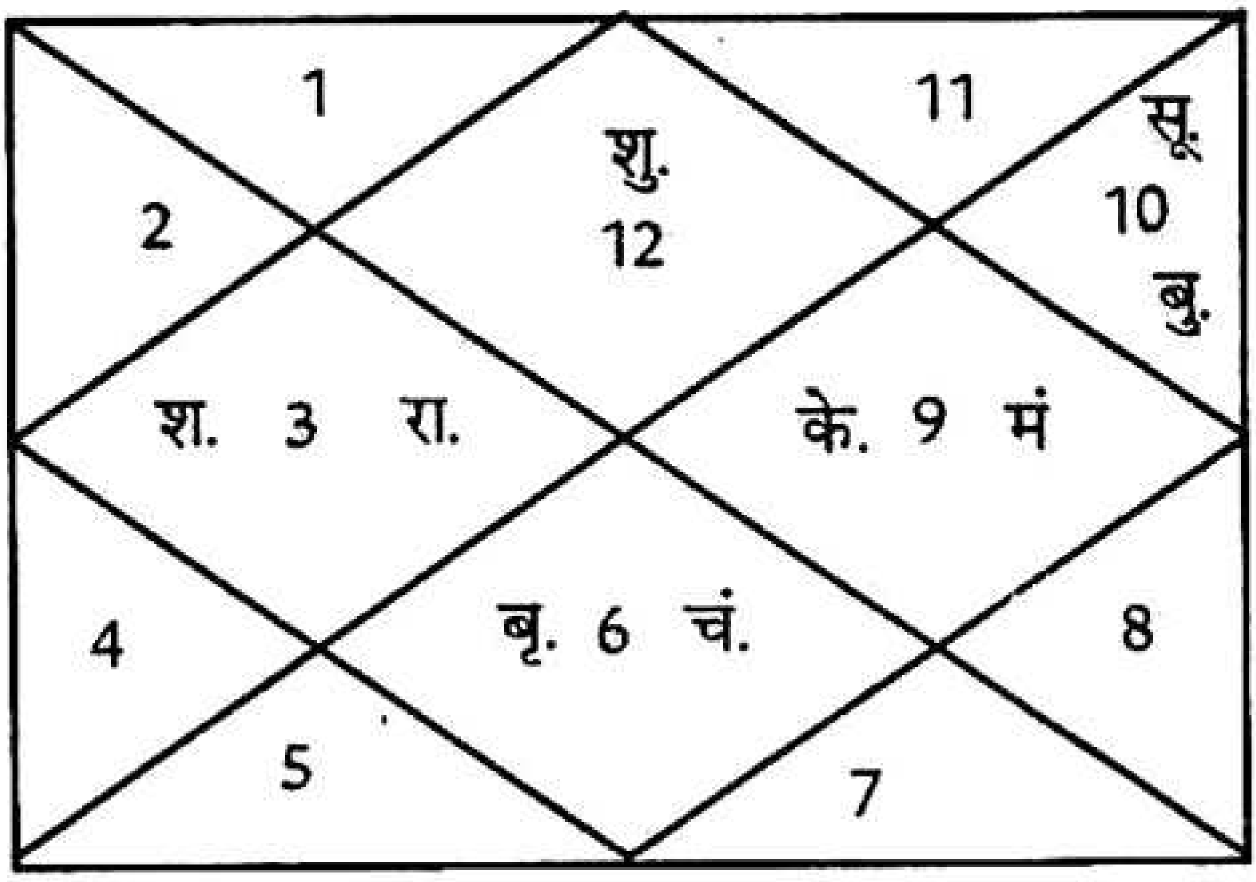


निम्नांकित कुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म मार्च सन् 1903 का है। पहली साढ़े साती 4-2-1934 को तथा तीसरी 27-1-1964 को प्रारम्भ हुई। जातक भाग्य के बल और राम रक्षा स्तोत्र के पाठ के बल पर तीसरी साढ़े साती को पार कर गया। आप देखेंगे कि शुक्र न केवल लग्न में अष्टम स्थान में स्थित होकर, बल्कि चन्द्र लग्न से अष्टम पर भी अपनी शुभ दृष्टि डालकर दीर्घायु बढ़ा रहा है। चन्द्र से अष्टम स्थान पर गुरु की भी दृष्टि है



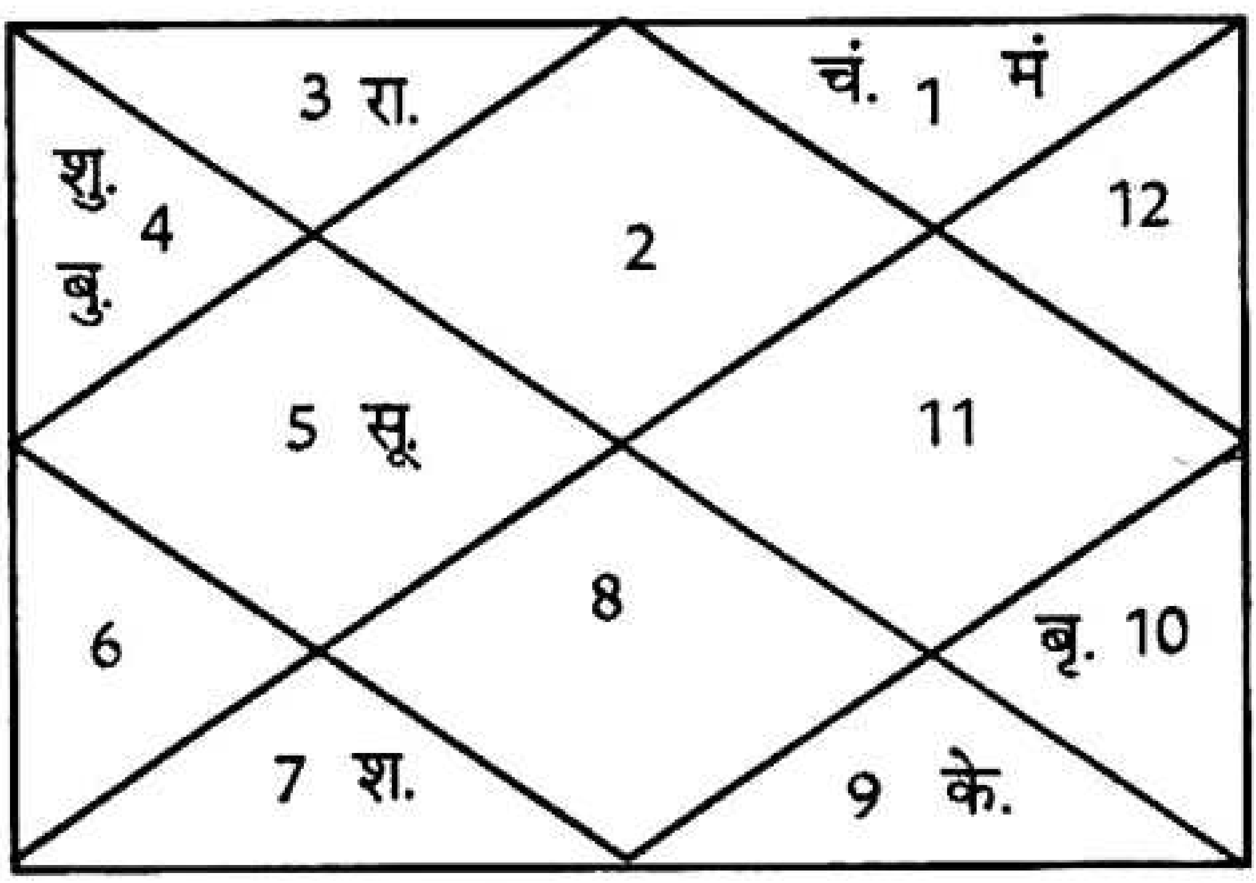
जोकि दीर्घायु स्पष्ट करती है। चन्द्र से अष्टम स्थान पर शनि की दृष्टि भी दीर्घायु बताती है। इसके अतिरिक्त गुरु और शुक्र दोनों चन्द्र लग्न और सूर्य लग्न और लग्न तीनों के द्वितीय द्वादश भावों पर दृष्टि व स्थिति द्वारा शुभ प्रभाव रखते हैं। अर्थात् तीनों लग्न शुभ कर्तरी योग में हैं। ऐसी स्थिति में राम रक्षा स्तोत्र भी काम कर गया। यद्यपि जातक ने मृत्यु को पार कर लिया, तथापि मुकदमों में उसके दस हजार रुपए व्यय हो गए। कारण था शनि षष्ठ स्थान में गोचर और उसका चन्द्र से छठे स्थान को देखना जो शत्रु उत्पन्न करता है। इस समय उसकी स्त्री भी मृत्यु के मुख से बची। आप देखेंगे कि कुम्भ में गोचर के शनि का योग सप्तमेश गुरु से है और उसकी दृष्टि स्त्रीकारक शुक्र पर है। चन्द्र लग्न से सप्तम भाव और सप्तमेश शनि की मार से बच निकले। संभवतया इसीलिये स्त्री को भी जीवनदान मिला। इस अवधि में जातक के बड़े-भाई ने उसे कई बार धोखा दिया। कारण, बड़े भाई का कारक गुरु पहले ही जन्म लग्न से छठे, लग्नेश बुध और चन्द्र लग्न से द्वादश स्थित है और उस पर से शनि का गोचरवश जाना शत्रुता उभारता है। इस समय राज्य की ओर से भी कष्ट रहा। कारण था सप्तमेश का गुरु (दशम से दशम का स्वामी), सूर्य और चन्द्र अधिष्ठित राशि का स्वामी होना और राज्यकृपा का द्योतक होकर शनि से ग्रस्त हो जाना।

निम्नांकित कुण्डली के जातक का जन्म फरवरी 1945 को पहले सप्ताह में हुआ। गोचर शनि के मेष राशि प्रवेश से छोटी साढ़े साती अर्थात् ढैय्या प्रारम्भ हुई। जातक को लगभग पाँच वर्ष पुरानी नौकरी से हटा दिया गया। शनि का मेष राशि प्रवेश 7-3-1969 को हुआ। मेष से गोचर शनि, बुध और सूर्य पर अपनी पूर्ण दशम दृष्टि डालता है; चूँकि बुध चन्द्र लग्न का और उससे दशम भाव का



स्वामी है, अतः उस पर शनि का यह प्रभाव उसे नौकरी से तुरन्त पृथक् कर दे तो इसमें आश्चर्य क्या है? इसी समय व्यापार में साझेदारी न चलने के कारण घाटा उठाया था। कारण था गोचर शनि की सप्तमेश बुध पर दृष्टि। जातक ने पुनः अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया, परन्तु वहाँ भी उसे सफलता न मिली, क्योंकि विद्या का कारक बुध गोचर के शनि के प्रभाव में था।

प्रस्तुत कुण्डली के जातक का जन्म सितम्बर 1926 के पहले सप्ताह में हुआ। अचानक उसे साढ़ साती के प्रारम्भ में ही 7-4-1966 के अनन्तर ट्रक (Transport) विशेष आमदनी प्राप्त करने की धुन सवार हुई। लगभग तीस हजार रुपये में एक ट्रक खरीदा। कुछ ही दिन बाद एक दुर्घटना में ट्रक टूट-फूट गया। चिकित्सा और मुकदमें में पाँच हजार रुपये का व्यय



हुआ। लगभग चार हजार रुपयों में ट्रक की मरम्मत करवाई गई। इसके कुछ समय बाद जातक हृदय रोग से ग्रस्त हुआ। बीमारी पर अन्धाधुन्ध खर्च हुआ। हारकर जातक ने ट्रक केवल दस हजार रुपये में बेच दिया।

जातक को चिकित्सा कार्य ही करते रहना चाहिए था, चिकित्सा का योग विद्या स्थान (द्वितीय) में राहु की स्थिति तथा राहु अधिष्ठित राशि के स्वामी बुध का लग्नेश शुक्र से मिलकर बैठना बता रहा है। उसी राहु का प्रभाव बुध द्वारा चन्द्र लग्न से द्वितीयेश पर भी है जो कि डॉक्टरी विद्या का सूचक है। अस्तु, जब शनि गोचर द्वारा चन्द्र लग्न से द्वादश भाव में आया तो उसने लाभ में बाधा डाल दी। कारण था गोचर शनि की लग्न से नवम (भाग्य) भाव पर पड़ रही दृष्टि। इस भाव के स्वामी गुरु ने पहले भाग्य को बिगाड़ा। शनि वाहन भाव (चतुर्थ) और उसके स्वामी (सूर्य) दोनों से अष्टम होकर उसके नाश पर तुला हुआ था, सो ट्रक को कैसे सही सलामत रहने देता। हृदय स्थान (चतुर्थ) से अष्टम होने के कारण तथा सूर्य से भी अष्टम स्थान में होने के कारण हृदय रोग हुआ। इस प्रकार साढ़े साती का शनि अपनी दृष्टि आदि की मार द्वारा घटनाओं के स्वरूप की ओर इशारा करता है और यह भी सूचित करता है कि किस प्रकार धन हानि उठानी पड़ सकती है।

5

दशा का स्वरूप

विंशोत्तरी दशा कैसे मनुष्यों के जीवन दर्शन के अनुरूप है? राजयोग कारक भी अनिष्टकारी सिद्ध हो सकता है। बुध तथा राहु केतु के लिए विशेष नियम।

विंशोत्तरी दशा पद्धति में ग्रह किस प्रकार से और किस प्रकार का शुभ-अशुभ फल करते हैं, यह अध्याय का विषय है। महर्षि पराशर इस दशा पद्धति के जनक हैं। **इस सर्वोत्तम दशा पद्धति की विशेषता यह है कि यह नैसर्गिक है और ग्रहों का रूप ऐसा पेश करती है जो मनुष्यों के रूपों अर्थात् जीवन दर्शन से बिल्कुल मिलता है।** संसार में कुछ ऐसे लोग हैं जो सदा सज्जनता का व्यवहार करते हैं। चाहे आप उनसे दुष्टता का व्यवहार करें। ऐसे कम ही लोग हैं जो जन्मकुण्डली के त्रिकोण भाव के स्वामी जैसे सज्जनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ज्योतिष का सिद्धान्त है कि त्रिकोण भावों के स्वामी नैसर्गिक पापी ग्रह ही क्यों न हों वे सदा शुभ फल करते हैं, परन्तु इसके विरुद्ध कुछ ऐसे भी लोग हैं जो सदा दुष्ट ही रहते हैं, चाहे आप उनसे कितनी ही शिष्टता से पेश आओ। ऐसे दुर्जनों का प्रतिनिधित्व जन्मकुण्डली में तृतीय, षष्ठ, अष्टम और एकादश भावों के स्वामी करते हैं। इन भावों के स्वामियों को ज्योतिष पापी की संज्ञा देता है। कुछ ऐसे ही संसार में पापी लोग हैं जिनको यदि उत्तरदायित्व दिया जाये तो पापी नहीं रहते, अपने पापी स्वभाव को छोड़कर धर्म पर चलने को उद्यत हो जाते हैं। ऐसे लोगों का प्रतिनिधित्व जन्मकुण्डली में केन्द्र भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम के स्वामी पापी ग्रह करते हैं। इसी प्रकार कुछ ऐसे भी नेक लोग हैं जिन्होंने पूर्व जीवन में सदाचार और नैतिकता का प्रमाण पेश किया, परन्तु अब जब उनको जिम्मेदारी का काम दिया गया तो अपनी नैतिकता और शुभता को छोड़ बैठे। इस प्रकार से बदल जाने वालों का प्रतिनिधित्व केन्द्रों के स्वामी नैसर्गिक शुभ ग्रह करते हैं।

संसार में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अवसरवादी हैं। हवा का रुख देख कर बात करते हैं। यदि वे नेक आदमियों में रहें तो नेक हो जाते हैं और यदि दुष्ट आदमियों में रहे तो दुष्ट। ऐसे व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व जन्मकुण्डली में दूसरे और बारहवें भावों के स्वामी करते हैं। संसार में ऐसा भी देखा गया है कि जो लोग अपने को बदल सकते हैं उनको यदि सज्जनों का संग मिल जाए तो बहुत सुखी रहते हैं। दूसरे शब्दों में केन्द्र और त्रिकोण घरों के स्वामियों का परस्पर मेल की शुभता, जिसे ज्योतिष राजयोग का नाम देता है, उत्पन्न करता है।

उपरोक्त नियमों की रोशनी में पराशर पद्धति के अनुसार विविध लग्नों के लिए अच्छे-बुरे तटस्थ ग्रह इस प्रकार होंगे। इनको समझ लेने पर दशा फल कहना सरल हो जाता है।

मेष लग्न—लग्नेश मंगल चूँकि केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी होता है। अत: बहुत शुभ होता है। यहाँ मंगल की मूल त्रिकोण राशि भी लग्न ही में पड़ती है, अत: इस लग्न के लिए मंगल अष्टमेश होता हुआ भी शुभ फल (अपनी दशा भुक्ति में) करता है। शनि, बुध ये दो ग्रह पापी भावों के स्वामी होने से पापी कहलाते हैं। शुक्र द्वितीयेश होने के कारण अपनी दूसरी राशि तुला का फल करता है। तुला चूँकि केन्द्र में है, अत: नैसर्गिक शुभ ग्रह शुक्र केन्द्राधिपति होने से शुभता छोड़ देता है और पापी-सा बन जाता है। गुरु नैसर्गिक शुभ ग्रह प्रमुख त्रिकोण (नवम) का स्वामी होने से बहुत शुभ है। सूर्य त्रिकोणेश (पंचमेश) होने से शुभ है। गुरु और शनि यदि इकट्ठे हों तो समझना चाहिए कि यह राजयोग नहीं है, क्योंकि गुरु तो शुभ है और शनि एकादश (बाधक स्थान का अधिपति) होने से बहुत पापी हो जाता है। द्वितीयेश और सप्तमेश होने से शुक्र पक्का मारक है, अर्थात् इस ग्रह की दशा में प्राय: मृत्यु होती है। शनि भी इस लग्न वालों के लिए मारक प्राय सिद्ध होता है।

वृषभ लग्न—गुरु पापी घरों का स्वामी होने से पापी माना गया है, चन्द्र भी तृतीयेश होने से पापी है। शुक्र यद्यपि लग्नेश है, परन्तु इसकी मूल त्रिकोण (मुख्य) राशि छठे भाव में पड़ती है। इसलिए यह ग्रह सामान्यतया पापी ही है। शनि एक साथ केन्द्र एवं त्रिकोण का स्वामी होने से राजयोगकारक है। पापी सूर्य केन्द्रेश होने के कारण शुभ है। बुध पंचम भाव का स्वामी के रूप में फल देता है इसलिए शुभ है। इस लग्न के लिए गुरु दो अशुभ भावों का स्वामी होने से मारक सिद्ध हो सकता है। मंगल भी द्वादशेश सप्तमेश होने के कारण मारक सिद्ध हो जाता है।

मिथुन लग्न—मंगल और सूर्य अशुभ स्थानों के स्वामी होने से पापी हैं। गुरु केन्द्राधिपत्य दोष के कारण पापी है। शुक्र पंचम भाव का फल होने के कारण बहुत शुभ है। यहाँ भी गुरु और शनि के योग से कोई यह न समझ ले कि यह राजयोग है; क्योंकि गुरु केन्द्रेश है और शनि त्रिकोणेश व अष्टमेश है। इसका कारण गुरु व शनि में पापत्व है। चन्द्र द्वितीयेश होने से मारक है। लग्नेश होने के नाते बुध तो योग कारक ग्रह है ही।

कर्क लग्न—शुक्र और बुध पापी भावों के स्वामी होने के कारण पापी अर्थात् अशुभ हैं। मंगल केन्द्रेश और त्रिकोणेश होने से योग कारक (बहुत शुभ) है, चन्द्रमा भी इसी कारण से (लग्न केन्द्र भी है और त्रिकोण भी) योगकारक है। गुरु यद्यपि षष्ठेश है, परन्तु शुभ ग्रह है और नवमेश भी है, अत: कुछ शुभ है। शनि सप्तमेश व अष्टमेश होने से मारक है। सूर्य यदि ग्रहों आदि से योग करता है तो शुभ नहीं तो मारक है।

सिंह लग्न—बुध, शुक्र और शनि अशुभ हैं। मंगल केन्द्रत्रिकोणेश होकर योग कारक और गुरु मुख्य रूप से पाँचवें भाव का फल करने वाला शुभ ग्रह है। शुक्र और गुरु के योग से कोई यह न समझ बैठे कि यह युति योग कारक है चूँकि शुक्र तृतीयेश होने से बहुत पापी है। वह इस योग को नहीं बनने देता। शनि सप्तमेश होने के कारण मारक है। चन्द्र यदि शुभ ग्रहों के साथ सम्बन्धित है तो शुभ अन्यथा अशुभ फल करता है। सूर्य तो लग्नेश (केन्द्र और त्रिकोण का स्वामी) होने से योग कारक है ही।

कन्या लग्न—इस लग्न के लिए मंगल और चन्द्र पापी घरों के स्वामी होने से अशुभ हैं। गुरु दो केन्द्रों का स्वामी होने से अशुभ व मारक है। बुध लग्नेश होने से योगकारक तथा शुक्र नवमेश होने से शुभ है। शुक्र द्वितीयेश होने से मारक है; परन्तु फल नवम का ही करेगा। सूर्य द्वादशेश होने से वैसा फल अच्छा या बुरा करेगा जो अच्छा या बुरा प्रभाव इस पर होगा। शनि की मूल त्रिकोण राशि छठी पड़ती है, इसलिए इसे मुख्यतया उसी बुरे भाव का फल करना चाहिये, परन्तु पंचमेश होने से वह बहुत कम शुभ हो जाता है। इसलिए शनि की शुभता बहुत कम है।

तुला लग्न—इस लग्न के लिए गुरु और सूर्य पापी स्थानों के स्वामी होने से पापी हैं। महर्षियों ने मंगल को पापी माना है, परन्तु यह बहुत कम पापी है क्योंकि नैसर्गिक पापी होकर केन्द्रेश है। शनि केन्द्र त्रिकोण का एकल स्वामी होने से योगकारक है। बुध नवमेश होने से शुभ ही है। यदि चन्द्रमा और बुध

परस्पर सम्बन्ध करें तो राजयोग का फल (दशा भुक्ति में) देंगे, क्योंकि चन्द्रमा प्रमुख केन्द्र का स्वामी होने के कारण मारक है। गुरु पापी ग्रह भी मारक सिद्ध हो सकते हैं। शुक्र सम है। (लग्नेश होने से यह जितना शुभ है अष्टमेश होने से उतना पापी भी)।

वृश्चिक लग्न—बुध शनि पापी स्थानों के स्वामी होने से पापी हैं। शुक्र नैसर्गिक शुभ होकर केन्द्र का स्वामी होने से पापी है। गुरु पंचमेश होने से शुभ ही है। चन्द्रमा नवमेश होने से शुभ है। यदि सूर्य (केन्द्रेश) और चन्द्र (त्रिकोणेश) का परस्पर युति आदि द्वारा सम्बन्ध हो तो ये ग्रह अपनी दशा भुक्ति में योग का अर्थात् बहुत शुभ फल देते हैं। मंगल की मूल त्रिकोण राशि छठे अशुभ भाव में पड़ती है, इसलिए लग्नेश होता हुआ भी कोई विशेष अच्छा नहीं। शुक्र सप्तमेश होने से मारक है।

धनु लग्न—इस लग्न के व्यक्तियों के लिए पापी घरों का स्वामी होने से शुक्र अशुभ है। त्रिकोण के स्वामी होने से मंगल और सूर्य शुभ हैं। यदि सूर्य और बुध का परस्पर सम्बन्ध हो जाए तो ये योगकारक (शुभ फल) होते हैं, क्योंकि बुध केन्द्रेश है और सूर्य त्रिकोणेश। शनि द्वितीयेश तथा तृतीयेश होने से मारक है। गुरु को महर्षि ने कम शुभ फल वाला लिखा है। कारण यह प्रतीत होता है कि लग्नेश होकर, चतुर्थ (केन्द्र) का भी स्वामी है; केन्द्राधिपत्य दोष युक्त है। शुक्र पापी भावों का स्वामी होने से मारक है।

मकर लग्न—पापी भावों के स्वामी होने से मंगल, गुरु अशुभ हैं। चन्द्रमा नैसर्गिक शुभ होकर केन्द्र का स्वामी होने से पापी है। शुक्र केन्द्र तथा त्रिकोण का स्वामी होने से योग कारक (बहुत शुभ) है। बुध की मूल त्रिकोण राशि नवम में है, अतः बुध भी शुभ है। शनि द्वितीयेश होने से मारक है, परन्तु लग्नेश होने से शुभ नहीं है। मंगल आदि पापी ग्रह मारक सिद्ध हो सकते हैं। सूर्य यद्यपि अष्टमेश है तो भी इसको अष्टमेश होने का दोष नहीं लगता, इसलिए यह सम फल करता है।

कुम्भ लग्न—इस लग्न वालों के लिए गुरु, चन्द्र और मंगल पापी भावों के स्वामी होने से पापी हैं। शुक्र केन्द्रेश तथा त्रिकोणेश होने से बहुत शुभ, शनि भी लग्नेश होने से शुभ है। गुरु द्वितीयेश होने से, सूर्य सप्तमेश होने से और मंगल पापी भाव का स्वामी होने से, मारक है। बुध सप्तम सम फल करता है क्योंकि इसकी एक राशि पंचम में पड़ती है और दूसरी अष्टम में (संभवतया बुध थोड़ा पापी ही है, चूँकि बुध को दूसरे ग्रहों का फल करना है, इसलिए इसके लिए 'सम' शब्द उपयुक्त है)।

मीन लग्न—शनि, सूर्य और शुक्र अशुभ हैं क्योंकि ये पापी घरों के स्वामी हैं। बुध मारक भी है और केन्द्राधिपत्य दोष के कारण पापी ही है। मंगल नवमेश होने से शुभ है। चन्द्रमा पंचमेश होने से शुभ है। गुरु लग्नेश होने से योगकारक है। मंगल और गुरु का सम्बन्ध योग कारक है (केन्द्र और त्रिकोण के स्वामी होने से), मंगल द्वितीयेश होता हुआ भी मारक नहीं; क्योंकि नवमेश होकर यह शुभ हो जाता है। शनि पापी भावों का स्वामी होने से अशुभ तथा बुध केन्द्रों का स्वामी होने से मारक है।

बलानुसारेण यथा हि योगानुसारेण दशामुपेति
दशाफलः सर्व फलं नराणां वर्णानुसारेण यथा विभागः ॥

(जातक पारिजात, अ. 18 श्लोक 2)

अर्थात् ज्योतिष शास्त्र में जो चन्द्राधि आदि योगों का वर्णन है उनका फल उन योगों में हिस्सा लेने वाले ग्रहों के बलाबल अनुसार होता है। जितने वे ग्रह बलवान होते हैं उतना ही अधिक शुभ फल प्राप्त होता है। इसी प्रकार किसी दशा भुक्ति का फल कैसा रहेगा, इस बात का निर्णय दशा भुक्ति के ग्रहों के योग पर निर्भर करता है अर्थात् इस बात पर कि वे केन्द्र और त्रिकोण के एकल स्वामी होकर योगकारक हैं अथवा एक केन्द्र का और दूसरा त्रिकोण का (परन्तु बुरे घर का नहीं) स्वामी है आदि और दशा फल ही मनुष्य के लिए सब कुछ है क्योंकि यदि ग्रह बलवान भी हो और योगकारक भी, परन्तु जीवन में उसकी दशा ही न आये तो उसका पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता और फिर इस बात का निर्णय भी मुख्यतया दशा अन्तर्दशा से ही होता है कि जन्मकुण्डली में जो शुभ अशुभ घटनाओं के होने की सूचना विद्यमान है वह कब फलीभूत होगी।

1. दशाएं तो कालचक्र, अष्टोत्तरी आदि बीसियों हैं, परन्तु विंशोत्तरी दशा पद्धति सबकी सरताज है। ज्योतिष पितामह महर्षि पराशर ने स्वयं कहा है :

   ''विंशोत्तर शतं पूर्णामायुः पूर्वमुदाहृतम्,
   कलौ विंशोत्तरी तस्मात् दशा मुख्या द्विजोत्तम।''

   (पराशर 46/14)

   अर्थात् 120 वर्षों वाली विंशोत्तरी का उल्लेख हम पहले कर आए हैं। कलयुग में विंशोत्तरी दशा ही मुख्यतया प्रयोग में लानी चाहिए। यह दशा अनुभव में खरी उतरती है और जहाँ तक हम समझते हैं भृगु संहिता तथा अन्य प्रामाणिक नाड़ी ग्रन्थों में भी इसी दशा को महत्त्व दिया गया है।

2. शुभ भावों का स्वामी जितना अधिक बलवान् होगा उतना ही अधिक शुभ फल देगा। ग्रह नीचे लिखे प्रकार से बलवान् समझा जाता है—

ग्रह अपनी उच्च राशि में हो अथवा उच्च राशि में पहुँचने वाला हो (जैसे मंगल धनु राशि में) स्वक्षेत्र में मित्र राशि में भाव मध्य में स्थित हो, अष्टम वर्ग में चार से अधिक बिन्दु प्राप्त करता हो, दशम आदि केन्द्र स्थानों में स्थित हो, नवांश आदि में उच्च हो, षड्बल से युक्त हो, शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो वह ग्रह अपनी दशा भुक्ति में शुभ फल करता है। इसके विरुद्ध जो ग्रह अपनी नीच राशि में स्थित हो, नीच राशि में जाने वाला हो (जैसे मंगल मिथुन में), भाव सन्धि में हो, अष्टक वर्ग में चार से कम बिन्दु पाता हो, छठे, आठवें, बारहवें आदि अशुभ भावों में स्थित हो, नवांश आदि में नीच राशि में हो, षड्बल में हीन बली हो, अस्त हो, शत्रु राशि में हो, अशुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो वह ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा में अशुभ फल देता है।

(i) यदि कोई ग्रह लग्नेश का मित्र होकर लग्न से शुभ भावों में हो और बुरे भावों (छठे, आठवें, बारहवें हो, न हो)।

(ii) यदि कोई ग्रह चन्द्र लग्नेश का मित्र होकर उससे शुभ स्थानों में हो, (अर्थात् 6, 8, 12वें में नहीं)।

(iii) यदि कोई ग्रह अपनी राशि से भी अच्छे भावों में हो (6, 8, 12वें में नहीं)।

(iv) यदि कोई ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रहों से दृष्ट-युक्त हो और उन नैसर्गिक ग्रहों की राशियों में कोई पापग्रह नहीं हो।

(v) यदि कोई शुभ ग्रह पैरा 2 में बताई रीतियों मे बली है, तो वह शुभ फल करता है। यदि किसी ग्रह में 3 (i) से लेकर (v) तक गिनाए गए सभी गुण पाए जायें तो वह सर्वोत्तम सुख, धन-वैभव, राज्य-मान, भूमि-वाहन आदि सब सुख देता है। जितना-जितना अधिक वह इन गुणों से युक्त होता चला जायेगा उतना-उतना वह श्रेष्ठ फल करता चला जाएगा।

4. यदि कोई ग्रह योगकारक ही क्यों न हो अर्थात् केन्द्र और त्रिकोण भावों का एकल स्वामी ही क्यों न हो, परन्तु वह पापयुक्त और पापदृष्ट हो तो फिर ऐसा ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा में शुभ फल न दे सकेगा, आशा ही आशा रह जायेगी। यह बात अनुभव सिद्ध है। **''ग्रहों का शुभ होना अर्थात् नैसिर्गिक रूप से शुभ होना और आधिपत्य से शुभ होना ही काफी नहीं, उनका बलवान् होना भी अत्यन्त आवश्यक है।''**

5. यदि कोई ग्रह अशुभ भावों—छठे, आठवें, बारहवें का स्वामी है और लग्न का शत्रु है तो वह ग्रह अपनी दशा भुक्ति में धन आदि के लिए शुभ न होगा और यदि दशा और अन्तर्दशा दोनों ऐसे ग्रहों की हैं जो दोनों लग्नेश के शत्रु हैं तो फिर उसका समय अतीव भयावह, कष्टप्रद, धननाशक आदि सिद्ध होगा। जैसे कर्क लग्न हो और शुक्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो इस समय मनुष्य बहुत दुःखी, बीमार व धनहीन रहेगा।
6. परन्तु यदि कोई दशानाथ अशुभ भाव का स्वामी होकर अपने उस अशुभ भाव से बुरे स्थान में पड़े, निर्बल भी हो तो बहुत अच्छा फल करेगा। **उत्तर कालामृत** की यही सम्मति है। **भावार्थ रत्नाकर** भी इससे सहमत प्रतीत होता है। **भावार्थ रत्नाकर** में एक स्थान पर आया है—

   "धनु लग्ने तु जातस्य पंचमस्थ शनैर्दशा।"
   शुभप्रदो योगदेति वदन्ति विभुदोत्तमाः॥

   अर्थात् यदि धनु लग्न हो और शनि पंचम स्थान में हो तो शनि अपनी दशा भुक्ति में योगकारक होकर शुभ फल करेगा। यहाँ शनि नैसर्गिक पापी भी है और दूसरे और तीसरे भाव का स्वामी बनता है, इसलिए पराशरीय नियमों के अनुसार यह एक पापी ग्रह है। अतः इसको शुभ फल नहीं करना चाहिए। भावार्थ रत्नाकर के रचयिता कहते हैं कि यह बहुत शुभ फल करेगा। कारण इसमें यह है कि शनि अपने शुभ स्थान (द्वितीय) की राशि मकर से शुभ स्थान चतुर्थ में पड़ेगा और अपनी तृतीय भावगत मूल त्रिकोण (तृतीय भाव में होने के कारण) राशि कुम्भ से तृतीय स्थान (अशुभ) में पड़ेगा। सब अशुभ भाव के स्वामियों का निर्बल होना ही उनकी शुभता का कारण बन सकता है। इसी को **विपरीत राजयोग** कहते हैं।
7. जहाँ तक धन का सम्बन्ध है धनेश और एकादशेश का पारस्परिक सम्बन्ध सदा धनदायक है। अर्थात् ये ग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में धन देंगे, चाहे वे एक-दूसरे के शत्रु ही क्यों न हों। देखिए भावार्थ रत्नाकर का वृषभ लग्न सम्बन्धी यह श्लोक—

   वृषभङ्गलग्ने तु जातस्य गुरोस्सोमसुतस्य च।
   सम्बन्धी वीक्षणं वापि विद्यते धनयोगदः॥

   अर्थात् यदि जन्म लग्न वृषभ हो और गुरु और बुध में युति अथवा दृष्टि आदि द्वारा परस्पर सम्बन्ध हो तो यह योग धनकारक समझना चाहिए।

8. यदि कन्या लग्न हो और पंचम भाव एकादश भाव स्थित गुरु से दृष्ट हो और चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र का सुख नहीं होता। कारण यह है कि ऐसी स्थिति में गुरु दो ऐसे भावों का स्वामी बनता है जोकि दोनों ही स्त्री भाव हैं। अर्थात् एक माता का और दूसरा पत्नी का। अत: गुरु पुरुष न रहकर स्त्री का फल करता है। विशेषतया तब जब कि चतुर्थ तथा सप्तम भावों में स्त्री ग्रह चन्द्र, शुक्र आदि भी विद्यमान हों। ऐसी स्थिति में पंचम भाव पर उच्च गुरु की दृष्टि स्त्री सन्तान अर्थात् लड़कियाँ देती हैं। देखिए, ज्योतिष के पितामह की सम्मति—

''दारेश लाभभावस्थे दारैरर्थं समागमः।
पुत्रादि सुखमल्पं च जनः कन्याप्रजो भवेत्॥''

अर्थात् यदि सप्तम भाव का स्वामी लाभ भाव में हो तो स्त्रियों द्वारा धन की प्राप्ति होती है। पुत्रों की प्राप्ति बहुत कम होती है और जातक बहुत पुत्रियों का पिता होता है।

9. राहु केतु भी अपनी दशा-अन्तर्दशा में बहुत उत्तम फल देते हैं यदि कुछ एक शर्तें पूरी होती हों तो। महर्षि पराशर कहते हैं—

''यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमौ ग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणाढ्यौ दृष्टौ वा योगकारकौ॥''

अर्थात् यदि राहु अथवा केतु केन्द्र में हों और कोई त्रिकोणपति (पाँचवें अथवा नवें घर का स्वामी) अपना प्रभाव उन पर डाले या ये ग्रह त्रिकोण स्थान में स्थित हों और कोई केन्द्रपति इन पर अपना प्रभाव डाले तो ये ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा में योगप्रद अर्थात् धन, पदवी आदि देने वाले सिद्ध होते हैं।

10. यदि द्वादशेश होकर चन्द्रमा पाप प्रभाव में हो और द्वादश भाव पर ग्रह की दृष्टि हो तो इन पापी ग्रहों की दशा अन्तर्दशा में आँख नष्ट होती है। इस संदर्भ में जातक पारिजात अध्याय 6 का श्लोक 58 देखिए—

''षष्ठे चन्द्रेऽष्टमे भानौ लग्नादन्यगतेऽर्कजे।
वित्तस्थानगते भौमे शक्रोऽपि अन्धो भवेद् ध्रुवम्॥''

अर्थात् यदि चन्द्रमा छठे, सूर्य अष्टम और शनि द्वादश में हो तथा द्वितीय स्थान में मंगल हो तो जातक चाहे इन्द्र ही क्यों न हो आँखों से अन्धा हो जाए। जब शनि द्वादश में होगा और उसकी दृष्टि छठे भाव में स्थित चन्द्रमा पर होगी तो स्पष्ट है कि शनि द्वारा बाईं आँख का भाव (द्वादश) और बाईं

आँख का कारक चन्द्रमा दोनों पीड़ित होंगे। इसी प्रकार जब मंगल द्वितीय भाव में और सूर्य अष्टम भाव में होगा तो मंगल का क्रूर प्रभाव दाईं आँख के भाव (द्वितीय) और दाईं आँख के कारक सूर्य दोनों पर पड़ेगा तथा फल दायीं आँख का नाश होगा। भाव यह है कि आँख का भाव, उस भाव का स्वामी और उस भाव का कारक पीड़ित होने चाहियें। इसीलिए यदि द्वादश स्थान पीड़ित हो और द्वादशेश चन्द्र भी तो बांयी आँख का नष्ट होना सिद्ध हो जाता है।

11. राहु और केतु छाया ग्रह हैं, इसलिए इनका अपना स्वतन्त्र फल नहीं होता। पैरा 9 में महर्षि पराशर की सम्मत्ति से आप इस बात को भली प्रकार समझ गये होंगे। अत: **राहु और केतु की दशा अथवा अन्तर्दशा का फल कहते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि राहु और केतु पर कैसा प्रभाव है?** यदि राहु और केतु पर ऐसे ग्रहों का अधिकतर प्रभाव है जोकि लग्नेश के मित्र हैं तो निस्सन्देह राहु और केतु अपनी दशा भुक्ति में शुभ फल करेंगे।

12. राहु, शनि और षष्ठेश ये सब अभाव सूचक ग्रह हैं। यदि इन तीनों का प्रभाव किसी भाव पर पड़ता है तो जातक को उस भाव फल की बहुत कम प्राप्ति होगी। मान लीजिए कि राहु किसी जन्म कुण्डली में छठे स्थान में स्थित है और षष्ठेश शनि अथवा अकेला शनि द्वितीय भाव तथा उसके स्वामी पर दृष्टि डाल रहा है तो राहु की दशा और शनि की भुक्ति अथवा शनि की दशा और राहु की भुक्ति में जातक को धन की बहुत कमी अनुभव होगी। ऋण लेना पड़ जाएगा और सम्भवत: घर से दूर भी जाना पड़े। चूँकि यह पुस्तक मुख्यतया गोचर की दृष्टि से लिखी गई है, इसमें दशा पर हम अधिक नहीं कह पायेंगे। विस्तृत वर्णन के लिए हमारी पुस्तक **दशाफल रहस्य** देखें।

6

महादशा फल

सूर्य आदि ग्रहों के विभिन्न भावों के स्वामित्व का दशाफल। अन्तर्दशा के विषय, नियम तथा भुक्तिनाथ की विविध स्थितियों का उल्लेख।

1. जैसा की हम उल्लेख कर चुके हैं (देखिए अध्याय 5) ग्रहों का शुभ फल उनके शुभ और बलवान होने पर निर्भर करता है। ग्रह केन्द्रादि स्थिति से किन-किन परिस्थितियों में बलवान समझे जाते हैं इस बात का भी उल्लेख वहाँ हो चुका है, प्रस्तुत अध्याय में ग्रह शुभ-अशुभ तथा बलवान-निर्बल होकर कैसा फल देते हैं, इस विषय का उल्लेख होगा।

सूर्य

सूर्य ग्रहों का राजा है, इसलिए ''यत्पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे'' के सिद्धान्तानुसार संसार में भी जो वस्तुएं प्रमुख हैं, विशाल हैं, बड़ी हैं, महत्त्वपूर्ण हैं, मार्मिक हैं, आधारभूत हैं, पालक रूप हैं, प्रतापशाली हैं उन सबका प्रतिनिधित्व सूर्य करता है। उदाहरणार्थ सूर्य यदि लग्नेश हो और बलवान भी हो तो मनुष्य को ऊँचे स्तर पर ले जाता है और अपनी दशा भुक्ति में राज्य तथा ऊँचा पद दिला देता है जैसा कि हम शिवाजी आदि राजाओं और नेताओं की कुण्डलियों में देखते हैं। यदि सूर्य लग्नेश होकर निर्बल हो तो विपरीत फल करेगा और मनुष्य को घटिया दरजे का सामाजिक हैसियत से कम महत्त्व वाला बना देगा।

2. यदि सूर्य द्वितीय भाव का स्वामी हो और बलवान हो तो दूसरे भाव (धन, परिवार) सम्बन्धी सब बातें ऊँचे दरजे की होंगी और ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली आँखों वाला होगा। उसकी शिक्षा भी ऊँचे दरजे की होगी और आत्मा की तरह सूक्ष्म तथा गम्भीर होगी। उसकी वाणी भी प्रभावशाली होगी। उसके कुटुम्ब का कोई-न-कोई व्यक्ति ऊँचे पद पर आसीन होगा व बहुत धनी होगा। जातक भी अच्छा धन कमाएगा और उसका एकत्रित धन (Bank

Balance) भी अधिक होगा। उसकी माता के बड़े भाई आमतौर पर ऊँची हैसियत के मालिक होंगे। उसके किसी बच्चे को राज्य में कोई अधिकारपूर्ण पद मिलेगा। परन्तु सूर्य निर्बल हुआ तो उसको धन हानि और आर्थिक परेशानी होगी। यदि सूर्य और द्वितीय भाव दोनों बहुत पीड़ित हुए तो ऐसा व्यक्ति खराब आँख वाला होगा और उसकी माता के बड़े भाई को कष्ट होगा। यदि द्वितीय भाव और सूर्य पर राहु, शनि और षष्ठेश का प्रभाव हुआ तो ऐसा व्यक्ति धन की बचत न कर सकेगा। धन उसके पास आयेगा और व्यय भी हो जायेगा। ऐसा व्यक्ति किसी दूसरे कुटुम्ब में गोद जा सकता है अर्थात् उसको कोई अपना वारिस बना लेगा। हाँ, इतना अवश्य है कि राहु शनि के प्रभाव से ऐसा व्यक्ति डॉक्टरी विद्या (Medical Education) प्राप्त करेगा। साधारणतया व्यक्ति घर से अलग होस्टल में रहकर विद्या ग्रहण करेगा या फिर घर से भाग जाने की आदत होगी। यदि चतुर्थ, चतुर्थाधिपति द्वारा द्वादश, द्वादशाधिपति पर भी राहु तथा शनि का प्रभाव हुआ तो ऐसा व्यक्ति घर त्याग कर संन्यासी हो जाएगा। यदि द्वितीयेश सूर्य के साथ बुध भी ऐसा हुआ और दोनों पर राहु और शनि तथा षष्ठेश की युति अथवा दृष्टि द्वारा प्रभाव हुआ तो ऐसे व्यक्ति की वाणी में कोई त्रुटि होगी। अर्थात् वह हकलाता होगा।

3. यदि सूर्य तीसरे भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो वह अपनी दशा अन्तर्दशा में मनुष्य को बहुत प्रभावशाली और सक्षम बना देगा। उसके छोटे भाई प्राय: ऊँचे स्तर प्राप्त करेंगे। उसके मित्र भी ऊँचे राज्याधिकारी होंगे। जातक पुरुषार्थी होगा। उसकी आयु लम्बी होगी। उसके अधीन काम करने वाले भी ऊँचे स्तर के मालिक होंगे। ऐसा व्यक्ति उस मनुष्य का जान-बूझकर विरोध करता है जिसके त्रिक् भाव में सूर्य स्थित होता है, ऐसे व्यक्ति का ससुर प्राय: उच्च पदस्थ अथवा बहुत प्रभावशाली होता है, ऐसे व्यक्ति के बड़े भाई का बेटा भी जीवन में ऊँचा जाता है। जातक स्वयं विजयशाली होता है।

- यदि सूर्य तीसरे भाव का स्वामी हो और निर्बल हो तो व्यक्ति इसकी दशा अन्तर्दशा में कायरता का परिचय देता है। उसके छोटे भाइयों को कष्ट होता है। वह मित्रों से धोखा खाता है, वह निर्बल और दीन हो जाता है। उसको अचानक मृत्युसम भयानक कष्ट होता है। उसके नौकर आदि उससे प्राय: विरोध करते हैं। ऐसे व्यक्ति की ससुराल साधारण घराने की होती है। ऐसा

व्यक्ति प्राय: पराजय को प्राप्त होता है, परन्तु सूर्य की दशा में उसको धन की कमी नहीं होती।

4. यदि सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो मनुष्य धैर्यशील होता है। वह खुले व रोशनी वाले हवादार मकान में निवास करता है। उसको माता का अच्छा सुख मिलता है। यदि शुक्र का योग सूर्य से हो तो उत्तम वाहन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति के पास प्राय: एक से अधिक मकान होते हैं। ऐसे व्यक्ति को पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होती है और उसके सम्बन्धी सहायता करते हैं। ऐसे व्यक्ति का किसी नेता से भी सम्पर्क होता है। उसे पर्याप्त घरेलू सुख रहता है। यदि सूर्य निर्बल हो तो जातक को सूर्य की दशा भुक्ति में बहुत दु:ख उठाना पड़ता है, उसके माता-पिता दोनों को कष्ट रहता है। जातक से उसके सम्बन्धी भी अच्छा व्यवहार नहीं करते। यदि सूर्य पर राहु तथा शनि का प्रभाव हो तो व्यक्ति इस समय में अपनी जन्मभूमि छोड़कर अन्यत्र जा बसता है और उसका अपना मकान बहुत कष्ट और विलम्ब से बनता है। जातक को पैतृक सम्पत्ति का अपना भोग भी प्राप्त नहीं होता। इस अवधि में जनसाधारण जातक का विरोध करता है और उसे वाहन आदि से हानि होती है।

5. यदि सूर्य पंचमेश होकर बलवान हो और गुरु से दृष्ट हो तो बहुत पुत्र होते हैं। ऐसा व्यक्ति गम्भीर चिन्तक होता है। उसका पुत्र जीवन में ऊँचा स्तर प्राप्त करता है। वह इस दशा में प्रचुर धन की प्राप्ति करता है। यदि सूर्य पर शुभ प्रभाव अधिक हो तो सट्टे, लाटरी आदि से भी लाभ हो सकता है। यह दशा जातक के लिए सात्विक आमोद-प्रमोद की होती है। जातक भगवान् विष्णु की भक्ति करता है और वेदान्त शास्त्र प्रतिपादित नियमों के पालन की ओर अग्रसर होता है। उसमें दूर दृष्टि होती है। यदि सूर्य बहुत शुभ प्रभाव में हो तो इस अवधि में जातक भविष्य वक्ता बन जाता है और उसको पत्नी के बड़े भाइयों से लाभ रहता है और सामान्यता भी भाग्य वृद्धि होती है। उसकी बड़ी बहिन के पति को भी इस अवधि में सुख रहता है। व्यक्ति इस अवधि में अपने महकमे की परीक्षाओं में सफल हो जाता है।

✪ यदि पंचमेश सूर्य निर्बल होकर व शनि तथा बुध के प्रभाव में होकर पंचम भाव में हो तो इस अवधि में मनुष्य को अपच (Dyspepsia) रोग हो जाता है और स्मरण शक्ति भी कमजोर हो जाती है। यदि पाप प्रभाव अधिक

हो तो पेट में अलसर आदि असाध्य रोग होते हैं। राहु और शनि के प्रभाव में होकर पंचम में पंचमेश बार-बार गर्भपात करवाता है। व्यक्ति को लाटरी, सट्टे आदि से सर्वदा हानि ही रहती है। जातक की पत्नी के बड़े भाई भी उसके विरुद्ध रहते हैं।

6. यदि सूर्य छठे भाव का स्वामी हो और बलवान हो तो मनुष्य रोग रहित रहता है। यदि छठे भाव और सूर्य दोनों पर शुभ प्रभाव ही हों तो सूर्य की दशा में व्यक्ति का कोई शत्रु नहीं होता। उसकी माता के छोटे भाई ऊँची पदवी प्राप्त करते हैं। व्यक्ति को कनिष्ठ भाइयों का सुख रहता है, परन्तु इस दशा में जातक को प्राय: कुछ-न-कुछ आर्थिक कठिनाई होती है तथा ऋण आदि उठाने पड़ते हैं।

✪ यदि छठे भाव और सूर्य पर पाप प्रभाव हो तो मनुष्य सूर्य की दशा में शत्रुओं के हाथों पीड़ित होता है। शत्रु ऊँचे स्तर के होते हैं। यदि सूर्य के साथ लग्नेश भी हो और दोनों पीड़ित हों तो पित्त तथा पेट के रोगों से ग्रस्त होना पड़ता है। मामा पक्ष को कष्ट होता है और जातक को उनसे कुछ प्राप्त नहीं होता। बड़े भाई को बहुत शारीरिक कष्ट रहता है। पुत्र के धन का भी नाश इस दशा में होता है।

7. सूर्य यदि सप्तमेश हो और विशेष बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में शाही घराने तक में विवाह करवा सकता है। अर्थात् विवाह अधिक ऊँचे घराने में होता है। इस दशा में मनुष्य को ऊँचे दरजे के व्यापार से लाभ रहता है और यदि जातक राज्य सेवक (Govt. Servant) है तो पदोन्नति होती है। यदि स्त्री की कुण्डली हो तो इस दशा में उसका पति उन्नति करता है तथा सुख-सुविधा में वृद्धि होती है। जातक का ताऊ भी ऊँचा उठता है। जातक के बड़े भाई का भाग्य भी ऊँचाई छूता है।

✪ यदि सूर्य निर्बल हो और सप्तम भाव सहित राहु तथा शनि द्वारा पीड़ित हो तो उसकी दशा में स्त्री से अनबन हो जाती है और यदि पाप प्रभाव बहुत अधिक हो तो सम्बन्ध विच्छेद तक की नौबत आ जाती है। व्यापार में हानि होती है। राज्य की ओर से कठिनाई होती है, सुख सुविधा में कमी होती है। ताऊ को कष्ट होता है। जातक के बड़े भाई को भाग्य हानि होती है। मामा पक्ष के धन का नाश होता है। पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

8. यदि सूर्य अष्टमेश होकर बलवान हो तो अपनी दशा में आरोग्य वृद्धि करता है, डूबा या रुका हुआ धन वापस मिलता है। अनुसन्धान कार्यों में रुचि उत्पन्न रहती है। पुत्र को भी सुख वृद्धि कराता है। पिता का धन शुभ कार्यों में व्यय होता है। बड़े भाई को मान प्रतिष्ठा मिलती है। यदि सूर्य और अष्टम स्थान निर्बल और पीड़ित हों तो ऐसे सूर्य की दशा में मनुष्य को विदेश जाना पड़ता है, विशेषतया ऐसी स्थिति में जब कि सर्यू किसी पापी ग्रह के साथ और चन्द्र लग्न से अष्टम भाव और उसके स्वामी को भी पीड़ित कर रहा हो। इस दशा में मनुष्य पर गम्भीर रोग का आक्रमण भी संभव है। पिता का धन व्यय बहुत होता है। निज को मानसिक क्लेश रहता है। ससुराल वालों का धन-नाश होता है। बड़े भाई को मान-हानि का डर रहता है।
9. सूर्य यदि नवमेश होकर बलवान हो तो सूर्य दशा में अवश्य राज्य कृपा प्राप्त होती है और अधिकार मिलता है। विशेष भाग्योदय होता है। स्त्री का छोटा भाई तरक्की पाता है। छोटी बहन के पति का मान तथा व्यापार बढ़ता है। धार्मिक कार्यों में रुचि इस दशा भुक्ति में विशेष रूप से बढ़ जाती है। पिता के मान और धन में भी वृद्धि होती है। पौत्र के जन्म की संभावना रहती है। सट्टे आदि कार्यों में धन प्राप्ति होती है।

✪ सूर्य यदि निर्बल हो तो भाग्य हानि होती है। राज्य की ओर से कष्ट होता है, नौकरी छूट जाती है। व्यापार में हानि उठानी पड़ती है। स्त्री के छोटे भाई को कष्ट होता है। धार्मिक कार्यों में रुचि कम रहती है। पिता को शारीरिक कष्ट रहता है। सट्टे आदि में हानि होती है।

10. सूर्य यदि दशम भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में राजसत्ता किसी-न-किसी रूप में देता है। मान में विशेष वृद्धि होती है। जातक की यज्ञादि शुभ कार्यों में इस दशा भुक्ति में रुचि रहती है। पिता के धन में वृद्धि होती है। कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। धन में वृद्धि होती है। किसी बड़े काम धन्धे का श्रीगणेश होता है। यदि पत्नी की कुण्डली में शुक्र का सूर्य से योग हो तो इस दशा में पति को वाहनादि की प्राप्ति होती है।

✪ यदि सूर्य निर्बल तथा पाप ग्रहों से पीड़ित हो तो राज्य से हानि तथा अधिकार हीनता देता है। अच्छे यज्ञीय कार्यों से दूर रखता है, पिता को आर्थिक हानि देता है और जातक का अपमान होता है। छोटे भाई को कष्ट होता है। जातक को अपने कार्यों में असफलता मिलती है। सास को इस दशा में शारीरिक कष्ट रहता है। छोटे भाइयों का स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है।

11. सूर्य यदि ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में बहुत धन लाभ देता है। बड़े भाई भी मान और धन प्राप्त करते हैं। जातक सात्विक प्रवृत्तियों की ओर बढ़ता है। पुत्री के विवाह की संभावना रहती है और यदि वह विवाहित हो तो दामाद के मान और धन में वृद्धि होती है। छोटे भाइयों का भाग्य चमकता है।

- ✪ यदि सूर्य निर्बल और पाप प्रभाव में हो तो सूर्य की दशा भुक्ति में लाभ में कमी, बड़े भाई को कष्ट, दामाद को कष्ट और स्वयं को कष्ट होता है। यदि जातक कोई बहुत बड़ा राज्याधिकारी जैसे प्रधान मन्त्री अथवा सेना का अधिकारी हुआ तो इस दशा में युद्ध द्वारा जन-धन की हानि होती है। जातक की सात्त्विक प्रवृत्तियां निस्तेज हो जाती हैं। पुत्री के विवाह में अड़चनें आती हैं और यदि वह विवाहित हो तो दामाद को कष्ट रहता है। जातक का अपने बड़े भाइयों से विरोध रहता है। माता को भी बहुत कष्ट पहुँचता है।

12. यदि सूर्य द्वादशेश होकर बलवान हो और किसी अच्छे भाव में स्थित हो तो उस भावानुसार शुभ फल जैसे धनादि अपनी दशा भुक्ति में दिलवाता है। रक्षा विभाग के बड़े अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित कराता है। समृद्धि में वृद्धि करता है। व्यय शुभ कार्यों में होता है। गंगासागर आदि तीर्थों का दर्शन होता है।

- ✪ सूर्य यदि निर्बल और पाप दृष्ट हो तो इसकी दशा भुक्ति में निरर्थक व्यय होता है। आँख में कष्ट रहता है। सेना विभाग के अधिकारियों से अनबन रहती है। जातक को उस भाव सम्बन्धित बातों से हानि रहेगी जिसमें कि सूर्य स्थित हो। यदि शुक्र सहित सूर्य पर राहु, शनि का प्रभाव हो तो उस अवधि में जातक को निद्रा नाश की शिकायत (Insomnia) हो जायेगी। पुत्र को विशेष कष्ट होगा। पिता के सुख में कमी होगी।

चन्द्र महादशा

1. चन्द्रमा यदि प्रथम भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में बहुत धन देता है, मान में वृद्धि करता है, मन प्रफुल्लित रहता है व स्त्री वर्ग से लाभ होता है। तरल पदार्थों से लाभ होता है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है, मन में दया के भाव रहते हैं। जिस भाव में चन्द्र स्थित हो उस भाव सम्बन्धित व्यक्ति से जातक की इस दशा में विशेष प्रीति रहती है।

- ✪ यदि चन्द्रमा निर्बल हो और पीड़ित हो तो चन्द्र दशा भुक्ति में मनुष्य रोगी रहता है। धन का नाश और मान-हानि भी होती है। यदि बुध के साथ होकर पापी प्रभाव हो तो मस्तिष्क के रोग से पीड़ित रहता है। उसको खांसी, निमोनिया आदि छाती के रोगों से भी कष्ट होता है। मामा के लिए यह समय कष्टप्रद रहता है। चन्द्रमा क्षीण बली होकर जिस भाव में जाकर स्थित हो उस भव से सम्बन्धित मनुष्य जातक को या जातक उस व्यक्ति को जान-बूझकर हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है।

2. चन्द्रमा यदि द्वितीय भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में विशेष धन वृद्धि देता है, कोष में वृद्धि करता है और कुटुम्बियों से सुख देता है। इस अवधि में विवाह की संभावना रहती है। विद्या में प्रगति होती है। भाषण शक्ति उत्तम होती है। आँखों की ज्योति ठीक रहती है। माता की बड़ी बहिनों की उन्नति होती है। पुत्र को सम्मान प्राप्त होता है। भाई के सुख में वृद्धि होती है। प्रचुर मात्रा में उत्तम भोजन प्राप्त होते हैं।

- ✪ चन्द्रमा यदि क्षीण हो और पाप प्रभाव में हो तो चन्द्र दशा भुक्ति में मनुष्य के धन का नाश होता है, कुटुम्बियों से अनबन हो जाती है। आँख में कष्ट रहता है। विद्या में असफलता होती है, विशेषतया जब चन्द्रमा राहु तथा शनि से पीड़ित हो। ऐसा पीड़ित चन्द्रमा वाणी का कोई दोष भी देता है। स्त्री को महान् कष्ट होता है, भाइयों को संकट रहता है व माता की बड़ी बहिन को कष्ट रहता है। अप्रिय भोजन मिलता है और कभी-कभी विषाक्त भोजन भी नसीब होता है।

3. चन्द्रमा यदि तृतीय भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो उसकी दशा भुक्ति में स्वयं को धन की कमी होती है, परन्तु छोटे भाइयों के धन और मान में वृद्धि होती है। छोटी बहिनों को सुख होता है। इस दशा में अच्छे मित्र मिलते हैं और मनुष्य को अपने बाहुबल से विजय प्राप्त होती है। नौकरों-चाकरों का सुख मिलता है। लेखन कला कुशलता आती है।

- ✪ यदि चन्द्रमा निर्बल हो तो व्यक्ति को धन की आय अच्छी रहती है। परन्तु उसे मित्रों तथा बहिन भाइयों से अच्छा व्यवहार नहीं मिलता। भृत्यगण बात मानने से इन्कार कर देते हैं। पराजय का मुँह देखना पड़ता है। चन्द्रमा जिस भाव में जाकर स्थित हो उस भाव सम्बन्धी व्यक्ति को जातक जान-बूझकर हानि पहुँचाने का यत्न करता है। माता को आँखों में कष्ट रहता है।

4. चन्द्रमा यदि चतुर्थ भाव का स्वामी हो और बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में मन में विशेष उत्साह, प्रसन्नता, उत्साह और शान्ति देता है। इस दशा में व्यक्ति को जनसाधारण से अधिक सम्पर्क में रहने का अवसर प्राप्त होता है। मामा की ओर से इन दिनों में खूब प्यार मिलता है, उसके सुख में वृद्धि होती है। यदि चन्द्र और शुक्र का सम्बन्ध हो तो जातक को वाहन आदि का सुख प्राप्त होता है। जल तटीय स्थानों की यात्रा और वहाँ मकान आदि की प्राप्ति की सम्भावना रहती है। मनुष्य उन्नति की ओर अग्रसर होता है। इस अवधि में मनुष्य मानसिक सबलता से कई शुभ कार्य करता है। इस अवधि में जातक के छोटे बहिन-भाइयों के धन में वृद्धि होती है तथा जातक के ससुर का धन भी बढ़ता है।

✪ यदि चन्द्रमा क्षीण हो और पापी ग्रहों के प्रभाव में हो तो अपनी दशा भुक्ति में मन में क्रोध, उदासीनता, वैराग्य आदि कई प्रकार की मनोविकृतियों को जन्म देता है, यदि चन्द्रमा और बुध, सूर्य-मंगल के साथ होकर राहु, शनि द्वारा पीड़ित हों तो मस्तिष्क के रोगों से मनुष्य बहुत पीड़ित रहता है और विशेष पाप प्रभाव होने पर पागल तक हो जाता है। यदि चन्द्रमा और चतुर्थ भाव पर केवल राहु का प्रभाव हो तो मनुष्य चन्द्र दशा भुक्ति में रक्तचाप (Blood Pressure) से पीड़ित रहता है। पीड़ित चन्द्रमा की दशा में धन नाश बहुत देखना पड़ता है। जातक के पिता को अत्यधिक शारीरिक कष्ट सहना पड़ता है। यदि महिला की कुण्डली है तो उसके पति को अपमानित होना पड़ता है, वह प्राय: घर से बाहर रहता है और साधारण जन के हाथों दु:ख उठाता है। यदि राहु से प्रभावित चन्द्र सप्तम में हो तो व्याभिचार की प्रवृत्ति देता है।

5. चन्द्रमा यदि पंचमेश होकर बलवान हो तो उसकी दशा भुक्ति में जातक की बुद्धि प्रखर रहती है। उत्तम बुद्धि के कारण वह अच्छी सलाह दे सकता है। जातक को अपने इष्टदेव में दृढ़ निष्ठा होती है। उसे सट्टे आदि से लाभ होता है। धन में विशेष वृद्धि होती है। घर में पुत्री के जन्म की सम्भावना भी रहती है। इस दशा भुक्ति में जातक का मन आमोद-प्रमोद की ओर विशेष रूप से आकर्षित होता है।

✪ यदि चन्द्रमा क्षीण हो और पाप प्रभाव में भी हो तो चन्द्र दशा भुक्ति में व्यक्ति का बहुत धन-नाश होता है तथा भाग्य-हानि होती है। उसके पुत्रों को कष्ट

होता है। स्मरण शक्ति कम हो जाती है, विशेषतया जबकि चन्द्र तथा पंचम भाव पर राहु और शनि का प्रभाव हो। जातक की योजनाएं (Schemes) पूरी नहीं हो पातीं। उसको सट्टे आदि में हानि होती है। यदि बुध, चन्द्र और गुरु इक्ट्ठे अथवा अलग-अलग, राहु तथा शनि के प्रभाव में हों तो जातक को मानसिक खराबी का शिकार होना पड़ता है और अत्यधिक पाप प्रभाव होने पर पागल तक हो जाने का भय रहता है। पिता को भी भाग्यहीनता रहती है। जीवन साथी के बड़े भाई-बहिनों तथा भाइयों के लिए यह समय कष्टदायक और हानिप्रद रहता है। जातक को सट्टे आदि से हानि रहती है।

6. चन्द्रमा षष्ठेश होकर बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में धन का मध्यम सुख देता है। माता के छोटे भाइयों को सुख देता है। जातक के शत्रुओं को कम करता है तथा उसका स्वास्थ्य उत्तम रहता है। ऐसा चन्द्रमा अपनी दशा भुक्ति में परिश्रम अधिक करवाता है। यदि लग्नेश के साथ होकर पीड़ित हो तो रक्त दोष देता है। बड़े भाई को विपत्ति का सामना करना पड़ता है। इस अवधि में शत्रु बढ़ते हैं और पुत्र के धन का नाश होता है। यदि चन्द्रमा पर राहु तथा शनि का प्रभाव हो तो पुत्र विद्याहीन व मूर्ख रहता है।
7. चन्द्रमा यदि सप्तमेश होकर बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में विवाह करा देता है, काम-वासना की वृद्धि करता है, व्यापार को बढ़ाता है, राज्य की ओर से लाभ देता है, मान में तथा धन में वृद्धि करता है, भूमि, जायदाद, वाहन आदि का सुख भी देता है, विशेषतया जब चतुर्थेश और शुक्र से सम्बन्धित हो। इस अवधि में पिता के बड़े भाई-बहिनों, की भी भाग्य वृद्धि होती है।

✪ यदि चन्द्रमा अष्टमेश होकर क्षीण और पाप प्रभाव में हो तो अचानक व्यक्ति को विकट शारीरिक कष्ट सहना पड़ता है। धन की कमी रहती है। जातक को अनुसन्धान कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं होती। यदि अष्टम भाव और चन्द्रमा दोनों पीड़ित हों और साथ ही चन्द्र लग्न से अष्टम में अष्टमेश हो तो इस दशा में मनुष्य विदेश यात्रा (Foreign Travel) करता है। यदि ऐसी स्थिति में चन्द्र का सम्बन्ध द्वितीय भाव और उसके स्वामी से रहे तो जातक का यह विदेश गमन विद्या प्राप्ति के सम्बन्ध में होता है।

8. चन्द्रमा यदि नवमेश होकर बलवान हो तो वह अपनी दशा भुक्ति में मनुष्य को धर्मप्रिय बनाता है व उसके विचार बहुत ऊँचे व धार्मिक रहते हैं। भाग्य

तथा धन में विशेष वृद्धि होती है। जातक के पिता का धन व मान बढ़ता है। उसकी पत्नी के छोटे भाइयों के भाग्य तथा मान में वृद्धि होती है। जातक की छोटी बहन के पति को भी भाग्य वृद्धि होती है। घर में पौत्री जन्म लेती है। सट्टे आदि से लाभ रहता है। राज्य की ओर से कृपा दृष्टि बनी रहती है। पुत्र भी उन्नति करता है।

- ✪ यदि चन्द्र नवमेश होकर क्षीण हो और पाप प्रभाव में हो तो दशा भुक्ति में धन नाश करता है। जातक को व्यापार अथवा नौकरी में नुकसान होता है। उसका मन धार्मिक कार्यों से उचाट रहता है। उसके पिता को भी आर्थिक और शारीरिक कष्ट रहता है। जातक की पत्नी के छोटे बहिन-भाइयों के भाग्य में रुकावट आती है। जातक की छोटी बहिन के पति को स्वास्थ्य तथा धन हानि पहुँचती है। सट्टे आदि में घाटा उठाना पड़ता है। पुत्र को भी आर्थिक हानि होती है।

9. यदि चन्द्र दशमेश होकर बलवान हो तो चन्द्र दशा भुक्ति में राज्य से अधिकार प्राप्ति होती है। जातक को मान और यश मिलता है तथा धन में वृद्धि होती है इस अवधि में सास से धन मिलने की सम्भावना रहती है। जातक का मन यज्ञ आदि परोपकार के कार्यों में लगता है। उसके मन में महत्त्वाकांक्षा के कारण कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। यदि चन्द्र सप्तम में हो तो प्रायः प्रेम विवाह (Love Marriage) होता है।

- ✪ यदि चन्द्रमा दशमेश होकर क्षीण हो और पाप प्रभाव में हो तो चन्द्र दशा में राज्य के अधिकारियों की ओर से परेशानी रहती है। जातक का रुतबा अधिकार जाता रहता है, विशेषतया जबकि दशम भाव और चन्द्र पर राहु और शनि का प्रभाव हो। वह सर्वत्र विफल रहता है और मान और यश में कमी आती है। जातक के धन में बहुत कमी आ जाती है। जातक धर्म कार्यों में प्रवृत्त नहीं होता।

10. यदि चन्द्रमा ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो जातक को चन्द्र दशा भुक्ति में विशेष धन की प्राप्ति होती है। स्त्री वर्ग से भी लाभ रहता है। जातक का मन शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त होता है तथा उसको बड़े भाई-बहनों तथा मित्रों से इस अवधि में सहायता मिलती है। छोटे भाई की भाग्य वृद्धि होती है। पुत्री का विवाह उन्नतिशील दामाद से होता है। यदि शुक्र युक्त चन्द्रमा हो तो चन्द्र दशा भुक्ति में बहुत धन आता है।

- चन्द्रमा यदि एकादशेश होकर क्षीण हो अैर उस पर पापी ग्रहों का प्रभाव हो तो चन्द्र दशा भुक्ति में धन की आय कम हो जाती है। जातक को स्त्री वर्ग से भी हानि उठानी पड़ती है तथा मन में दु:ख की अनुभूति होती है। जिस भाव में चन्द्रमा स्थिति हो उस भाव से निर्दिष्ट मनुष्यों या बातों का विरोध जातक जान-बूझकर करता है। अत: इस दशा में उसे भाव सम्बन्धी हानि होती है। यह दशा माता के स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से हानिप्रद होती है तथा पुत्रों को भी इस समय रोग रहता है।

11. चन्द्रमा यदि द्वादशेश होकर बलवान हो और शुभ प्रभाव में हो तो अपनी दशा भुक्ति में धन वृद्धि व बहुत सुख देता है। जातक को नींद अच्छी आती है और स्त्री सम्भोग का खूब सुख मिलता है। व्यय भी बढ़ जाता है, परन्तु शुभ कार्यों के लिए होता है। मनुष्य की यात्रा में रुचि रहती है।

- यदि चन्द्रमा द्वादशेश होता हुआ क्षीण हो और पापयुक्त पापदृष्ट हो और साथ ही द्वादश भाव पर भी ऐसा ही पाप प्रभाव हो तो चन्द्रमा की दशा अथवा भुक्ति में जातक की आँख जाती रहती है, विशेषतया उसकी बांईं आँख को कष्ट पहुँचता है। व्यर्थ के कार्यों में व्यय अधिक होता है। यदि चन्द्रमा, द्वादश भाव तथा लग्नेश पर राहु का प्रभाव हो तो व्यक्ति कारागार में पहुँच जाता है। इस अवधि में पिता को विशेष मानसिक कष्ट होता है। छोटे भाई की मान-हानि होती है और पुत्र की मृत्यु तक की सम्भावना रहती है।

मंगल की महादशा

1. यदि मंगल लग्न भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में धन, मान के अतिरिक्त बलशाली व्यक्तितत्व भी देता है। इस अवधि में जातक में उत्साह, उमंग, पुरुषार्थ, वीरता और सब कार्यों में आगे रहने की प्रवृत्ति जागृत रहती है। यदि मंगल अपनी लग्नस्थ राशि को अथवा अन्यत्र स्थित राशि को पूर्ण दृष्टि से देखता हो और साथ ही मंगल पर अथवा मंगल की किसी भी राशि पर यदि गुरु आदि शुभ ग्रहों का प्रभाव हो तो जातक का स्तर बहुत ऊँचा होता है और वह मंगल की दशा में धन, मान और ख्याति पाता है। मंगल और शनि यदि किसी भाव और उस के कारक को अथवा भावेश और कारक को देखेंगे तो जातक इस दशा भुक्ति में जान-बूझकर उस भाव से सम्बन्धित व्यक्ति को कष्ट देने पर उतारू हो जाता है।

- मंगल लग्नेश होकर निर्बल और पीड़ित हो तो धन की चिन्ता देता है। शरीर में पित्त, बवासीर आदि रोग उत्पन्न करता है। मंगल की दशा भुक्ति में जातक शारीरिक तथा आर्थिक कष्ट, मान-हानि और शत्रुओं से पीड़ा पाता है तथा स्वयं किसी दुर्व्यसन में फंस जाता है।

2. मंगल द्वितीयाधिपति होने के साथ ही जब नवमाधिपति होकर बलवान होता है तो अपनी दशा भुक्ति में जातक को पिता से धन दिलाता है। इस अवधि में जातक युक्ति-युक्त व सख्त वाणी के प्रयोग में प्रवीण हो जाता है। इस अवधि में उसकी भाग्य वृद्धि होती है और धर्मानुकूल तरीकों से धनोपार्जन करता है। धनोपार्जन में ऐसे व्यक्ति को उसका साला भी सहायता करता है। इस अवधि में जातक विद्या ग्रहण में सफल हो जाता है।

   यदि उपरोक्त मंगल निर्बल और पाप ग्रहों से पीड़ित हो तो इसकी दशा भुक्ति में जातक का धन नाश होता है। उसकी पत्नी के लिए यह समय बहुत शारीरिक कष्ट का होता है। जातक को उसके साले के हाथों आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। विद्या में असफलता मिलती है। इस अवधि में जातक को धन हानि बहुधा पिता से होता है।

3. मंगल तृतीयेश होकर बलवान् हो तो मंगल की दशा भुक्ति में जातक अपने राजकीय सम्बन्धों के कारण सफल होता है। उसको इस अवधि में भाई, बन्धु वर्ग तथा मित्रों से सहायता और इसी कारणवश सफलता दोनों प्राप्त होती हैं। उसके भाई भी उन्नति करते हैं। वह धन व सफलता प्राप्त करता है।

- मंगल तृतीयेश होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो तो छोटे भाइयों को इसकी दशा भुक्ति में कष्ट होता है। स्वयं जातक की पराजय होती है और राज्य की ओर से उसे प्रताड़ित और अपमानित होना पड़ता है। परन्तु इस अवधि में जातक को धन ठीक-ठाक प्राप्त होता रहता है।

4. यदि मंगल चतुर्थेश होकर बलवान् हो और लग्न या लग्नेश से किसी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित करता हो तो इसकी दशा अथवा भुक्ति में मनुष्य को भूमि अथवा मकान की प्राप्ति होती है। मकान के किरायों से आय में वृद्धि हो जाती है। जातक को पैतृक सम्पत्ति भी इसी अवधि में प्राप्त होती है और पिता की ओर से सहायता मिलती है। जातक को भाग्यवश जन-साधारण से लाभ प्राप्त होता है तथा सुख में वृद्धि होती है।

- यदि मंगल चतुर्थेश होकर निर्बल और पापग्रह पीड़ित हो तो मनुष्य को मंगल की दशा-भुक्ति में जन साधारण में से किसी जानकार के धोखे के

कारण आर्थिक हानि होती है। जातक के बड़े भाई के कारण उसे जमीन-जायदाद खोनी पड़ती है। यदि लग्न सिंह हो तो जमीन-जायदाद का नुकसान मूलतः पिता के कारण होता है अथवा राज्य दण्ड जातक की विद्रोही कार्यवाही के कारण होता है। इस अवधि में व्यक्ति को सुख कम, बैचेनी अधिक रहती है। यदि राहु, शनि तथा सूर्य में से किन्हीं दो द्वारा मंगल और चतुर्थ भाव पीड़ित हों तो इस अवधि में उसे घर छोड़ कर कहीं दूसरी जगह जाकर रहना पड़ता है। पिता को अशान्ति रहती है। मातृ पक्ष को भी ऐसा रहता है।

5. यदि मंगल पंचमेश होकर बलवान हो और विशेषतया पुरुष राशि स्थित गुरु से दृष्ट हो तो जातक को पुत्र रत्न प्राप्त होता है। जातक की मन्त्रणा शक्ति व बुद्धिमत्ता इस अवधि में प्रखर रहती है, फलस्वरूप उसे राज्य से मान और अधिकार की प्राप्ति होती है। इसका कारण जातक की सूझ-बूझ ही होती है। इस अवधि में जातक द्वारा अधिकार प्रतिष्ठा प्राप्त करने के कारण भाग्य भी चमक उठता है।

- यदि मंगल पंचमेश होकर निर्बल और पीड़ित हो तो अपनी दशा भुक्ति में बुद्धि नाश करता है। जातक को इस अवधि में राज्य कोप के कारण भाग्य तथा धन की हानि होती है। जातक की किसी भूल के कारण राज्य सत्ता उसके विरुद्ध कार्रवाई करती है। धनु लग्न वालों को ऐसी दशा में पुत्र पर बहुत व्यय करना पड़ता है तथा जातक के पुत्र भी शत्रुओं द्वारा पीड़ित होते हैं।

6. यदि मंगल छठे, भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो ऐसे मंगल की दशा भुक्ति में मनुष्य अजातशत्रु होता है, बल्कि इस अवधि में उसको शत्रु, चोरों, ठगों आदि से ही कुछ लाभ होता है। स्वयं का शरीर स्वस्थ रहता है तथा मामा को भी लाभ होता है। इस समय व्यक्ति हिम्मत व सफलता के कारण नाम कमाता है तथा उसके धन मान में वृद्धि ही होती है।

- यदि मंगल छठे भाव का स्वामी होकर निर्बल व पापाक्रान्त हो तो जातक के लिए कष्ट का परिचायक है। ऐसे मंगल की दशा भुक्ति स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाली, आर्थिक दृष्टि से बहुत कष्टदायक होती है।

7. यदि मंगल सातवें भाव का स्वामी होकर बलवान् हो तो इसकी दशा भुक्ति में मनुष्य में पुरुषार्थ विशेष रूप से होता है। लाल वस्तुओं के व्यापार आदि से काफी धन कमाता है। जातक के भागीदार उसकी बहुत सहायता करते

हैं। ससुराल से भी धन मिल सकता है। जातक का ताऊ भी आर्थिक सहायता करता है।

- ✪ यदि मंगल सप्तमेश होकर निर्बल और पाप ग्रहों द्वारा पीड़ित हो और तुला लग्न हो तो ऐसे मंगल की दशा भुक्ति में पत्नी की जान पर आ बनती है तथा इसकी चिकित्सा पर काफी धन व्यय होता है। व्यापार में भी धन हानि होती है तथा भागीदारों से मतभेद आदि के कारण कष्ट होता है। जातक के स्वयं के शरीर में कष्ट रहता है। भूमि जायदाद आदि का भी नाश होता है और भाइयों से मतभेद रहता है।

8. यदि मंगल अष्टमेश होकर बलवान् हो और कन्या लग्न हो तो मनुष्य मंगल की दशा भुक्ति में दरिद्रता भोगता है। यद्यपि वह एक आविष्कारक होता है, परन्तु दरिद्र रहता है आविष्कार का लाभ नहीं ले पाता। बल्कि उसे इस अवधि में जुए आदि व्यान घेर लेते हैं। यदि अष्टमेश मंगल दशम भाव में मिथुन राशि में पाप दृष्ट हो तो उसकी दरिद्रता काफी हद तक कट जाती है क्योंकि मंगल अशुभ भावों का स्वामी होकर अपनी दोनों राशियों से अशुभ स्थानों (तृतीय और अष्टम) में होता है। अत: शुभ फल करता है। ऐसे केन्द्रस्थ मंगल को बलवान नहीं समझना चाहिए।

- ✪ यदि मंगल अष्टमेश होता हुआ निर्बल और पाप दृष्ट या पाप युक्त हो तो अपनी दशा भुक्ति में बहुत धन देता है तो भी जातक अपने कुछ गलत कार्यों के कारण अपयश प्राप्त करता है। मित्रों के कारण भी उसे इस अवधि में अपयश मिलता है। मेष लग्न वाले इस अवधि में अपनी मृत्यु को स्वयं आमन्त्रित करते हैं।

9. मंगल यदि नवमेश होता हुआ बलवान हो तो जातक इस की दशा भुक्ति में पिता से सुख पाता है और भूमि प्राप्त करता है। जन-प्रियता के कारण वह भाग्य में वृद्धि पाता है। यदि मीन लग्न हो तो दशा में जातक को पिता से धन लाभ होता है। जातक की पत्नी के छोटे भाई से भी मीन लग्न वाले व्यक्ति को मंगल की दशा में आर्थिक लाभ होता है।

- ✪ मंगल यदि नवमेश होकर निर्बल और पाप ग्रह पीड़ित हो तो मंगल की दशा भुक्ति में सिंह लग्न वालों और मीन लग्न वालों को अपनी उन्नति की आशा ही रह जाती है पूरी नहीं होती, विफलता का मुँह देखना पड़ता है। भाग्य चक्र के कारण भूमि-जयदाद में हानि देखनी पड़ती है। यदि मीन लग्न हुई तो राज्य के कारण से तथा पिता की भूल के कारण धन नाश भोगना पड़ता है।

10. मंगल यदि दशमेश होकर बलवान हो, कर्क लग्न हो तो मंगल की दशा भुक्ति में मनुष्य को पदोन्नति होकर मान और धन लाभ प्राप्त होता है। यदि लग्न कुम्भ हो तो आर्थिक कठिनाई देखनी पड़ती है। परन्तु मित्रों व नजदीकी व्यक्तियों के कारण जातक को इस समय प्रतिष्ठा लाभ होता है।

- मंगल यदि दशमेश होकर निर्बल और पाप ग्रह पीड़ित हो और कर्क लग्न हो तो राज्य से हानि, पुत्र हानि हो। यदि मंगल लग्न में पड़े, यदि वह नीच का हो तो बुरा नहीं समझना चाहिए, मंगल भी अपनी दशा भुक्ति में बहुत शुभ फल करता है। कारण है मंगल का अपनी दोनों राशियों से शुभ स्थान में होना, (मेष से चतुर्थ और वृश्चिक से नवम)। यदि लग्न कुम्भ हो तो मंगल दशा भुक्ति में जातक को भाइयों के कारण अपमान सहना पड़ेगा और जातक के स्वयं के कार्यों में क्रूरता और पाप का समावेश होगा।

11. यदि मंगल ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर बलवान हो और मिथुन लग्न हो तो मंगल की दशा भुक्ति में जातक को चोट आदि की सम्भावना होगी, परन्तु आय अच्छी रहेगी। यदि लग्न मकर हो तो व्यक्ति को इस अवधि में भूमि, मकान संपत्ति आदि का लाभ होगा। सम्भवत: जातक को इस अवधि में किराये आदि की भी आमदनी होगी।

- मंगल यदि ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप ग्रहों द्वारा पीड़ित है तथा लग्न मिथुन है तो ऐसा व्यक्ति मंगल की दशा भुक्ति में आर्थिक हानि उठायेगा। इसको मामा के कारण हानि होगी। यदि मकर लग्न हो तो स्वयं जान-बूझकर जमीन-जायदाद खो बैठेगा। जातक की इस समय की बैचेनी व नुकसान का कारण सम्भवतया बड़ा भाई होगा।

12. यदि मंगल बारहवें भाव का स्वामी होकर बलवान हो और वृषभ लग्न हो तो मंगल की दशा में धन वृद्धि होगी। मंगल की दशा भुक्ति में व्यापार से धन आयेगा। स्त्री पक्ष से भी इस समय धन प्राप्त होगा। लग्न यदि धनु है तो भाग्य वृद्धि रहेगी तथा पुत्र उन्नति पायेगा।

- यदि मंगल बारहवें भाव का स्वामी होकर, निर्बल और पाप ग्रह पीड़ित है तथा वृषभ लग्न है तो व्यापार में हानि, स्त्री पक्ष से हानि इस दशा भुक्ति में रहेगी और यदि धनु लग्न है तो पुत्र के कारण व्यय बहुत रहेगा तथा पुत्र के काम धन्धे भी डांवांडोल रहेंगे।

बुध की महादशा

1. यदि बुध मिथुन लग्न में होकर बलवान हो, व किसी ग्रह से प्रभावित न हो, तो अपनी दशा भुक्ति में जातक को मान तथा धन देता है। इस अवधि में जातक शास्त्रों का अध्ययन करता है और उसकी बुद्धि तीव्र रहती है। यदि बुध नवमेश होकर लग्न में बैठा हो तो इस अवधि में जातक धर्म कार्यों और परोपकार में रत रहता है, धन तथा मान मिलता है और वह मानसिक शान्ति अनुभव करता है तथा उसकी रुचि गाने-बजाने आदि में रहती है। यदि कन्या लग्न हो तो बुध की दशा भुक्ति में जातक अधिक मान प्राप्त करता है, विशेषतया जबकि बुध सूर्य युक्त होकर बलवान हो और शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो।

✪ यदि बुध लग्नेश होकर निर्बल और पाप दृष्ट हो तो जातक बुद्धिहीन होता है और दशा भुक्ति में जातक मस्तिक शोथ (Meningitis), पागलपन (Mania) इत्यादि रोगों से ग्रस्त रहता है। इस अवधि में जातक को मान हानि व धन नाश भी होता है। उस समय जातक को किसी चर्म रोग का शिकार भी होना पड़ता है। यदि मिथनु लग्न हो तो तथा बुध की दशा भुक्ति हो तो जातक के हाथों अथवा सांस की नली में कष्ट रहता है और यदि कन्या लग्न हो तो अन्तड़ियों में कष्ट रहता है।

2. यदि बुध वृषभ लग्न के लिए दूसरे भाव का स्वामी होकर बलवान हो, तो बुध की भुक्ति में जातक वाक् चतुराई तथा व्यापार से खूब धन कमाता है व उसे पुत्र से भी आर्थिक लाभ होता है। इस अवधि में उसे लेखन कार्य से भी आमदनी होती है तथा उसको विद्या की प्राप्ति का अवसर होता है। यदि सिंह लग्न हो तो बुध की दशा भुक्ति में आय विशेष रूप से बढ़ती है। जातक की बैंक आदि में नौकरी होती है अथवा सूद खोरी से पर्याप्त धन कमाता है। इस अवधि में बड़े भाई भी सहायता करते हैं।

✪ यदि बुध द्वितीय भाव का स्वामी होकर निर्बल और पीड़ित हो तो उसकी दशा भुक्ति में धन हानि उठानी पड़ती है। पुत्र द्वारा भी धन नाश होता है। जातक विद्या प्राप्ति में असफल रहता है। इस अवधि में जिह्वा की कोई खराबी रहती है और जातक हकलाता है या अपशब्दों का प्रयोग करता है। इस समय लेखन कार्य तथा व्यापार में हानि रहती है। अर्थात् किसी के प्रति गलत टिप्पणिया गलत कागज़ पत्र पर हस्ताक्षर करने से नुकसान होता है। यदि सिंह लग्न में हो तो बुध की दशा भुक्ति में मनुष्य को बड़े भाई-बहनों

या दामाद के कारण धन हानि सहनी पड़ती है व विनिवेश अथवा ब्याज आदि से आय भी कम रहती है।

3. मेष लग्न के लिए यदि बुध तृतीय भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो दशा भुक्ति में धन की कमी होती है। मित्रों से कुछ सहायता मिलती है व इस अवधि में जातक को परिश्रम बहुत करना पड़ता है। कर्क लग्न के जातक को व्यय अधिक रहता है तथा भाइयों व मित्रों पर भी धन व्यय होता है।

- मेष मंगल के लिए यदि बुध तृतीयेश होकर निर्बल हो तो बुध की दशा भुक्ति में मनुष्य को हाथ, कन्धे आदि में चोट लगने की संभावना रहती है। भाई–बन्धुओं से वैमनस्य रहता है। शत्रुओं से दबकर रहना पड़ता है। अकस्मात् किसी शारीरिक कष्ट के कारण जान पर ही बन आती है। यदि कर्क लग्न हो तो बुध की दशा भुक्ति में भाइयों पर अधिक व्यय करना पड़ता है। इस अवधि में मित्रों से भी हानि होती है, यात्राएं असफल रहती हैं और उनमें व्यर्थ समय और धन व्यय होता है।

4. लग्न मीन हो, बुध यदि चतुर्थेश होकर बलवान हो तो बुध की दशा भुक्ति में सुख रहता है भूमि तथा वाहन मिलता है, यदि बुध पर मंगल तथा शुक्र का प्रभाव हो तो माता से इस समय स्नेह अधिक मिलता है और मन आमोद–प्रमोद में लगता है। लग्न यदि मिथुन हो तो भी यही फल होता है। साथ ही विद्या तथा शास्त्राध्ययन में भी मन लगता है। व्यापार तथा लेखन कार्य से धन प्राप्त होता है।

- बुध यदि चतुर्थेश होकर निर्बल और पीड़ित हो तो व्यक्ति बुध की दशा भुक्ति में दु:ख पाता है। मानसिक रोगों का शिकार हो सकता है। अकस्मात् शारीरिक कष्ट आ खड़ा होता है। सम्बन्धियों से हानि ही होती है। मिथुन लग्न के लिए भी यही फल रहता है।

5. कुम्भ लग्न हो, बुध पंचमेश होकर बलवान हो, तो बुध की दशा भुक्ति में सट्टे आदि से धन मिलता है। भाग्य में वृद्धि होती है। जातक की प्रतिभा का अनुसन्धान कार्यों में उपयोग होता है। यदि वृषभ लग्न हो तो इस अवधि में विद्या व भाग्य वृद्धि होती है। पुत्रों से धन व सम्मान मिलता है।

- यदि बुध पंचमेश होकर निर्बल हो तो बुध की दशा भुक्ति में पुत्रों से कष्ट मिलता है। अनुसंधान कार्य विफल रहते हैं। ऐसे बुध की दशा भुक्ति में बुद्धि तथा धन का ह्रास होता है। यदि वृषभ लग्न हो तो पुत्रों द्वारा धन का

नाश होता है। स्वयं की बुद्धि के बिगड़ जाने से भी धन का नाश होता है व विद्या प्राप्ति रहती है।

6. यदि बुध षष्ठेश होकर बलवान अथवा निर्बल हो तो बुध की दशा भुक्ति में फल क्रम संख्या 35 में लिखे जैसा होगा।
7. बुध यदि सप्तमेश होकर बलवान या निर्बल जैसा भी हो तो फल पैरा 4 में लिखा जैसा होता है।
8. कुम्भ लग्न हो, बुध अष्टमेश हो, बलवान हो तो बुध की दशा भुक्ति में पैरा 5 का सा फल होता है। बुध अष्टमेश हो और लग्न वृश्चिक हो तो बुध की दशा भुक्ति में जातक बहुत धनी होता है। दूर देश में व्यापार से धन मिलता आता है। बड़े भाइयों से भी लाभ रहता है व यज्ञीय कार्यों में प्रवृत्ति की संभावना रहती है।

- बुध यदि निर्बल और पीड़ित हो तो धन आय में कमी रहती है। बड़े बहिन-भाइयों से धन हानि होती है। अचानक ही विदेश यात्रा का संयोग बन जाता है। शरीर में कष्ट रहता है।

9. बुध यदि नवमेश होकर बलवान हो, लग्न मकर हो तो बुध की दशा भुक्ति में भाग्य वृद्धि होती है। राज्य की ओर से सहायता मिलती है। पिता के धन और मान में वृद्धि होती है। धार्मिक कार्यों में मन लगता है। मामा से धन लाभ होता है।

- बुध नवमेश होकर निर्बल और पीड़ित हो तो बुध की दशा भुक्ति में शत्रुओं द्वारा चिर स्थायी हानि होती है। इस अवधि में पिता को भी मानहानि होती है। मामा से भी आर्थिक हानि की संभावना रहती है। दूर स्थानों की यात्रा में भी बहुत कष्ट होता है।

10. बुध यदि दशमेश होकर बलवान हो, लग्न धनु हो, तो जातक को बुध की दशा भुक्ति में सम्मान और अधिकार प्राप्त होते हैं। व्यापार में नाम होता है तथा राज्य की ओर से भी कृपा बनी रहती है।

- बुध यदि दशमेश होकर निर्बल और पीड़ित हो, धनु लग्न हो, तो बुध की दशा भुक्ति में राज्य की ओर से दण्ड स्वरूप नौकरी जाती रहती है तथा व्यापार से हानि होती है। स्त्री के कारण अपयश की संभावना भी रहती है।

11. बुध यदि ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर बलवान या निर्बल जैसा भी हो, वृश्चिक लग्न हो तो पैरा (8) जैसा फल होता है।

12. बुध यदि बारहवें भाव का स्वामी होकर बलवान हो, तुला लग्न हो तो लाभ रहता है। धार्मिक कार्यों में व्यय होता है। दूर की यात्राओं से लाभ रहता है।

✪ बुध यदि बारहवें भाव का स्वामी होकर निर्बल व पीड़ित हो तो हीनता रहती है। इस अवधि में दूर स्थानों की यात्राओं पर व्यर्थ व्यय होता है।

गुरु की महादशा

1. गुरु धनु लग्न का स्वामी होकर बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में विशेष सुख देता है। मन स्थिर और शान्त रहता है। माता, वाहन, जमीन, जायदाद का सुख रहता है। सर्वसाधारण से लाभ रहता है और धन-मान में वृद्धि होती है।

✪ गुरु धनु लग्न का स्वामी होकर निर्बल और पीड़ित हो तो इसकी दशा भुक्ति में बहुत दुःख भोगना पड़ता है। जातक को माता, वाहन, जमीन जायदाद, सभी के कारण से दुःख उठाना पड़ता है। मानसिक रोगों की भी संभावना रहती है। सम्बन्धियों से कलह रहती है और सर्वसाधारण से भी विरोध रहता है।

2. गुरु यदि द्वितीयेश हो कर बलवान हो, लग्न वृश्चिक हो तो गुरु की दशा भुक्ति में आशातीत धन लाभ होता है। इस समय पुत्रों के भाग्य से भी धन लाभ होता है। बुद्धि धन कमाने में सफल रहती है। योजनाएँ भी सुफल देती हैं। विद्या में वृद्धि तथा विवाह का सुख होता है तथा धन शुभ कार्यों में ही व्यय होता है।

✪ गुरु यदि द्वितीयेश होकर निर्बल और पीड़ित हो, लग्न वृश्चिक हो तो गुरु की दशा भुक्ति में बहुत धन हानि होती है, पुत्र द्वारा भी धन नाश होता है। सट्टे आदि में धन नाश होता है, विद्या में हीनता होती है। कुटुम्ब वालों से कलह रहती है, मनुष्य बौद्धिक गलतियाँ करता है जिसके फलस्वरूप उसे इस समय बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

3. गुरु यदि तृतीयेश होकर बलवान हो, लग्न तुला हो तो गुरु की दशा भुक्ति में मित्रों और शत्रुओं दोनों से आंशिक लाभ रहता है। परन्तु आर्थिक स्तर में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। व्यक्ति के धन-मान में सामान्य वृद्धि होती है। व्यक्ति की मनोकामना विलम्ब से फलीभूत होती है तथा शुभ कार्यों में प्रवृत्ति होती है।

- गुरु यदि तृतीयेश होकर निर्बल और पीड़ित हो, तुला लग्न हो तो गुरु की दशा भुक्ति में जातक को मित्रों, मामा और शत्रुओं से नुकसान उठाना पड़ता है। यदि गुरु और शुक्र इकट्ठे हों और पीड़ित हों तो पेट और जिगर के रोगों की सम्भावना होती है। इस अवधि में मित्रों तथा भाइयों से भी वैमनस्य रहता है।

4. गुरु यदि चतुर्थेश होकर बलवान हो, कन्या लग्न हो तो गुरु की दशा भुक्ति में असाधारण सुख रहता है। वाहन का सुख भी रहता है विशेषतया जब गुरु के साथ शुक्र हो। व्यापार में वृद्धि होती है। स्त्री की जन्मकुण्डली हो तो इस अवधि में उसके पति को विशेष मान–सम्मान प्राप्त होता है। इस अवधि में जातक के सम्बन्धी विशेष रूप से सहायक होते हैं।

- गुरु यदि चतुर्थेश होकर निर्बल व पीड़ित हो, लग्न कन्या हो तो गुरु की दशा भुक्ति में सुख का नाश होता है, जातक को घर से दूर रहना पड़ता है, सम्बन्धियों से कलह रहती है और सामान्य जन से शत्रुता रहती है। जातक को जमीन, जायदाद का लाभ नहीं होता।

5. गुरु यदि पंचमेश होकर बलवान हो, लग्न सिंह हो तो गुरु की दशा भुक्ति में भाग्य वृद्धि होती है। पुत्र को भी धन और सुख लाभ रहता है। योजनाओं में सफलता रहती है। अनुसन्धान में विशेष सफलता मिलती है। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ती है।

- गुरु यदि पंचमेश होकर निर्बल हो व पीड़ित हो, लग्न सिंह हो तो गुरु की दशा भुक्ति में भाग्य वृद्धि होती है। पुत्र को भी धन और सुख लाभ रहता है। योजनाओं में सफलता रहती है। अनुसन्धान में विशेष सफलता मिलती है। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ती है।

- गुरु यदि पंचमेश होकर निर्बल हो, पीड़ित हो, लग्न सिंह हो तो गुरु की दशा भुक्ति में धन हानि होती है। पुत्र के धन और सुख का नाश होता है। विदेश यात्रा की सम्भावना रहती है। पुत्रों से विशेष परेशानी रहती है। जातक की योजनाएं असफल होती हैं।

6. गुरु यदि षष्ठेश होकर बलवान हो, लग्न कर्क हो तो गुरु की दशा भुक्ति में बलशाली शत्रुओं व विरोधियों का सामना करना पड़ता है। आय साधारण रहती है।

- गुरु यदि षष्ठेश होकर निर्बल हो, लग्न कर्क हो तो गुरु की दशा भुक्ति में शत्रुओं द्वारा जीवन तहस–नहस हो जाता है। धन हानि बहुत होती है। राज्य

कर्मचारी जातक के विरुद्ध रहते हैं। पिता को भी धन-मान का सुख कम रहता है और जातक रोगी रहता है।

7. गुरु यदि सप्तमेश होकर बलवान हो, स्त्री की कुण्डली हो, लग्न मिथुन हो तो स्त्री के लिए इससे बढ़कर अच्छी स्थिति नहीं हो सकती। उसे दीर्घजीवी, चरित्रवान, धनी पति मिलता है। यदि पुरुष जातक हो तो राज्य और व्यापार दोनों से लाभ रहता है।

✪ गुरु यदि सप्तमेश होकर निर्बल और पीड़ित हो तो गुरु की दशा भुक्ति में राज्य की ओर से राजदण्ड व कष्ट मिलता है। नौकरी तक छोड़नी पड़ जाती है। मान हानि और धन हानि इस अवधि में होती ही है तथा शारीरिक कष्ट विशेषकर रहता है।

8. गुरु यदि अष्टमेश होकर बलवान हो, लग्न वृषभ हो तो गुरु की दशा भुक्ति में धन की विशेष आय तो नहीं होती, परन्तु बहुत कमी भी नहीं रहती। बड़े भाई से कुछ लाभ रहता है। स्वास्थ्य ठीक रहता है।

✪ गुरु यदि अष्टमेश होकर निर्बल और पीड़ित हो, लग्न वृषभ हो तो गुरु की दशा भुक्ति में मनुष्य धन कमाता है, परन्तु बड़े भाई से विरोध रहता है। काला धन पकड़े जाने के कारण कर (Tax) की बहुत कठिनाई होती है तथा विदेश यात्रा की भी संभावना रहती है।

9. गुरु यदि नवम भाव का स्वामी होकर बलवान हो, मेष लग्न हो तो गुरु की दशा भुक्ति में भाग्य खूब चमकता है। हर प्रकार से राज्य कृपा व सहायता मिलती है। गुरुजनों की कृपा रहती है, पिता के धन के लिए भी नवमेश गुरु की दशा भुक्ति भाग्य प्रद होती है।

✪ गुरु यदि नवम भाव का स्वामी होकर निर्बल व पीड़ित हो और लग्न मेष हो तो विशेष भाग्य हानि होती है। पिता को दु:ख मिलता है। इस अवधि में जातक को राज्य से विरोध व दण्ड का सामना करना होता है। गुरु पर राहु तथा शनि का प्रभाव हो तो मनुष्य को नौकरी व व्यवसाय से हाथ धोने पड़ते हैं तथा भयंकर आर्थिक दु:ख उठाना होता है।

10. गुरु यदि दशम भाव का स्वामी होकर बलवान हो, लग्न मीन हो। ऐसे गुरु की दशा भुक्ति में विशेष मान-सम्मान मिलता है। राज्य की ओर से विशेष अनुकूलता व कृपा रहती है। जातक शुभ व यज्ञीय कार्यों में प्रवृत्त रहता है और उसको विशेष लाभ रहता है।

- गुरु यदि दशम भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप ग्रहों से पीड़ित हो तो जातक को राज्य दण्ड व विरोध से दु:ख उठाना पड़ता है, कार्यों में असफलता मिलती है, धन और मान दोनों का नाश होता है और उसके कार्यों में अवैधता व अधार्मिकता का समावेश होता है।

11. गुरु यदि एकादश भाव का स्वामी होकर बलवान हो और लग्न कुम्भ हो तो गुरु की दशा भुक्ति में जातक को विशेष रूप से व अनायास धन लाभ होता है। उसे ब्याज से, बैंक से, कैश सर्टिफिकेट्स (Cash-Certificates) आदि से विशेष आय होती है तथा इस अवधि में बड़े भाई से आय प्राप्त होती है।

- गुरु यदि एकादश भाव का स्वामी होकर निर्बल और पीड़ित हो व कुम्भ लग्न हो तो गुरु की दशा भुक्ति में आय में बहुत कमी आ जाती है। जातक रोगी रहता है व उसे बड़े भाई द्वारा भी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। इस दशा भुक्ति में जातक की स्त्री को भी कष्ट रहता है।

12. गुरु यदि द्वादश भाव का स्वामी होकर बलवान हो और मकर लग्न हो तो गुरु की दशा भुक्ति में मनुष्य को विशेष धन लाभ नहीं होता। इस अवधि में जातक को बहिन-भाइयों पर उनकी भलाई के लिए व्यय करना होता है। राज्य की ओर से भी कुछ परेशानी (टैक्स आदि) रहती है।

- गुरु यदि द्वादश भाव का स्वामी होकर निर्बल और पीड़ित हो तो व्यर्थ व्यय अधिक होता है। भाइयों से कष्ट होता है, परन्तु आय अच्छी रहती है।

शुक्र की महादशा

1. शुक्र यदि लग्नेश होकर बलवान हो, तुला लग्न हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में मनुष्य को धन तथा मान प्राप्त होते हैं। इस अवधि में उसको विलास के साधन खूब प्राप्त होते हैं। स्त्रियों से सम्पर्क रहता है और स्त्रियों से विलास की वस्तुओं के व्यापार से लाभ रहता है।

- शुक्र यदि लग्नेश होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो व लग्न तुला हो तो मनुष्य को शुक्र की दशा भुक्ति में भारी शारीरिक कष्ट होता है। यह कष्ट मृत्यु तुल्य होता है। इस अवधि में विदेश यात्रा की संभावना रहती है। पत्नी से वैमनस्य रहता है। स्त्री वर्ग से तथा विलास की वस्तुओं के व्यापार में हानि रहती है।

2. शुक्र यदि दूसरे भाव का स्वामी होकर बलवान हो, लग्न कन्या हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में खूब धन लाभ होता है। भाग्य बढ़ता है, परन्तु इस अवधि में जातक रोगी भी रहता है। जातक को कुटुम्बी जनों की सहायता से स्वयं के पांव पर खड़ा होने में सहायता मिलती है।

✪ शुक्र यदि दूसरे भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो व लग्न कन्या हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में धन नाश होता है। भाग्य में धक्का लगता है। पत्नी को कष्ट रहता है। कुटुम्ब वालों से अनबन रहती है। विद्या बुद्धि में असफलता रहती है।

3. शुक्र यदि तीसरे भाव का स्वामी होकर बलवान हो व सिंह लग्न हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में मित्रों से सहायता मिलती है। छोटे भाइयों की उन्नति होती है। पास-पड़ौस से सुख रहता है। इस अवधि में मनुष्य पराक्रम का परिचय देता है, परन्तु धन प्राप्ति साधारण ही रहती है।

✪ शुक्र यदि तीसरे भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो व लग्न सिंह हो तो मित्रों तथा भाइयों से कोई सहायता प्राप्त नहीं होती। परन्तु धन की आय बहुत अच्छी रहती है। मित्रों के कारण कार्यों में सफलता रहती है।

4. शुक्र यदि चतुर्थेश होकर बलवान हो व कर्क लग्न हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में वाहन सुख प्राप्त होता है। सुन्दर मकान भी निवास के लिए मिलता है व लाड-प्यार में वृद्धि होती है। सम्बन्धियों से सहयोग रहता है। माता से सुख मिलता है।

✪ शुक्र यदि चतुर्थेश होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो और कर्क लग्न हो तो किसी सम्बन्धी से कोई सहायता या सुख नहीं मिलता। घर में टिकना नहीं मिलता। नौकरी पेशा जातक के तबादले बहुत होते हैं और माता से सुख कम मिलता है। ये सब ऐसे शुक्र की दशा भुक्ति में होते हैं।

5. शुक्र यदि पंचमेश होकर बलवान हो व मिथुन लग्न हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में धन लाभ अधिक रहता है। पुत्र की ओर से सुख व सहायता रहती है। परन्तु कुछ जातकों के दूसरी स्त्रियों से प्रेम-संबंध भी इस अवधि में रहते हैं।

✪ शुक्र यदि पंचमेश होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो, लग्न मिथुन हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में धन नाश होता है। बुद्धि मन्द हो जाती है। पुत्र से कष्ट मिलता है। सट्टे आदि के व्यापार में घाटा रहता है।

6. शुक्र यदि छठे भाव का स्वामी होकर बलवान हो व वृषभ लग्न हो तो धन की बहुतायत रहती है। मित्रों तथा शत्रुओं दोनों से धन मिलता है। स्वयं परिश्रम के कारण भी मान और धन में वृद्धि होती है। मामा से धन लाभ होता है।

✪ शुक्र यदि छठे भाव का स्वामी हो और निर्बल व पाप पीड़ित हो व वृषभ लग्न हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में एक ओर पदोन्नति का लाभ मिलता है तो दूसरी ओर रोग भी काफी भुगतना पड़ता है। शत्रुओं के गुप्त वार के कारण पदोन्नति में बाधा आ जाती है।

7. शुक्र यदि सातवें भाव का स्वामी होकर बलवान हो व मेष लग्न हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में विवाह सुख या स्त्री भोग का योग होता है, व्यापार-वृद्धि होती है व धन बढ़ता है। स्त्री वर्ग से तथा ससुराल से कुछ लाभ होता है और पुरुषार्थ में वृद्धि होती है।

✪ शुक्र यदि सातवें भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो तो इसकी दशा भुक्ति में पत्नी बहुत रोगिणी रहती है। धन नाश होता है। व्यापार में हानि होती है। राज्य से भी परेशानी उठ खड़ी होती है।

8. शुक्र यदि अष्टमेश होकर बलवान हो व मीन लग्न हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में मित्रों से लाभ रहता है। आमोद-प्रमोद के लिए छोटी-छोटी यात्राएं होती हैं; परन्तु धन आय साधारण स्तर की ही रहती है।

✪ शुक्र यदि अष्टमेश होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में जीवन जाने का अर्थात् मृत्यु का भय रहता है। मित्रों से हानि होती है। इस अवधि में जातक के विदेश गमन की भी संभावना रहती है जहाँ से धन आय अच्छी मात्रा में रहती है।

9. शुक्र यदि नवम भाव का स्वामी होकर बलवान हो व कुम्भ लग्न हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में जातक को धन और सुख की विशेष प्राप्ति होती है। इस अवधि में जातक वाहन भी खरीदता है और पिता से विशेष सुख मिलता है।

✪ शुक्र यदि नवम भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो व लग्न कुम्भ हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में पिता के कारण मनुष्य को काफी दु:ख उठाना पड़ता है। पिता को नुकसान आदि के कारण उसको पैतृक भूमि आदि भी नहीं मिल पाती। जातक को इस अवधि में सुख

और धन दोनों का अभाव रहता है और राज्य कर्मचारियों की ओर से मुश्किलें उठानी पड़ती हैं अर्थात् राजदण्ड (Tax) इत्यादि में धन व्यय होता है।

10. शुक्र यदि दसवें भाव का स्वामी होकर बलवान हो तो अपनी दशा भुक्ति में विशेष धन देता है। इस अवधि में मनुष्य सन्तान के कारण मान पाता है। उसकी मन्त्रणा शक्ति सार्थक होती है और वह इसी कारण यश प्राप्ति का भागी होता है। इस अवधि में जातक धर्म तथा परोपकार के कार्यों में विशेष रुचि का परिचय देता है।

- शुक्र यदि दसवें भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में मनुष्य को धन हानि उठानी पड़ती है और उसको सन्तान के किसी गलत कार्य के फलस्वरूप मान हानि होती है। जातक का मन इस अवधि में विलास तथा लम्पटता की ओर अधिक प्रवृत्त रहता है।

11. शुक्र यदि गयारहवें भाव का स्वामी होकर बलवान हो व धनु लग्न हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में जातक को चोट लगने का भय रहता है। वैसे धन प्राप्ति के दृष्टिकोण से यह समय अच्छा रहता है। बड़े बहिन-भाइयों की सहायता भी इस अवधि में प्राप्त होती है। शत्रु इस अवधि में नगण्य रहते हैं। एकादशेश होकर शुक्र निर्बल व पाप पीड़ित हो तो उपरोक्त के विपरीत फल होते हैं।

12. यदि शुक्र बारहवें भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो, लग्न वृश्चिक हो तो शुक्र की दशा भुक्ति में पत्नी रोगी रहती है जिसके कारण व्यर्थ का व्यय बहुत होता है। यदि शुक्र पर राहु-शनि, राहु-सूर्य अथवा सूर्य-शनि का प्रभाव हो तो इस अवधि में पत्नी से पृथकता अर्थात् उसकी मृत्यु या सम्बन्ध-विच्छेद तक की नौबत आ जाती है।

शनि महादशा

1. शनि यदि लग्नेश होकर बलवान हो, कुम्भ लग्न हो तो शनि की दशा भुक्ति में उत्तम मान और धन लाभ होता है। निम्न स्तर के लोगों से इस अवधि में सम्पर्क अधिक रहता है और ऐसे लोगों से ही अधिक लाभ भी रहता है।

- शनि यदि लग्नेश होकर निर्बल और पीड़ित हो व लग्न कुम्भ हो तो शनि की दशा भुक्ति में धन हानि, मान हानि, राज्य की ओर से परेशानी और दूसरे कई प्रकार के कष्ट रहते हैं। टांगों में कष्ट अर्थात् पीड़ा या लंगड़ाकर चलना इत्यादि रहता है और नौकर-चाकरों से हानि उठानी पड़ती है।

2. शनि यदि द्वितीय भाव का स्वामी होकर बलवान हो, लग्न मकर हो तो शनि की दशा भुक्ति में विशेष धन लाभ होता है और मान-सम्मान भी बढ़ता है। जातक अपने ही पुरुषार्थ और परिश्रम से इस समय में धनोपार्जन करता है। निम्न वर्ग के लोग भी इस अवधि में सहायक होते हैं।

- शनि यदि द्वितीय भाव का स्वामी होकर निर्बल व पाप पीड़ित हो, लग्न मकर हो तो शनि की दशा भुक्ति में धन-मान की हानि होती है। घुटनों में कष्ट रहता है। पत्नी को भी वायु रोग की संभावना रहती है। जातक तो स्वयं रोगी रहता ही है।

3. शनि यदि तृतीय भाव का स्वामी होकर बलवान हो, लग्न धनु हो तो शनि की दशा भुक्ति में मित्रों से तथा भृत्य वर्ग से धन लाभ रहता है। विद्या में बढ़ोतरी होती है। कुटुम्बीजनों से भी कुछ सहायता मिलती है।

- शनि यदि तृतीय भाव का स्वामी होकर निर्बल व पाप पीड़ित हो और लग्न धनु हो तो शनि की दशा भुक्ति में मित्रों से तो नुकसान होता है, परन्तु गलत कार्यों से अच्छी धन वृद्धि होती है। बहिन-भाइयों की ओर से व्यवहार उत्तम नहीं मिलता।

4. शनि यदि चतुर्थेश होकर बलवान हो, लग्न वृश्चिक हो तो शनि की दशा भुक्ति में जमीन-जायदाद का सुख होता है। सामान्यता सुख में वृद्धि होती है। व निम्न वर्ग के लोगों से सम्पर्क व लाभ अधिक रहता है।

- शनि यदि चतुर्थेश होकर निर्बल व पाप पीड़ित हो तो शनि की दशा भुक्ति में सुख नाश होता है, मन में चिन्ता रहती है, भाइयों से कष्ट मिलता है। जमीन, जायदाद की प्राप्ति में विघ्न उपस्थित होते हैं, जन-सामान्य की ओर से विरोध का सामना करना पड़ता है।

5. शनि यदि पंचमेश होकर बलवान हो व लग्न तुल्य हो तो शनि की दशा भुक्ति में भूमि व धन लाभ होता है। इस अवधि में पुत्रों से भी सुख मिलता है। जनप्रियता (समाज में सम्मान) प्राप्त होती है और सुख में वृद्धि होती है।

- ✪ शनि यदि पंचमेश होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो व लग्न तुला हो तो शनि की दशा भुक्ति में जातक बहुत दुःख पाता है। उसके पुत्रों को कष्ट होता है। उनके कारण से ही भूमि आदि नष्ट हो जाती है।

6. शनि यदि छठे भाव का स्वामी होकर बलवान हो व लग्न कन्या हो तो शनि अपनी दशा भुक्ति में थोड़ा धन तो देता है। शत्रु इस अवधि में सक्रिय नहीं होते। जातक को इस समय परिश्रम अधिक करना पड़ता है।

- ✪ शनि यदि छठे भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो व लग्न कन्या हो तो अपनी दशा-अन्तर्दशा में शनि दीर्घकालीन रोग देता है। जातक की सन्तान शत्रुवत् व्यवहार करती है, परन्तु जातक को धन आय अच्छी होती है।

7. शनि यदि सप्तमेश होकर बलवान हो व लग्न सिंह हो तो शनि की दशा भुक्ति में मनुष्य को स्थावर सम्पत्ति से लाभ होता है। व्यापार से, विशेषतया लोहे आदि के व्यापार से लाभ रहता है। उत्तम कन्या की संभावना रहती है।

- ✪ शनि यदि सप्तमेश होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो व लग्न सिंह हो तो शनि की दशा भुक्ति में जातक की पत्नी रोग ग्रस्त होने की सम्भावना होती है तथा जातक को व्यापार में हानि होती है। इस अवधि में पत्नी का व्यावहार शत्रुतापूर्ण रहता है।

8. शनि यदि आठवें भाव का स्वामी होकर बलवान हो व लग्न कर्क हो तो शनि की दशा भुक्ति में कुछ-कुछ धन प्राप्ति होती है। राज्य से भी कुछ धन मिलता है। स्वास्थ्य ठीक रहता है और भृत्य वर्ग से थोड़ा बहुत लाभ होता है।

- ✪ शनि यदि आठवें भाव का स्वामी होकर निर्बल व पाप पीड़ित हो व लग्न कर्क हो तो शनि की दशा भुक्ति में विदेश यात्रा की सम्भावना रहती है, परन्तु जातक के स्वयं ही रोगग्रस्त हो जाने की सम्भावना रहती है। धन की आय तो इस समय अच्छी रहती है।

9. शनि यदि नवम भाव का स्वामी होकर बलवान हो व लग्न मिथुन हो तो शनि की दशा भुक्ति में धन का साधारण लाभ रहता है। पिता को इस अवधि में अच्छा लाभ रहता है। विदेश से भी धन प्राप्ति होने की संभावना रहती है।

- शनि यदि नवम भाव का स्वामी होकर निर्बल तथा पाप पीड़ित हो व लग्न मिथुन हो तो शनि की दशा भुक्ति में भागय हानि होती है व राज्य की ओर से परेशानी रहती है। पिता को भी व्यय अधिक रहता है।

10. शनि यदि दशम भाव का स्वामी होकर बलवान हो व लग्न वृषभ हो तो शनि की दशा भुक्ति में जातक को अच्छी मात्रा में धन लाभ होता है। इस अवधि में पिता से लाभ होता है और राज्य की ओर से भी।

- शनि यदि दशम भाव का स्वामी होकर निर्बल और पाप पीड़ित हो तो शनि की दशा भुक्ति में जातक दुष्ट कर्मों में प्रवृत्त होता है व उसे धन और भाग्य हानि होती है। उसके पिता को भी बहुत आर्थिक हानि होती है।

11. शनि यदि ग्यारहवें भाव का स्वामी बलवान हो व लग्न मेष हो तो शनि की दशा भुक्ति में जातक को अच्छा लाभ रहता है। उसे राज्य की ओर से भी सामान्य लाभ पहुँचता है और भूमि भवन आदि प्राप्त होते है।

- शनि यदि ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर निर्बल व पाप पीड़ित हो व लग्न मेष हो तो टांगों में कष्ट रहता है। आय कम हो जाती है। बड़े भाई को अथवा बहिन को कष्ट होता है। राज्य के कारण आर्थिक हानि होती है।

12. शनि यदि द्वादशेश होकर बलवान हो व लग्न मीन हो तो शनि की दशा भुक्ति में आय अच्छी रहती है, परन्तु व्यय भी अधिक रहता है। बड़े भाइयों से सहायता मिलती है। पुरुषार्थ अथवा काम अधिक करना पड़ता है। भूमि भवन आदि की प्राप्ति होती है।

- शनि यदि द्वादशेश होकर निर्बल और पीड़ित हो व लग्न मीन हो तो शनि की दशा भुक्ति में जातक को आर्थिक रूप से नुकसान होता है। उसे विदेश यात्राओं से भी कोई लाभ नहीं होता। बहिन–भाइयों से इस समय कोई सहायता प्राप्त नहीं होती।

अन्तर्दशादि फल

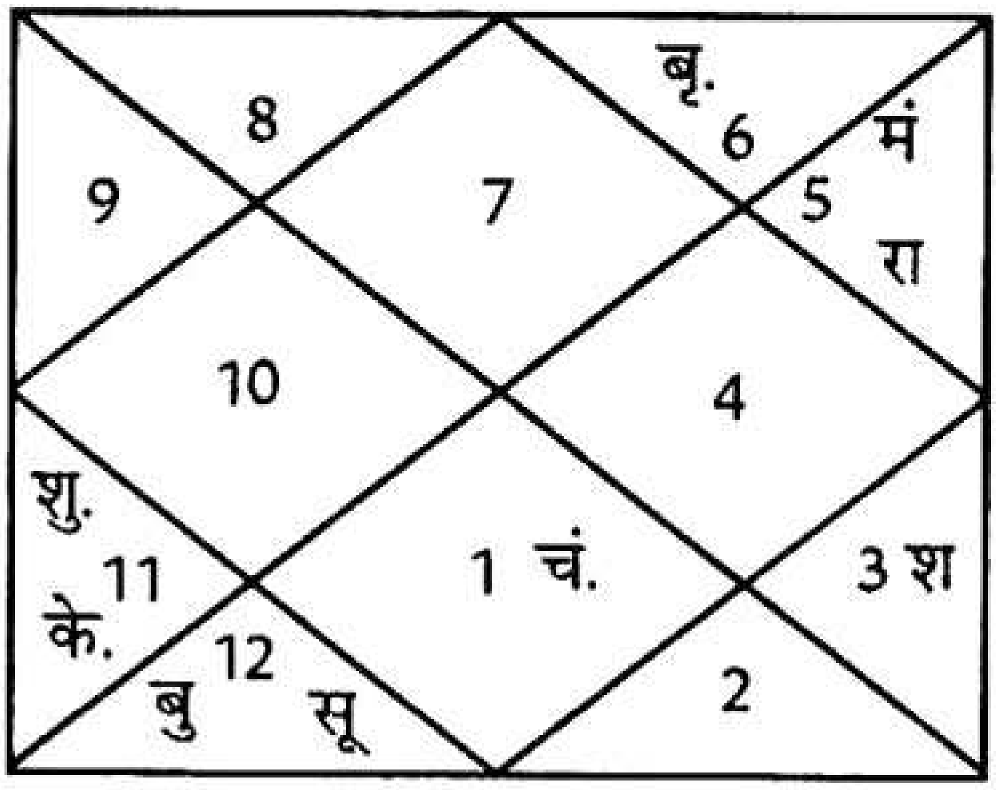
1. अभी आपने विस्तृत रूप से विभिन्न ग्रहों की महादशा का फलादेश समझ लिया है। ग्रह जो फल अपनी महादशा में करता है वही फल वह अपनी अन्तर्दशा में भी करता है। हाँ, इतना अवश्य है कि महादशानाथ के बदलने से तथा स्वयं ग्रह की महादशानाथ से भाव स्थिति बदलने के कारण अन्तर्दशा

फल में बदलाव आ जाता है। इसलिए आवश्यक है कि हम समझ लें कि यह अन्तर कब-कब और किसी प्रकार पड़ता है?

2. मौलिक नियम यह है कि जो ग्रह लग्न का अर्थात् लग्नेश का मित्र होगा, वह शुभ फल करेगा और जो उसका शत्रु होगा वह अशुभ फल करेगा। इसलिए यदि आप किसी ग्रह की अन्तर्दशा का फल ज्ञात करना चाहते हैं तो सबसे पहले यह निश्चय कीजिए कि विचाराधीन भुक्तिनाथ अथवा अन्तर्दशानाथ (ये दोनों शब्द पर्यायवाची हैं) लग्नेश का मित्र है, शत्रु है अथवा सम है। जैसा इसका सम्बन्ध होगा उसके अनुसार ही शुभ, अशुभ अथवा सम फल कहा जाएगा।
3. भुक्तिनाथ फल न केवल इस बात पर निर्भर करता है कि वह लग्नेश का मित्र है अथवा शत्रु, बल्कि इस बात पर भी कि वह लग्न तथा लग्नेश से मित्र स्थानों में स्थित है अथवा शत्रु स्थानों में। यदि मित्र स्थानों में है तो भुक्तिनाथ शुभ फल करेगा और यदि शत्रु स्थानों में है तो अशुभ।
4. एक और बात, जब हम कहते हैं कि भुक्तिनाथ शुभ करेगा तो हमारा तात्पर्य केवल इतना होता है कि वह उस भाव का शुभ फल करेगा जिसका कि वह स्वामी है और यदि वह भुक्तिनाथ दो घरों का स्वामी है तो उस भाव का फल विशेष होगा जिसमें कि उसकी मूल त्रिकोण राशि स्थित है। अत: जब कोई ग्रह लग्न या लग्नेश का मित्र होकर और लग्न या लग्नेश से शुभ स्थानों में स्थित हो तो वह जिस भाव का स्वामी है उस भाव से सम्बन्धित शुभ फल करेगा।
5. इतना ही नहीं, भुक्तिनाथ का दशानाथ से शुभ अशुभ सम्बन्धानुसार भी अन्तर्दशा फल होता है। यदि भुक्तिनाथ का दशानाथ मित्र है तो वह भुक्तिनाथ अपनी भुक्ति में उस भाव का शुभ फल प्रदान करेगा जिसका कि वह स्वामी है।
6. यहाँ भी यदि भुक्तिनाथ मित्र दशानाथ से शुभ स्थानों में पड़ा है तो और भी अधिक शुभ फल करेगा। किसके लिए? उसी भाव के कारकत्वों के लिए जिसका कि वह स्वामी है।
7. इतना ही नहीं, यदि भुक्तिनाथ स्वयं की जिस राशि अथवा भाव का फल कर रहा है उससे भी शुभ स्थान पर स्थित हो तो और भी अधिक शुभ फल उस राशि अथवा भाव सम्बन्धित करेगा।

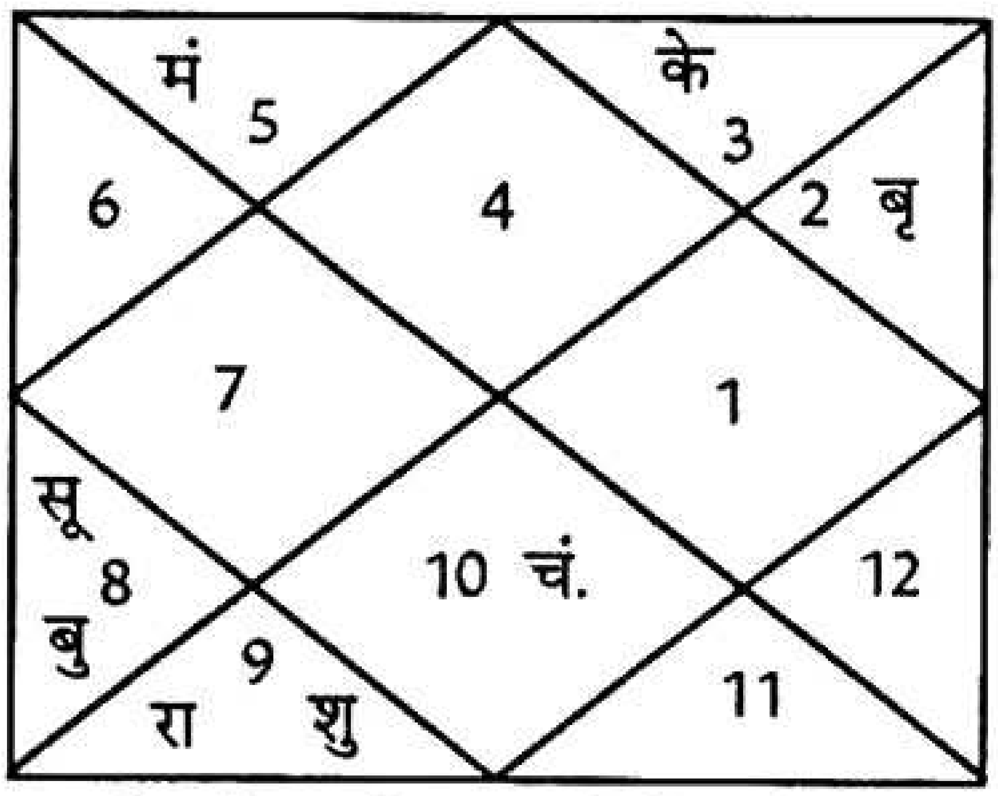
8. जन्म कुण्डली के लग्न से 3, 6, 8 व 12वें भाव; दशानाथ से 3, 6, 8 व 12वें भाव तथा ग्रह की स्वयं की राशि से 3, 6, 8 या 12वें भाव अशुभ स्थितियाँ हैं। जितना अधिक अन्तर्दशानाथ अशुभ होगा उतना ही उसका अन्तर्दशा फल भी अशुभ होगा।
9. तो आपने समझा कि कई विचार भुक्तिनाथ की शुभता को बढ़ाने वाले हैं, अर्थात्—
   (क) लग्न लग्नेश का मित्र होना,
   (ख) लग्नेश से शुभ स्थान में बैठना,
   (ग) लग्न से शुभ स्थान में बैठना,
   (घ) दशानाथ का मित्र होना,
   (ङ) दशानाथ से शुभ स्थानों में बैठना,
   (च) स्वयं की राशियों से शुभ स्थानों में बैठना।
10. इसके विपरीत यदि कोई अन्तर्दशानाथ ग्रह अशुभ फलकारी है तो वह भी निम्न प्रकार से अपने उस भाव के लिए, जिसका कि वह स्वामी है, अशुभ सिद्ध हो सकता है।
    (क) लग्न का शत्रु होना,
    (ख) लग्नेश से अशुभ स्थान में बैठना,
    (ग) लग्न से अशुभ स्थान में बैठना,
    (घ) दशानाथ का शत्रु होना,
    (ङ) दशानाथ से अशुभ स्थानों में बैठना,
    (च) स्वयं के स्वामित्व वाले भावों से अशुभ स्थानों में बैठना।
11. उपरोक्त छः प्रकार की शुभता और अशुभता का उल्लेख इसलिए किया गया है कि हम इस बात को समझ जाएं कि यदि कोई ग्रह अपने आधिपत्य से बहुत शुभ हो तो भी वह बहुत बुरा फल दे सकता है। यह सत्य है। इसके विपरीत यदि कोई आधिपत्य से अशुभ हो और उपरोक्त कारणों से उस अशुभ भाव का नाश करे तो बहुत शुभ सिद्ध हो सकता है।
12. विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिए हम दो उदाहरण ऐतिहासिक महत्त्व के विख्यात व्यक्तियों के लेंगे। एक निज़ाम ऑफ हैदाराबाद का कि किस प्रकार योगकारक ग्रहों ने बुरा फल दिया और दूसरा श्रीमती गांधी का कि किस प्रकार सबसे बुरे ग्रह ने बहुत अच्छा फल उपरोक्त कारणों से दिया।

13. निजाम हैदराबाद का जन्म 6 अप्रैल, 1886 को सायं 6 बजकर 46 मिनट पर स्थानीय मध्य समयानुसार अक्षांश 17/30 (उ.) तथा रेखांश 17/30 (पू.) पर हुआ। जन्म समय विंशोत्तरी पद्धति के अनुसार शुक्र के वर्षादि 13-5-3 शेष थे। हैदराबाद पुलिस एक्शन (Police Action) के समय निज़ाम को गुरु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी। निज़ाम की दी गई जन्मकुण्डली से आप देखेंगे कि अन्तर्दशानाथ शुक्र लग्न का स्वामी है और



योगकारक होने के नाते इसको चाहिए था कि निज़ाम की जीत करा देता। परन्तु उसकी हार हुई। देखिए, शुक्र दशानाथ गुरु का शत्रु है और गुरु से अनिष्ट स्थान अर्थात् छठे बैठा है और मंगल तथा राहु से पीड़ित भी है। ऐसी स्थिति में शुक्र ने बुरा फल दिया। किसके लिए ? लग्न के लिए जहाँ कि शुक्र की मूल त्रिकोण राशि तुला स्थिति है। लग्न के लिए बुरे फल का तात्पर्य है पराजय, हानि और राज्य से पदच्युत हो जाना।

14. अब आइए, दिवंगत प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की जन्मकुण्डली को देखें। जन्म 19-11-1917 जन्म समय विंशोत्तरी दशा में सूर्य के शेष वर्षादि 1-11-20, 52 वर्ष 11 मास 20 दिन की आयु से अर्थात् 9-11-1970 से शनि की महादशा में का ही अन्तर 12-11-73 तक रहा। शनि की भुक्ति ने क्यों उतना अच्छा फल दिया कि इन्दिरा जी की बहुत भारी बहुमत से जीत हुई ? बंगला देश बना और उन्हें भारत रत्न मिला। देखिए, शनि नैसर्गिक रूप से बहुत अशुभ ग्रह है। दूसरे, यह सबसे पापी घर अर्थात् आठवें भाव



का स्वामी है। तीसरे, यह अष्टम घर से छठे अर्थात् लग्न में है। चौथे, शनि शत्रु राशि में स्थित है। ये चार कारण ही इस बात के लिए पर्याप्त हैं कि शनि

अष्टम भाव के लिए अशुभ फल करे। अष्टम भाव पहले ही मंगल तथा केतु द्वारा दृष्ट है और इस पर कोई शुभ प्रभाव नहीं है। अष्टम भाव जिसमें कि शनि की मूल त्रिकोण राशि कुम्भ पड़ती है बुरी तरह पिटा है। इसका अर्थ यह है हुआ कि अष्टम भाव जोकि पराजय का स्थान है उसने उल्टा फल अर्थात् सर्वत्र विजय दी और अष्टम जिसका अर्थ निर्धनता है उसने राज्य दिया। इस प्रकार कई बार पापी ग्रह भी शुभ फल करते हैं।

15. तो इस प्रकार हमने देखा कि ग्रहों का फल न केवल उनकी केन्द्र स्थिति अथवा मित्र राशि में स्थिति आदि पर ही निर्भर है। बल्कि इस पर भी कि उनका लग्न, लग्नेश तथा दशानाथ से किस प्रकार का सम्बन्ध है और स्थिति कैसी है?

16. इस प्रकार यदि आप उपरोक्त विधि के अनुसार दशा भुक्ति का फलादेश उत्तम प्रकार से कह सकेंगे अपेक्षाकृत इसके कि आप पुस्तक से पढ़ लें कि गुरु महादशा में शुक्र का क्या फल लिखा है? अन्तर्दशा ग्रहों के फलादेश बदलने के अनेक कारण आप समझ चुके हैं। सामान्यतया पुस्तकों में दशान्तर्दशा फल ग्रहों के नैसर्गिक कारकत्व व उनकी मित्रतादि के अनुसार लिखा होता है। अतः सटीक नहीं बैठता, यदि उपरोक्त प्रकार से तारतम्यानुसार कहा जाएगा तो ज्योतिषी व जातक दोनों का अधिक लाभ होगा।

अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर दशा

17. ग्रहों की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर दशा का फलादेश प्रत्येक ग्रह को लेकर लिखना न तो इस गोचर सम्बन्धित पुस्तक में सम्भव है और न ही उचित। प्रत्यन्तर दशा के फल कहने के नियम भी वही है जोकि दशान्तर्दशा फल कहने के हैं। यहाँ भी यही देखना पड़ता है कि जो फल दशानाथ तथा भुक्तिनाथ मिलकर दे रहे हैं, प्रत्यन्तर दशाफल उसका अनुमोदन करता है अथवा उसके विरोध में जाता है। यदि अनुमोदन करता है तो प्रत्यन्तर में उसी भुक्तिनाथ के फल को कहना चाहिये और ज्यादा पक्के रूप में कहना चाहिये अन्यथा उस फल में कमी कहनी चाहिये।

7

गोचर और अष्टक वर्ग

अष्टक वर्ग का स्वरूप, सूर्यादि ग्रहों का अष्टम वर्ग स्पष्ट करने की विधि, त्रिकोण शोधन, एकाधिपत्य शोधन, अष्टक वर्ग में कक्षाओं का महत्त्व और उनका शुभ फल।

1. अष्टक वर्ग का अर्थ है आठ का समूह अथवा ज्योतिष विषयक आठ ग्रह आदि से बना हुआ समूह।
2. अष्टक वर्ग में निम्नलिखित आठ ग्रह आदि का समावेश है—सूर्य आदि सात ग्रह (राहु और केतु को छोड़कर) और आठवां लग्न।
3. अष्टक वर्ग का निर्माण कैसे होता है, और उसका प्रयोजन क्या है? इस विषय को समझते हैं। मनुष्य की जन्मकुण्डली में प्रत्येक ग्रह कहीं-न-कहीं स्थित होता है। उस स्थान में स्थिति के कारण उस ग्रह के लिये जन्मकुण्डली के कौन-कौन से अन्य भाव शुभ फल को देने वाले हो जाते हैं उनका निर्णय ही अष्टक वर्ग का प्रयोजन है।
4. उदाहरणार्थ—यदि हम जन्मकुण्डली से सूर्य की, स्थिति को लें तो सूर्य के लिए उसी के स्थान से गिनकर 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11 स्थान शुभ हैं। अन्य ग्रह भी जन्मकुण्डली में अपनी स्थिति वाले स्थान से कुछ एक स्थानों को सूर्य के लिए शुभ कर देते हैं। जैसे चन्द्र से सूर्य 3, 6, 10 अथवा 11 में से किसी भी स्थान पर हो तो उस स्थान में उसका फल शुभ रहता है। इसी प्रकार मंगल से सूर्य 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 अथवा 11 भावों में से किसी भी भाव में हो तो शुभ फल करता है। इस प्रकार शेष ग्रहो और लग्न से भी कुछ विशिष्ट स्थान हैं जहाँ कि सूर्य को बल मिलता है। इस प्रकार सूर्य को जन्मकुण्डली के विविध भावों में बल देने वाले आठ अंग हुए। अर्थात् सूर्य स्वयं से शेष ग्रह तथा लग्न से। इसी प्रकार चन्द्र आदि अन्य ग्रहों

को भी स्वयं अपने से, लग्न से तथा अन्य ग्रहों से कुछ विशिष्ट स्थानों में बल मिलता है जिनका निर्णय कर लिया जाता है और इस प्रकार पता चल जाता है कि किस भाव में से गुजरते हुए कौन ग्रह कितने बल से उस भाव में से गुजरेगा?

5. प्रत्येक ग्रह की गोचर में अपनी शुभता किस-किसी भाव में कितनी है? इसी को ज्योतिष की परिभाषा में "भिन्नाष्टक वर्ग" कहते हैं। "भिन्न" शब्द से तात्पर्य "अकेला" अथवा "निज" का है। विभिन्न ग्रह मिलकर किसी एक भाव को जो शुभता प्रदान करते हैं उसको 'समुदाय' अष्टक वर्ग कहते हैं।

6. सूर्य का अष्टक वर्ग अर्थात् सूर्य की शुभता के स्थान

(क) अपने से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11 स्थान में	= 8
(ख) चन्द्र से 3, 6, 10, 11	= 4
(ग) मंगल से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11	= 8
(घ) बुध से 3, 5, 6, 9, 10, 11, 12	= 7
(ङ) गुरु से 5, 6, 9, 11	= 4
(च) शुक्र से 6, 7, 12	= 3
(छ) शनि से 11, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11	= 8
(ज) लग्न से 3, 4, 6, 10, 11, 12	= 6
योग	48

7. चन्द्र का अष्टक वर्ग अर्थात् चन्द्र की शुभता के स्थान

(क) अपने से 1, 3, 6, 7, 10, 11	= 6
(ख) सूर्य से 3, 6, 7, 8, 10, 11	= 6
(ग) मंगल से 2, 3, 5, 6, 9, 10, 11	= 7
(घ) बुध से 11, 3, 4, 5, 7, 8, 10, 11	= 8
(ङ) गुरु से 1, 4, 7, 8, 10, 11, 12	= 7
(च) शुक्र से 3, 4, 5, 7, 9, 10, 11	= 7
(छ) शनि से 3, 5, 6, 11	= 4
(ज) लग्न से 3, 6, 10, 11	= 4
योग	49

8. मंगल का अष्टक वर्ग अर्थात् मंगल की शुभता के स्थान

(क) अपने से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 11	= 7
(ख) सूर्य से 3, 5, 6, 10, 11	= 5
(ग) चन्द्र से 3, 6, 11	= 3
(घ) बुध से 3, 5, 6, 11	= 4
(ङ) गुरु से 6, 8, 11, 12	= 4
(च) शुक्र से 6, 8, 11, 12	= 4
(छ) शनि से 1, 4, 7, 8, 9, 10, 11	= 7
(ज) लग्न से 1, 3, 6, 10, 11	= 5
योग	39

9. बुध का अष्टक वर्ग अर्थात् बुध की शुभता के स्थान

(क) अपने से 2, 3, 5, 6, 9, 10, 11, 12	= 8
(ख) सूर्य से 5, 6, 9, 11, 12	= 5
(ग) चन्द्र से 2, 4, 6, 8, 10, 11	= 6
(घ) मंगल से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11	= 8
(ङ) गुरु से 6, 8, 11, 12	= 4
(च) शुक्र से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11	= 8
(छ) शनि से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11	= 8
(ज) लग्न से 1, 3, 4, 6, 8, 11, 12	= 7
योग	54

10. गुरु का अष्टक वर्ग अर्थात् गुरु की शुभता के स्थान

(क) अपने से 1, 2, 3, 4, 7, 8, 10, 11	= 8
(ख) सूर्य से 1, 2, 3, 4, 7, 8, 9, 10, 11	= 9
(ग) चन्द्र से 2, 5, 7, 9, 11	= 5
(घ) मंगल से 1, 2, 4, 7, 8, 10, 11	= 7
(ङ) बुध से 1, 2, 3, 5, 6, 9, 10, 11	= 8
(च) शुक्र से 2, 5, 6, 9, 10	= 6
(छ) शनि से 3, 5, 6, 12	= 4
(ज) लग्न से 1, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 10, 11	= 9
योग	56

11. शुक्र का अष्टक वर्ग अर्थात् गुरु की शुभता के स्थान

(क) अपने से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11	= 9
(ख) सूर्य से 8, 11, 12	= 3
(ग) चन्द्र से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12	= 9
(घ) मंगल से 3, 5, 6, 9, 11, 12	= 6
(ङ) बुध से 3, 5, 6, 9, 11	= 5
(च) गुरु से 5, 8, 9, 10, 11	= 5
(छ) शनि से 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11	= 7
(ज) लग्न से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11	= 8
योग	52

12. शनि का अष्टक वर्ग अर्थात् गुरु की शुभता के स्थान

(क) अपने से 3, 5, 6 , 11	= 4
(ख) सूर्य से 11, 2, 4, 7, 8, 10, 11	= 7
(ग) चन्द्र से 3, 6, 11	= 3
(घ) मंगल से 3, 5, 8, 10, 11, 12	= 6
(ङ) बुध से 6, 8, 9, 10, 11, 12	= 6
(च) गुरु से 5, 6, 11, 12	= 4
(छ) शुक्र से 6, 11, 12	= 3
(ज) लग्न से 11, 3, 4, 6, 10, 11	= 6
योग	39

13. सारावली, बृहत्पाराशर, बृहत्जातक आदि सभी पुरातन एवं मौलिक गन्थों में 'अष्टक वर्ग' का कुछ-न-कुछ उल्लेख मिलता है। 'अष्टक वर्ग' के सम्बन्ध में मान्यता है कि इसका प्रयोग 'आयुर्दाय' (Longevity), समृद्धि लाभ-हानि, गोचर आदि फल कहने में किया जाना चाहिये। गोचर फल कहने के लिए हम ग्रहों की शुभता के भावों को निश्चित करते हैं। ग्रह जिस-जिस भाव में शुभता दें, उसमें शून्य का (0) लगा देने की प्रथा है। अन्य स्थानों में अशुभता सूचक चिह्न रेखा (–) लगा दिया जाता है। यदि केवल शुभता दिखाना ही अभीष्ट हो तो केवल शून्य चिह्न ही दिखाये जाते हैं।

14. वराहमिहिराचार्य के 'बृहत् जातक' अध्याय 9 के श्लोक 9 में कहा है—

''इति निगदितमिष्टं नेष्टमन्यद्विशेषादधिक

फल विपाकं जन्म मात्तत्र दधः

उपचय गृहमित्र स्वोच्चगै व्रष्टमिष्टंत्वपचय

गृहं नीचारातिगै नेष्ट संपत्''

अर्थ—इस प्रकार हमने ग्रहों के अष्टक वर्ग में इष्ट (अच्छे) और अनष्टि (बुरे) स्थान गिनाए, जन्मकुण्डली के ग्रहों की स्थिति से जो फल ज्योतिष शास्त्र के अन्य नियमों के अनुसार निकलता है उसमें अष्टक वर्ग द्वारा तारतम्य व सूक्षमता आ जाती है।

15. ग्रह अष्टक वर्ग में भी शुभ हों और कुण्डली में उपचय स्थान में (तीसरे, छठे, दसवें तथा ग्यारहवें स्थान को 'उपचय' स्थान कहते हैं), निज राशि में या मित्र राशि में या अपनी उच्च राशि में स्थित हों तो बहुत शुभ फल देते हैं और यदि अनुपचय स्थान में नीच अथवा शत्रु राशि में हों और गोचर में भी अशुभ हों तो अधिक अशुभ फल देते हैं। कहने का आशय यह है कि अष्टक वर्ग से ग्रह का उतार–चढ़ाव देखा जाता है।
16. उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि लग्न को मिलाकर कुल आठ अंग हैं जो सूर्य आदि सात ग्रहों को शुभता देते हैं। अत: किसी भी भाव में आठ से अधिक 'बिन्दु' अथवा शुभ अंक नहीं है। कोई भी शुभता प्रदत्त बिन्दु किसी एक आध भाव में न भी पड़े यह सम्भव है।
17. किसी राशि में आठ बिन्दुओं में से चार बिन्दु प्राप्त हों तो ग्रह या गोचर फल मिश्रित अर्थात् मध्यम होता है। चार से जितने बिन्दु कम मिलेंगे फल उतना ही अनिष्टकारी होता चला जायेगा।

✪ यदि किसी भाव को कोई बिन्दु न मिले तो उस भाव से ग्रह गोचर फल अत्यन्त अनिष्टकारी होता है। इधर 4 से ऊपर 5 बिन्दु मिलें तो फल अच्छा होता है। 6 बिन्दु मिलें तो बहुत अच्छा, 7 बिन्दु मिलें तो उत्तम फल और 8 के 8 बिन्दु मिल जायें तो सर्वोत्तम फल कहना चाहिये।

18. अष्टक वर्ग के फल के सम्बन्ध में 'जातक तत्त्व के प्रणेता' लिखते हैं—

''शरादि बिन्दु स्थितराशि यातः

स्वकीय वर्गे शुभदस्तु नित्यम्

अतोऽन्यथा चेदफलप्रदाता

गोचरतः शून्य फले प्रमादी''

अर्थात् — अष्टक वर्ग की पद्धति से जन्मकुण्डली के जिस भाव में 5 अथवा उससे अधिक बिन्दु मिलते हों उस भाव से गोचर वश जाता हुआ ग्रह शुभ फल देता है। 5 बिन्दुओं से कम बिन्दु प्राप्त राशि में गोचर ग्रह में दुष्ट फल देता है। शून्य बिन्दु वाली राशि से जाता हुआ गोचर ग्रह जातक को 'प्रमादी' (जिसका कोई भी कार्य करने में जी न लगे) अर्थात् फलहीन बना देता है।

19. 'जातक पारिजात' में अष्टक वर्ग को सबसे अधिक महत्त्व दिया है। यहाँ अध्याय 10 श्लोक 54, 55 में लिखा है—

''ये तुंगराशिस्वसुहृद्गृहस्था ये कोण केन्द्रोपचय स्थिताश्च ये सौम्य वर्गादि बलोपयाता तेनाशदा लाघव बिन्दुकाश्चेत् ये चावसानरिपुरन्ध्र तुरंग भाजां ये नीच पापरिपु खेचरवर्गभुक्ताः ये मान्दिशशि पतिता सह बोधकाश्च ते सर्वे मुख्यफलदास्तु अधिक बिन्दुकाश्तेचत्''

अर्थात् — जो ग्रह उच्च या मित्र राशि में अथवा केन्द्र (1, 4, 7, 10) कोण (5, 9) उपचय (3, 6, 10, 11) में स्थित है, जो शुभ वर्ग में है, बलवान् है, तो भी यदि अष्टक वर्ग में कोई बिन्दु नहीं पाता तो फल का नाश करने वाला ही होता है और यदि कोई ग्रह पापी, नीच या शत्रु ग्रह के वर्ग में हो अथवा गुलिक राशि के स्वामी के साथ हो, परन्तु अष्टक वर्ग में 5, 6, 7 अथवा 8 बिन्दु पा जाता है तो यह ग्रह उत्तम फल देता है।

20. 'सारावली' ने अष्टक वर्ग के सम्बन्ध में जो सम्मति दी है, हम समझते हैं कि वह अधिक संगत है। सारावली अध्याय 52 श्लोक 9 में लिखा है—

''इत्युक्तं शुभमन्यदेवमशुभं चारक्रमेण ग्रहाः''
शक्ताशक्त विशेषितं विदधदि प्रोत्कृष्टमेतत्फलम्।
स्वार्थी स्वोच्चसुहृद्गृहेषु सुतरां शस्तं त्वनिष्टंसमम्
नीचाराति गता ह्यनिष्ट बहुलं शस्तं न सम्यक् फलम्॥

अर्थात्—इस प्रकार गोचरवश ये ग्रह शुभ अथवा अशुभ फल करते हैं। अष्टक वर्ग द्वारा ग्रह अच्छा-बुरा अथवा सम फल देते हैं। परन्तु ग्रह उच्च राशि अथवा स्वक्षेत्र में होकर भी यदि अष्टक वर्ग में अशुभ हों अर्थात् कम बिन्दु प्राप्त करते हों, तो बुरा फल देते हैं।

✪ सूर्यादि ग्रहों को जब कम अथवा अधिक बिन्दु मिलते हैं तो उनके कारकत्व आदि गुणों का फल भी बुरा अथवा अच्छा हो जाता है। इसी फल के तारतम्य को दिखलाने के लिए सूर्य आदि ग्रहों का प्राप्त बिन्दुओं के अनुसार फल नीचे दिया जा रहा है—

सूर्य द्वारा प्राप्त बिन्दु फल

बिन्दु संख्या **फल**

21. 0 — मृत्यु अथवा महान् अपमान।
 1 — रोग तथा चिन्ता।
 2 — पाप कर्म, राज्य द्वारा विरोध व अपमान।
 3 — यात्रा में कष्ट, शारीरिक तथा मानसिक कष्ट।
 4 — आय के साथ ही व्यय, सुख-दु:ख दोनों।
 5 — लाभ, सत्संग व विद्या प्राप्ति।
 6 — भाग्य वृद्धि, कीर्ति, कार्य सफलता व वाहन प्राप्ति।
 7 — मान, शौर्य, सत्कीर्ति, कार्य सफलता व वाहन प्राप्ति।
 8 — राजातुल्य मान तथा विशेष राज्यकृपा।

चन्द्र द्वारा प्राप्त बिन्दु फल

बिन्दु संख्या **फल**

22. 0 — महा क्लेश, दु:ख, मृत्यु तथा निर्धनता।
 1 — अचानक कष्ट तथा भय।
 2 — धनहानि, पत्नी से कलह तथा मित्रों आदि से पृथकता।
 3 — जन साधारण से कलह।
 4 — उदासीन वृत्ति व सुख-दु:ख का मिश्रण।
 5 — सुख, शान्ति और धार्मिक उत्साह।
 6 — मन्त्रदीक्षा, उदार व्यक्तियों से मिलन तथा सुख के साधनों की प्राप्ति।
 7 — उत्तम खानपान व रहन-सहन, सुगन्धित द्रव्यों की प्राप्ति व उत्तम सुख सुविधा का जीवन।
 8 — हर प्रकार का सुख व लोकप्रियता तथा उत्तम कीर्ति व प्रभाव।

मंगल द्वारा प्राप्त बिन्दु फल

बिन्दु संख्या	फल
23. 0 —	आँखों में मूर्छा या कष्ट, मृत्यु।
1 —	शास्त्राघात, बुखार तथा चेचक से पीड़ा।
2 —	धन–सम्पत्ति सम्बन्धी लड़ाई।
3 —	शारीरिक क्षीणता, भ्रमण और विपदा।
4 —	सुख–दुःख की सामान्यता।
5 —	न्यायपूर्ण व्यवहार।
6 —	राज्य से बहुत मान सम्मान।
7 —	भाइयों का उत्कर्ष और उनसे लाभ।
8 —	भूमि, मकान आदि की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय।

बुध द्वारा प्राप्त बिन्दु फल

बिन्दु संख्या	फल
24. 0 —	विपुल हानि व मृत्यु।
1 —	शत्रुओं से गम्भीर कष्ट।
2 —	वात–पित्त–कफ की विषमता से रोग व दुःख।
3 —	मानसिक व्यथा।
4 —	उदासीनता।
5 —	मित्रों तथा सम्बन्धियों से प्रीति।
6 —	बुद्धि तीव्र, तथा विजय व महान प्रतिभा।
7 —	धन बाहुल्य, तीव्र बुद्धि, विद्या और यज्ञीय कार्य।
8 —	सभी प्रकार का सुख, लोकप्रियता तथा शासन प्राप्ति।

गुरु द्वारा प्राप्त बिन्दु फल

बिन्दु संख्या	फल
25. 0 —	पुत्रादि सन्तान की मृत्यु, कष्ट, धनहीनता व दुर्बद्धि।
1 —	धनहानि
2 —	राज्य प्रकोप तथा बच्चों को कष्ट।
3 —	कर्ण रोग, धन में कमी, सुख में कमी व शारीरिक कष्ट।

4 — आर्थिक स्थिति सदा एक जैसी।
5 — कार्यों में सफलता।
6 — सुख-साधनों में विशेष वृद्धि।
7 — सुख शान्ति तथा धन प्राप्ति तथा सन्तान से सुख।
8 — राज्य तथा अधिकार प्राप्ति।

शुक्र द्वारा प्राप्त बिन्दु फल

बिन्दु संख्या **फल**

26. 0 — सब ओर से दुःख तथा आपत्ति।
1 — कफजनित रोगों का भय तथा रोगिणी पत्नी।
2 — पत्नी कष्ट तथा रोग।
3 — मित्र-पड़ौसियों से वैमनस्य।
4 — मिश्रित फल।
5 — जनसम्पर्क में वृद्धि, विलास के साधनों की प्राप्ति।
6 — प्रेमिका प्राप्ति, विलासिता के साधनों की प्रचुर मात्रा में उपलब्धि।
7 — स्वर्ण तथा रत्न आदि की प्राप्ति व कला से अतीव प्रेम।
8 — सब प्रकार के भोगों की प्राप्ति, स्वादिष्ट व उत्तम खान-पान, सुन्दर वस्त्र, पौष्टिक फल व सुगन्धित पदार्थों की प्राप्ति।

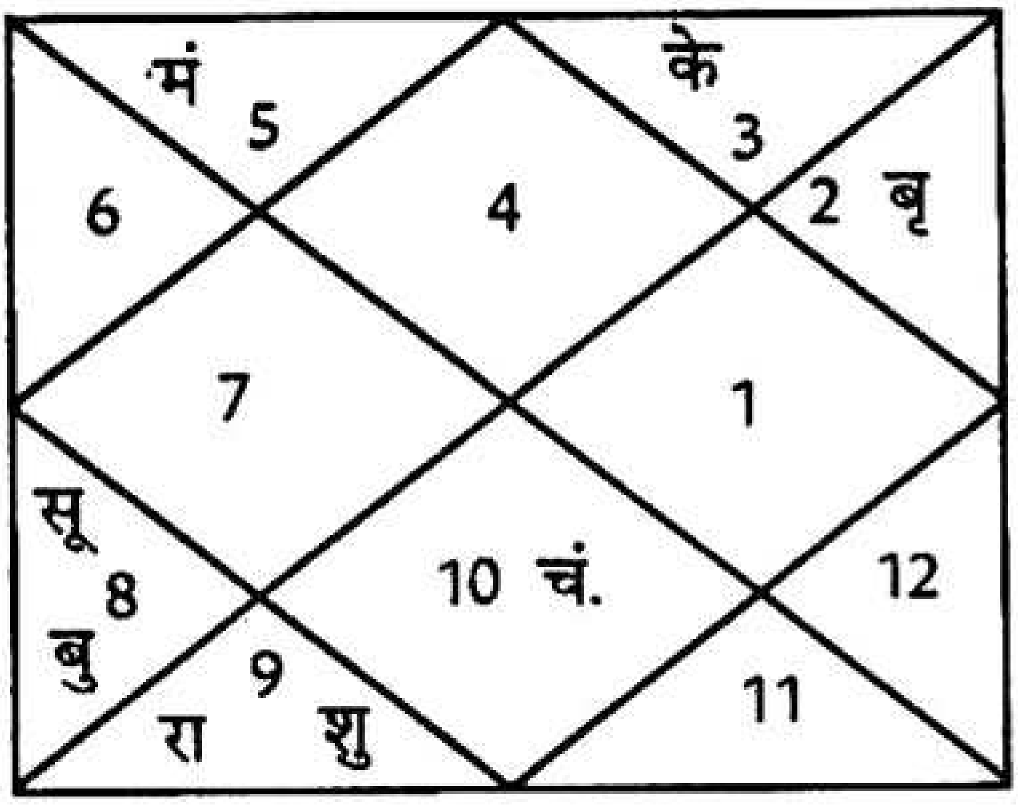
शनि द्वारा प्राप्त बिन्दु फल

बिन्दु संख्या **फल**

27. 0 — सर्वनाश अथवा मृत्यु।
1 — रोग, गन्दगी व अतीव दरिद्रता।
2 — कारागार, रोग, क्लेश व दरिद्रता।
3 — धनहानि, परिजन हानि, दुःख व स्त्री कष्ट।
4 — साधारण सुख-दुःख।
5 — धन-धान्य आदि की अच्छी प्राप्ति।
6 — निम्न वर्ग के लोगों से मान-सम्मान की प्राप्ति।
7 — दास-दासियों व राज्य की प्राप्ति।
8 — राज्य में कीर्ति तथा उच्च पद की प्राप्ति।

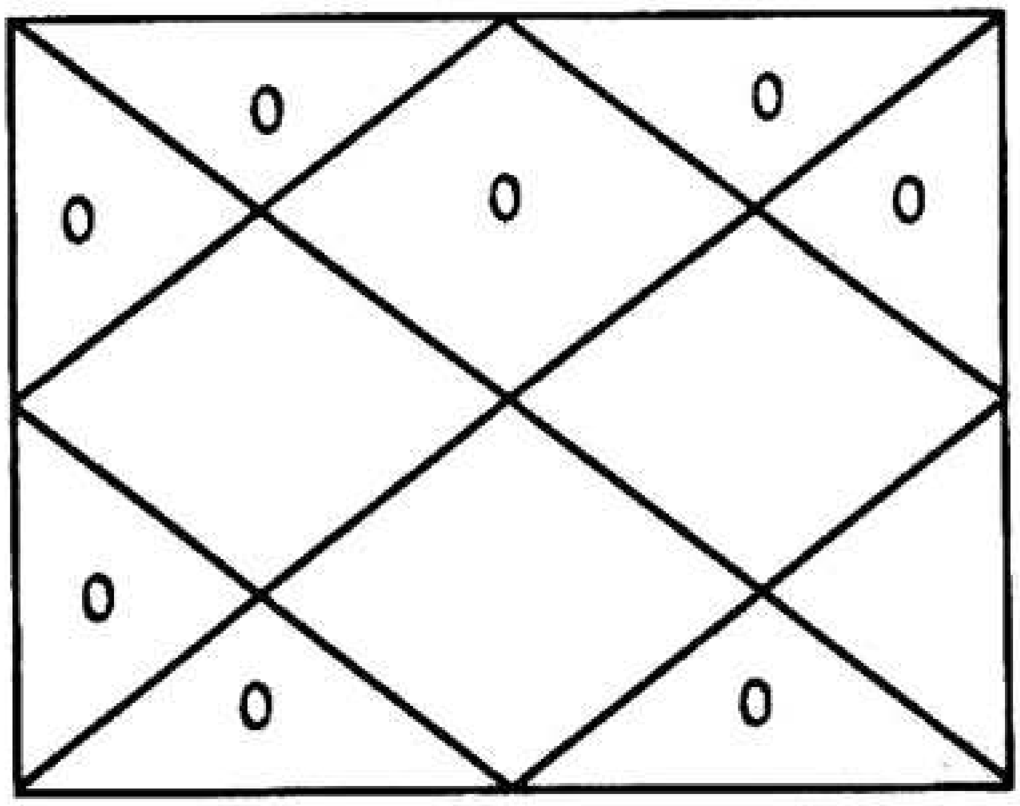
ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्ग

28. ग्रहों के अष्टक वर्ग में अर्थात् भिन्नाष्टक वर्ग में किस प्रकार कितने बिन्दु (शुभ फल सूचक चिह्न) प्राप्त होते हैं इस बात का क्रियात्मक उदाहरण हेतु श्रीमती इन्दिरा गांधी की जन्मकुण्डली प्रस्तुत है। जोकि भिन्नाष्टक वर्ग का आधार रहेगी।



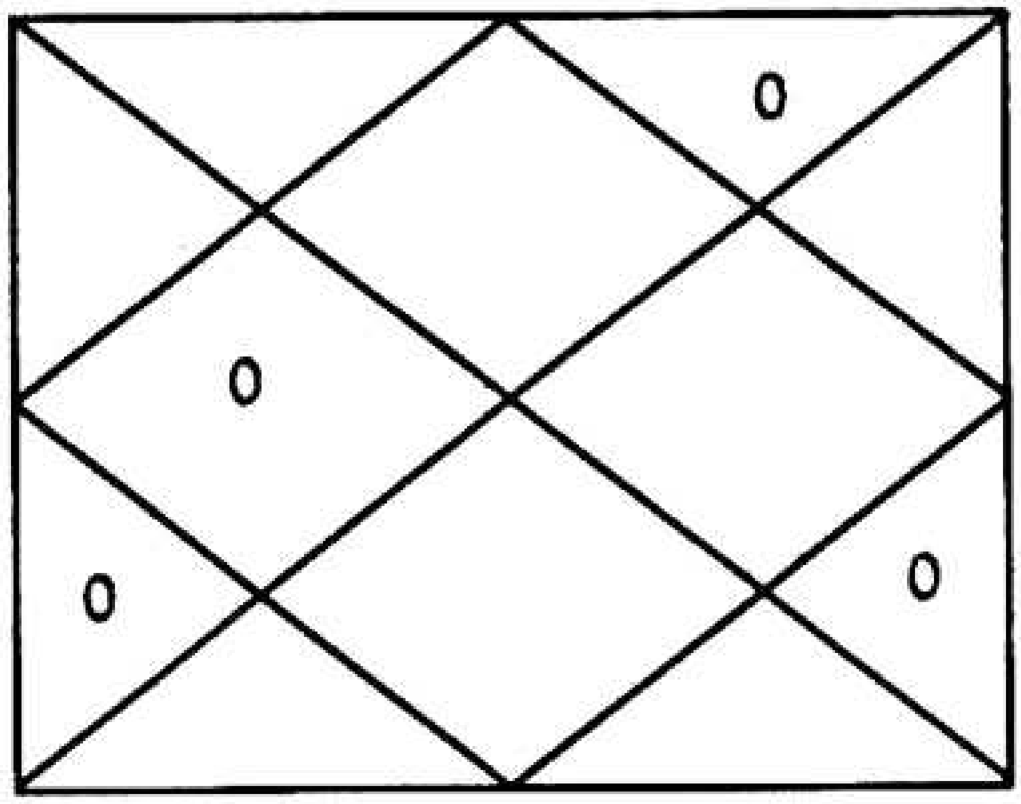
सूर्य का सूर्य द्वारा प्रदत्त बिन्दु

29. गत पैरा 4 से हमको ज्ञात है कि सूर्य अपनी जन्मकालीन स्थिति से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10 तथा 11 भावों को शुभता अथवा बिन्दु प्रदान करता है। इसलिये साथ की एक कुण्डली के ढांचे में जन्मस्थ सूर्य से इन आठ स्थानों में बिन्दु चिह्न लगाएं तो ये सूर्य प्रदत्त शुभ बिन्दु हुए।



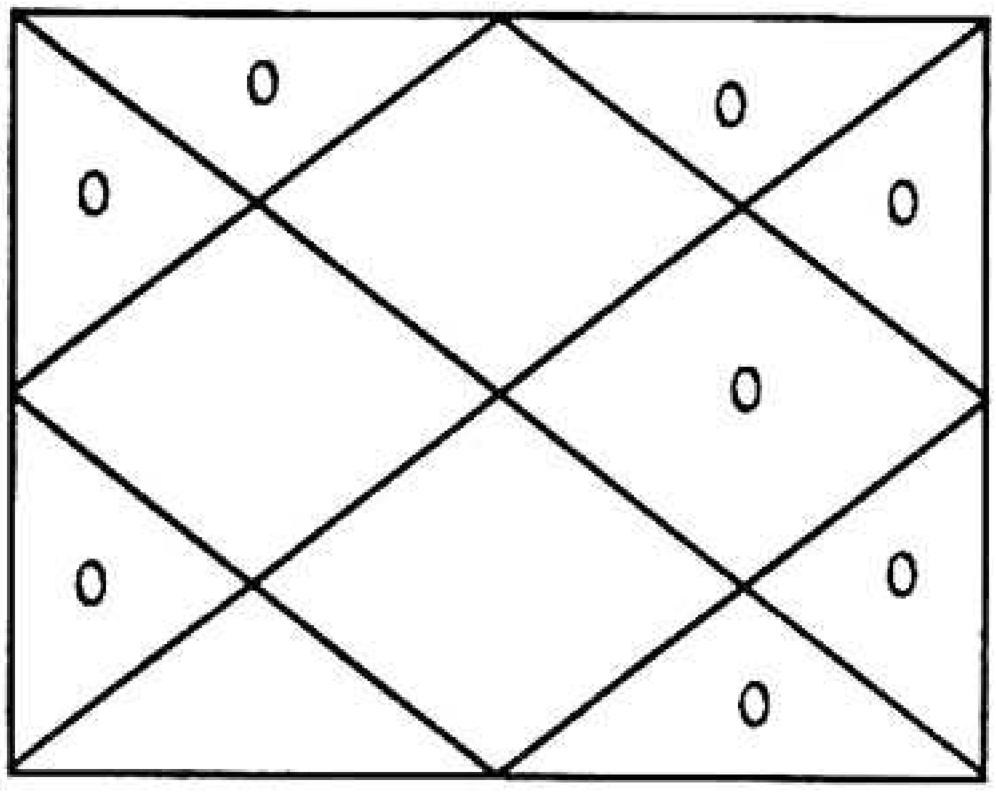
सूर्य को चन्द्रमा द्वारा प्रदत्त बिन्दु

30. इसी प्रकार उसी पैरा 6 से हमको ज्ञात है कि सूर्य को चन्द्रमा भी शुभ स्थान देता है और वे स्थान हैं—जन्मस्थ चन्द्रमा से 3, 6, 10, 11 स्थानों पर। इसलिये एक और कुण्डली के ढांचे में चन्द्र से इन चारों स्थानों में बिन्दु चिह्न लगाएं। इस प्रकार यह सूर्य के लिए चन्द्रमा द्वारा प्रदत्त शुभ स्थान हुए।



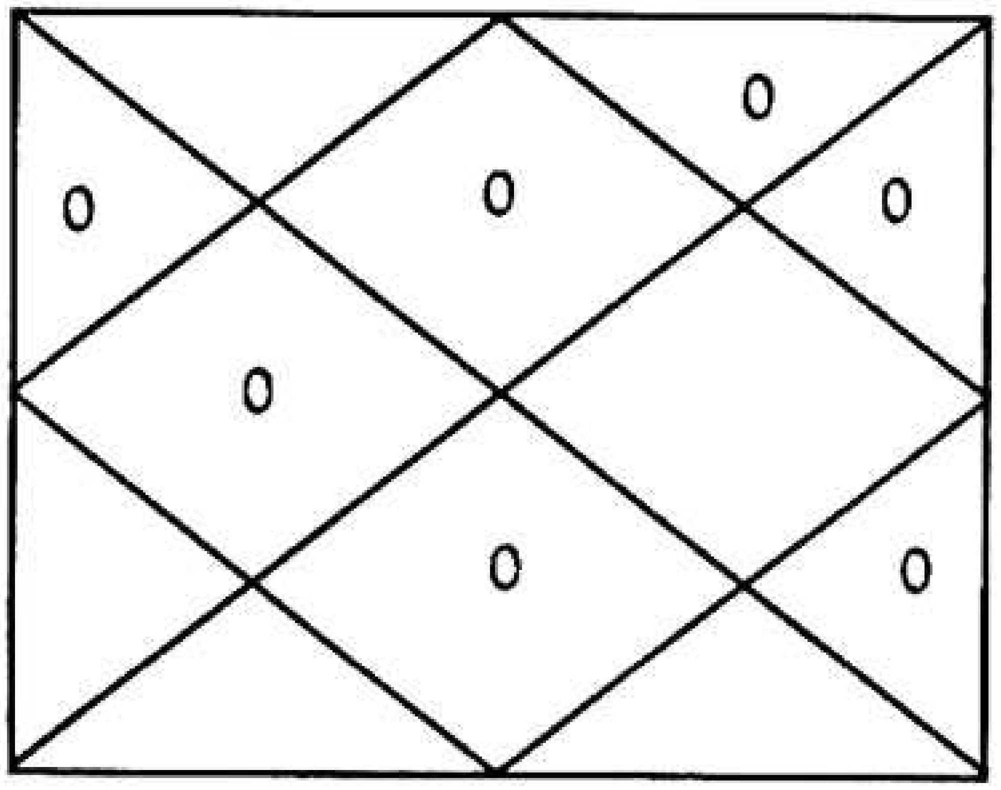
सूर्य को मंगल द्वारा प्रदत्त बिन्दु

31. इसी प्रकार पैरा 6 से देखा कि मंगल अपने जन्मस्थ स्थान 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11 स्थानों को सूर्य के लिये शुभ करता है। अत: एक ढांचे में जन्मस्थ मंगल से आठ स्थानों पर बिन्दु चिह्न लगाएं।



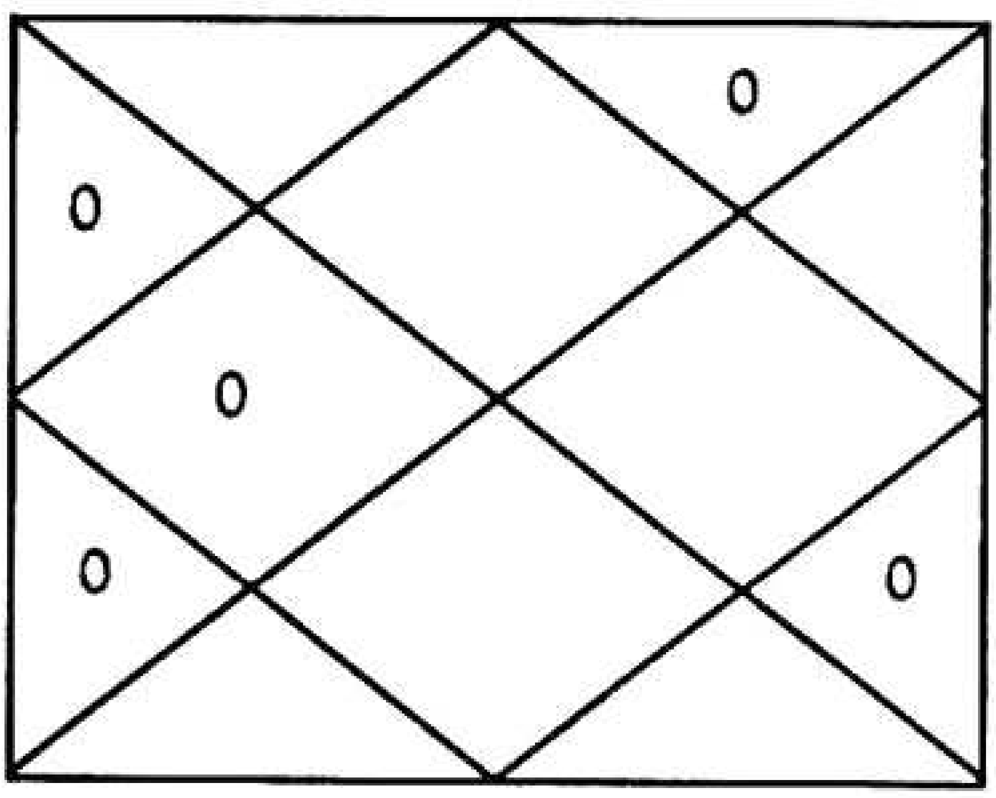
सूर्य को बुध द्वारा प्रदत्त बिन्दु

32. इसी प्रकार पैरा 6 से ज्ञात हुआ कि बुध अपने जन्मस्थ स्थान से 3, 5, 6, 9, 10, 11, 12 इन सात स्थानों को सूर्य के लिये शुभ करता है। अत: एक ढांचे में इन्दिरा जी के जन्मस्थ बुध से इन सात स्थानों पर बिन्दु चिह्न लगाएं।



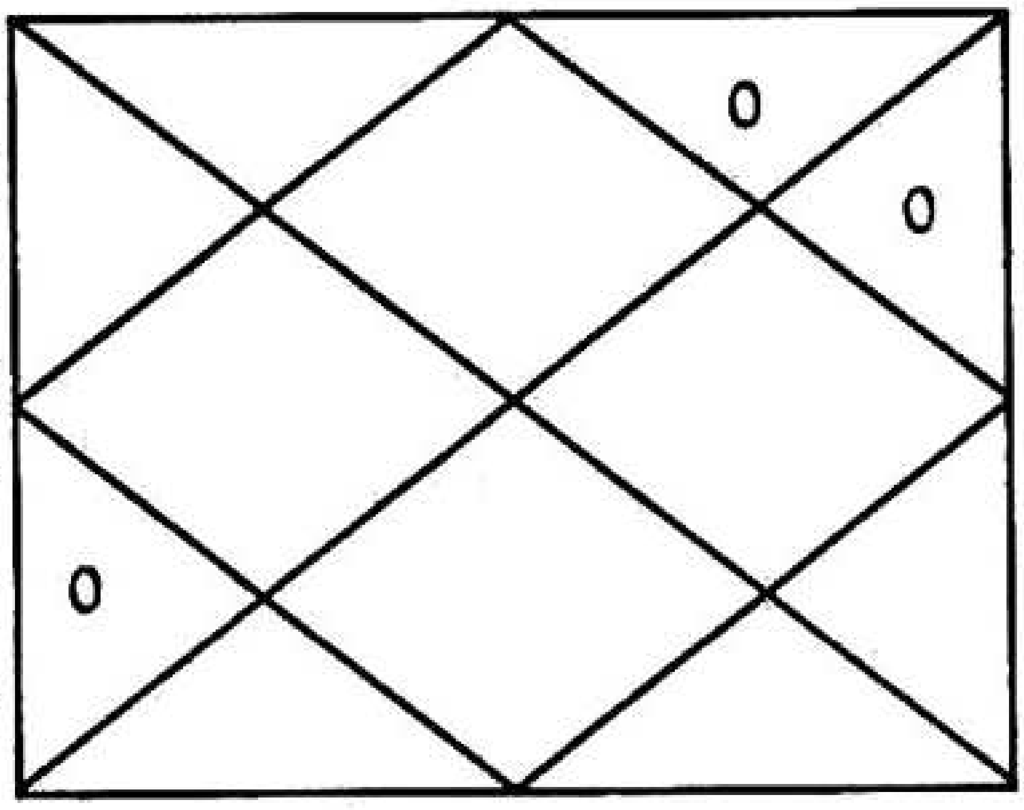
सूर्य को गुरु द्वारा प्रदत्त बिन्दु

33. इसी प्रकार पैरा 6 के अनुसार गुरु अपने जन्मस्थ भाव से 5, 6, 9, 11 भावों को सूर्य के लिये शुभ बनाता है। तो इन्दिराजी की जन्मकुण्डली में गुरु की स्थिति से गिनकर इन चार बिन्दुओं को एक ढांचे में इस प्रकार से लगाएं।



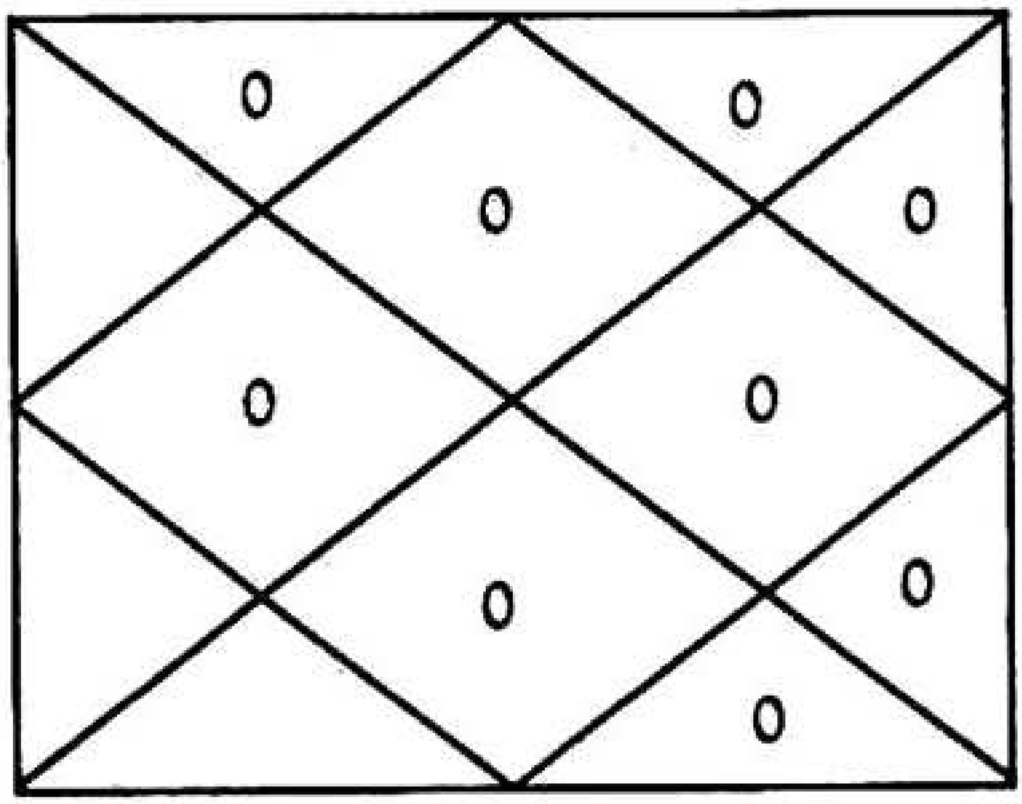
सूर्य को शुक्र द्वारा प्रदत्त बिन्दु

34. इसी प्रकार पैरा 6 के अनुसार शुक्र अपने जन्मकालीन स्थान से 6, 7, 12 स्थानों को सूर्य के लिए शुभ करता है तो एक ढांचे में इन्दिराजी के जन्मस्थ शुक्र से गिनकर इन तीन स्थानों पर एक ढांचे में बिन्दु लगाएं।



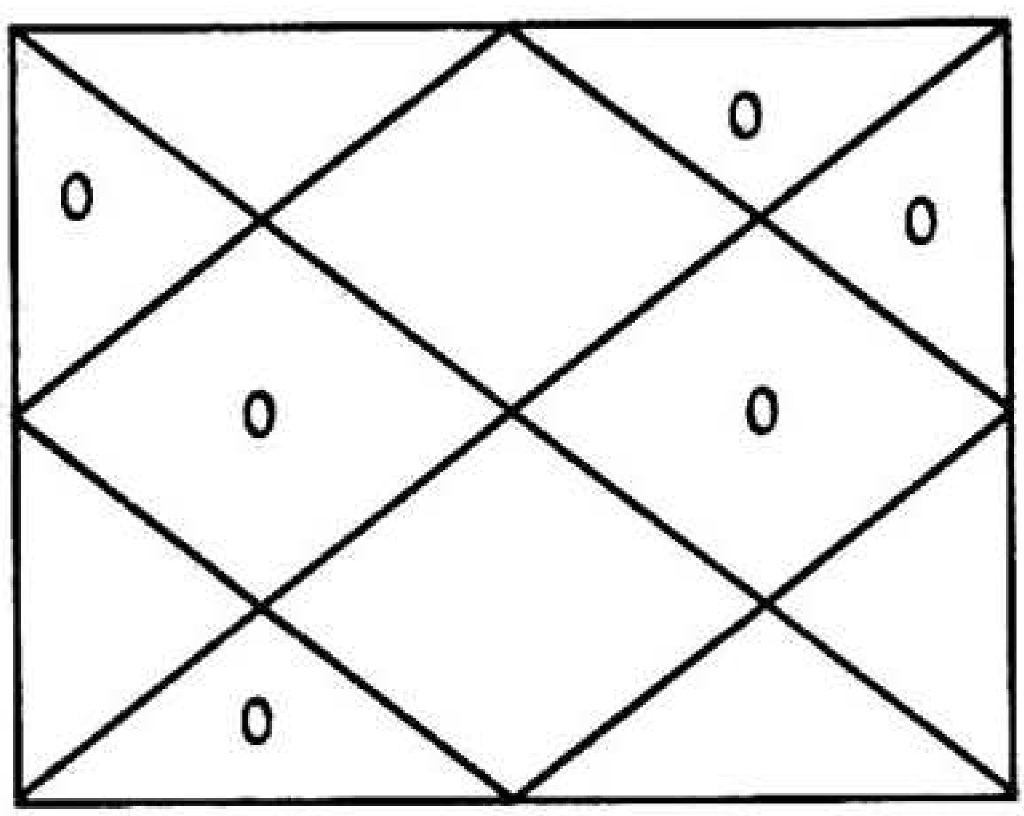
सूर्य को शनि द्वारा प्रदत्त बिन्दु

35. इसी प्रकार पैरा 6 के अनुसार शनि अपने जन्मकालीन स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11 स्थानों को सूर्य के लिए शुभ करता है तो एक ढांचे में इन्दिराजी के जन्मस्थ शनि से गिनकर इन आठ स्थानों पर बिन्दु लगाएं।

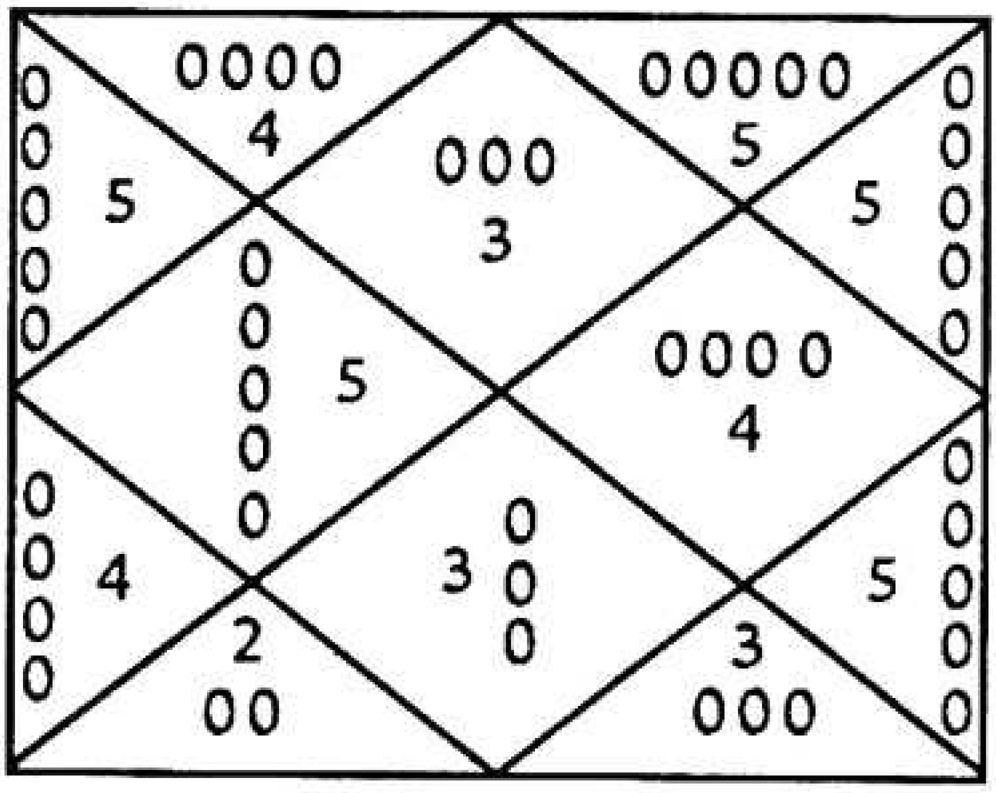


सूर्य को लग्न द्वारा प्रदत्त बिन्दु

36. इसी प्रकार पैरा 6 के अनुसार लग्न निज भाव से 3, 4, 6, 10, 11, 12 भावों को सूर्य के लिए शुभ बनाता है तो इन्दिराजी की लग्न से इन 6 स्थानों पर बिन्दु लगाएं।

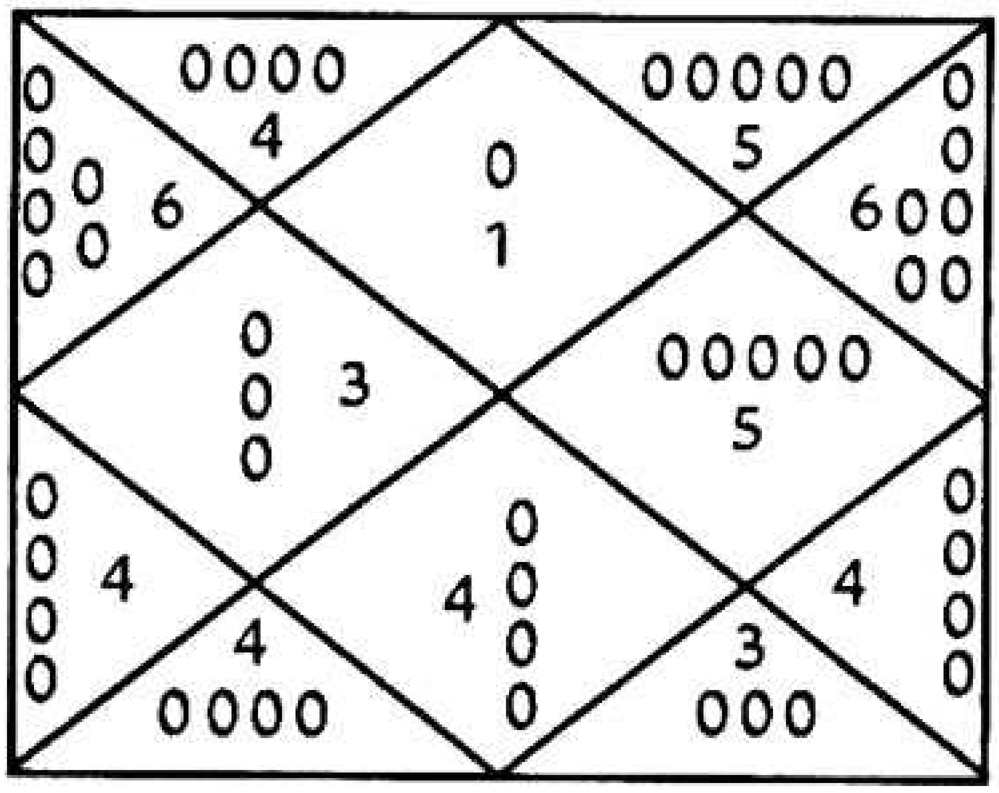


37. श्रीमती इंदिरा गांधी की जन्मकुण्डली में सात ग्रहों ने और लग्न ने मिलकर जहाँ-जहाँ सूर्य को बिन्दु दिये हैं उनको एक ही ढांचे में दिखलाने से सूर्य का 'भिन्नाष्टक वर्ग' बन जायेगा। इस को साथ में दिखलाया है।

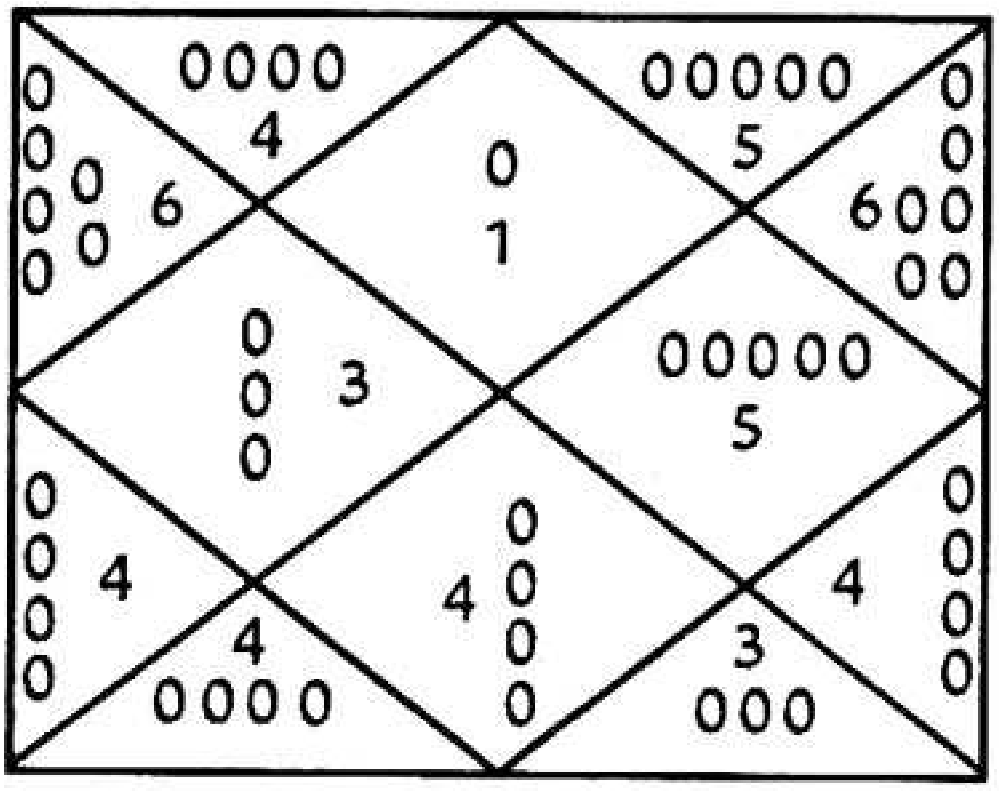


सूर्याष्टक वर्ग बिन्दु योग 48

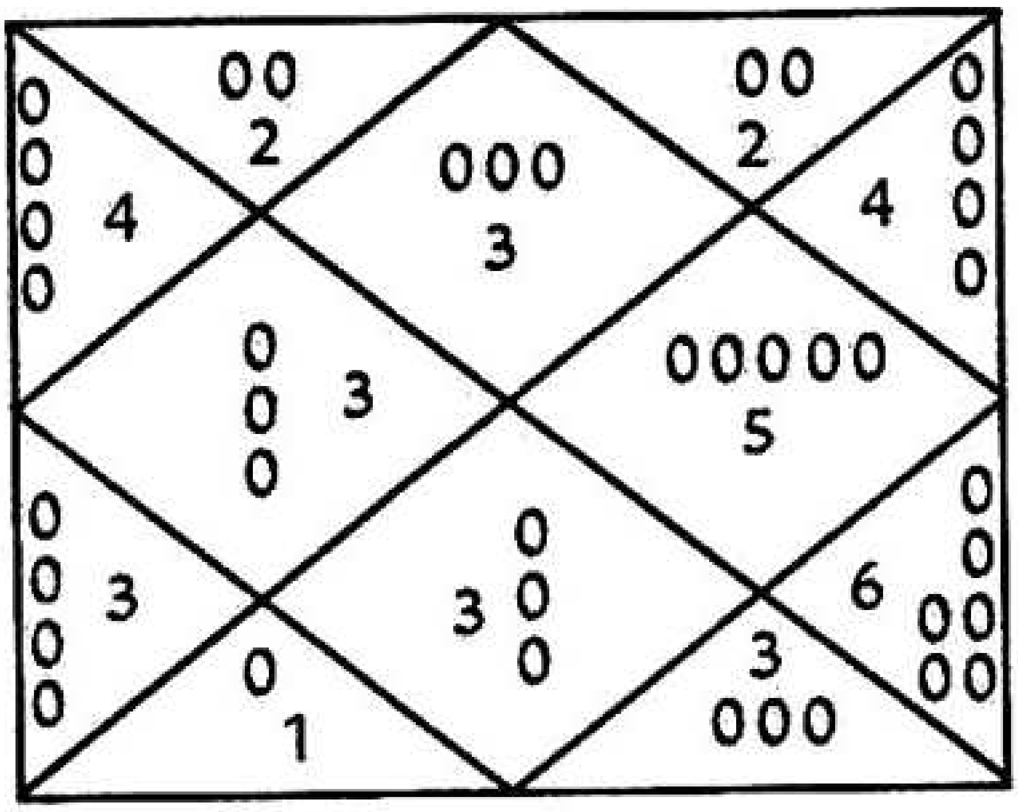
श्रीमती इन्दिरा गांधी के चन्द्रादि ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्ग भी साथ में दिये जा रहे हैं।



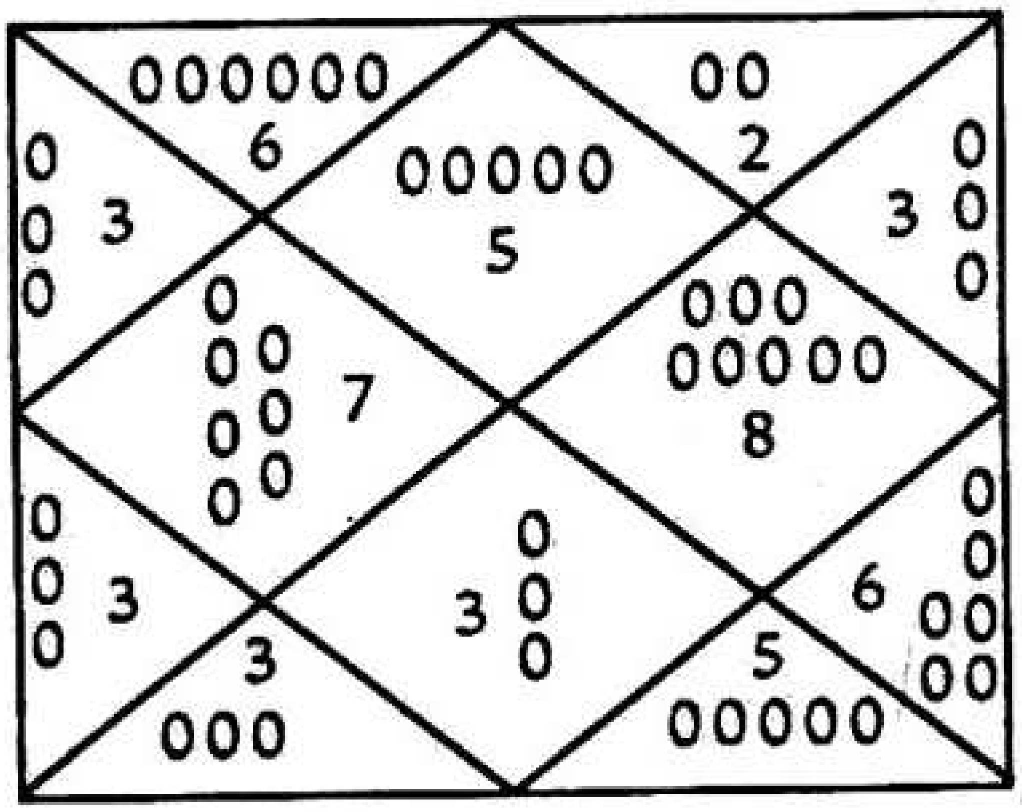
चन्द्राष्टक वर्ग योग 49



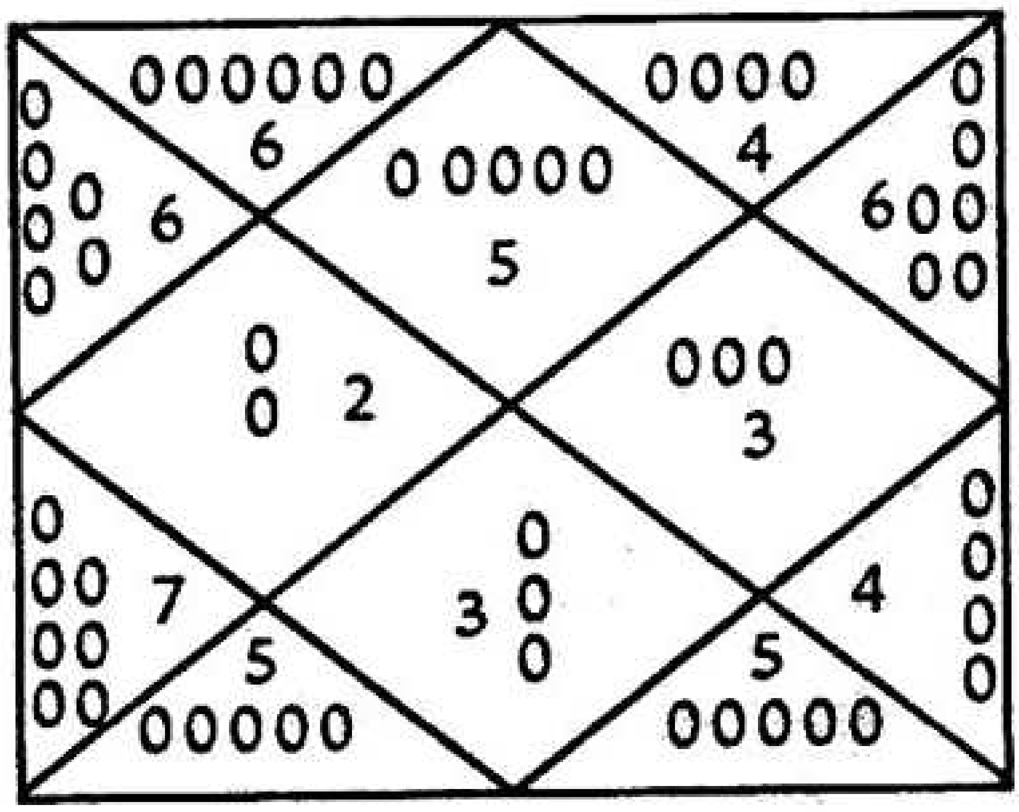
मंगलाष्टक वर्ग योग 39



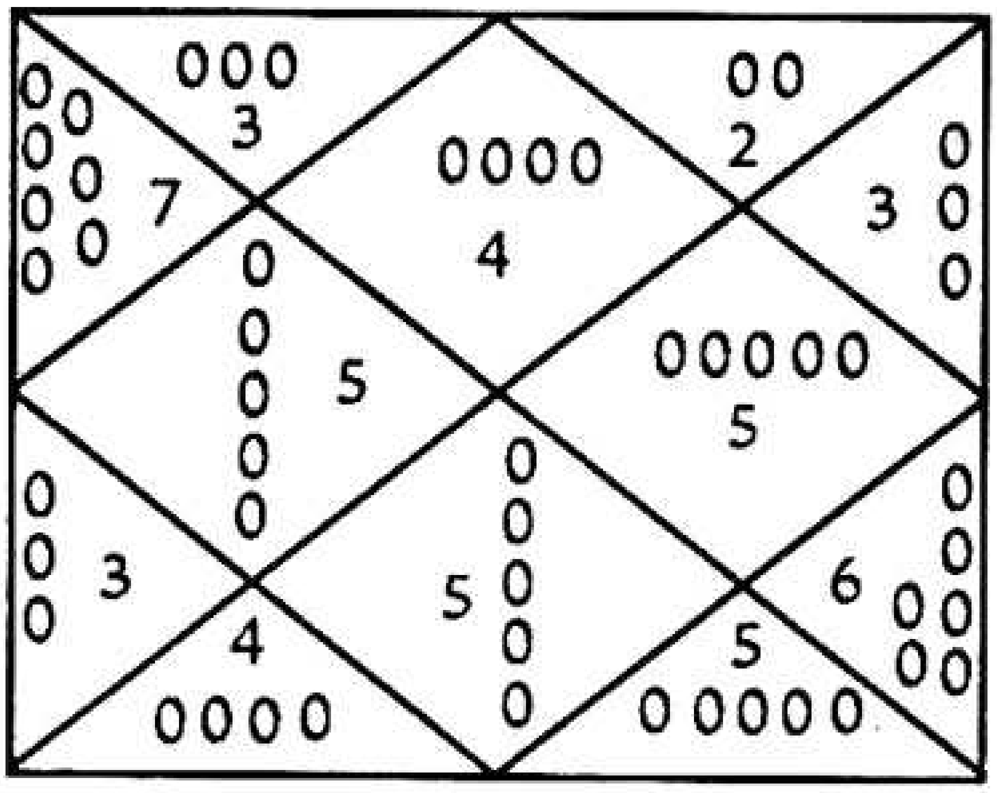
बुधाष्टक वर्ग योग 54



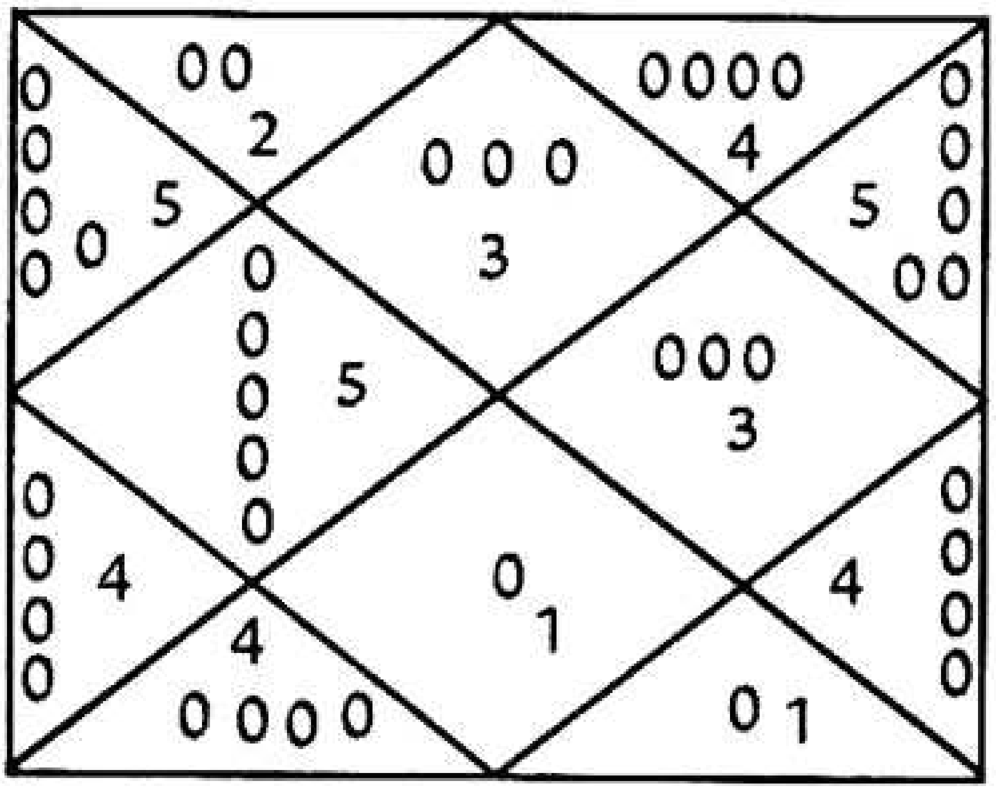
गुरु अष्टक वर्ग योग 56



शुक्र अष्टक वर्ग योग 52



शनि अष्टक वर्ग योग 39



सर्वाष्टक वर्ग में

लग्न को		3 + 1 + 3 + 5 + 5 + 4 + 3	= 24
द्वितीय	भाव	4 + 4 + 2 + 6 + 6 + 3 + 2	= 27
तृतीय	,,	5 + 6 + 4 + 3 + 6 + 7 + 5	= 36
चतुर्थ	,,	5 + 3 + 3 + 7 + 2 + 5 + 5	= 30
पंचम	,,	4 + 4 + 3 + 3 + 7 + 3 + 4	= 28
षष्ठ	,,	2 + 4 + 1 + 3 + 5 + 4 + 4	= 23
सप्तम	,,	3 + 4 + 3 + 3 + 3 + 5 + 1	= 22
अष्टम	,,	3 + 3 + 3 + 5 + 5 + 5 + 1	= 25
नवम	,,	5 + 4 + 6 + 6 + 4 + 6 + 2	= 33
दशम	,,	4 + 5 + 5 + 8 + 3 + 5 + 3	= 33
एकादश	,,	5 + 6 + 4 + 3 + 6 + 3 + 5	= 32
द्वादश	,,	5 + 5 + 2 + 2 + 4 + 2 + 4	= 24

सर्वाष्टिक वर्ग का जन्मकुण्डली में उपयोग यह है कि जिस भाव राशि में 28 से अधिक बिन्दु हों, जीवन में उस भाव सम्बन्धित शुभ फल होंगे। 28 से बिन्दु जितने अधिक होंगे उतना ही अधिक शुभ फल होगा। जितने 28 से कम बिन्दु होंगे उतना ही अधिक भाव सम्बन्धी अशुभ फल होगा। 9, 10 व 11वें भाव में विशेष रूप से 28 से अधिक बिन्दु होने चाहियें तभी जीवन सफल होता है।

अष्टक वर्ग तथा गोचर में कक्षा विचार

1. एक ही गोचर जब एक ही राशि में चलता है तो उस पूरे राशि काल में एक जैसा ही फल नहीं प्राप्त होता, यह हमारा अनुभव है। इस फल के पीछे कारण यह है कि गोचर वश उक्त ग्रह विभिन्न कक्षा के स्वामियों का फल करता है यदि वह कक्षा स्वामी उस राशि में बिन्दु प्रदान करता है। 'कक्षा' का अर्थ है, ग्रह घूमने का अंडाकार वृत्त। ग्रह अंडकार वृत्तों में आकाश में घूमते हैं। उनकी इन कक्षाओं का क्रम 'जातक पारिजात' के अध्याय 2 श्लोक 7 में निम्न प्रकार से कहा है—

   ''भानामवस्थानगता: क्रमेण: मन्दार्य भौमार्क सितज्ञचन्द्रा:''

   अर्थात् सबसे दूर शनि की, उससे अन्दर गुरु की, फिर मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र इस क्रम से कक्षायें हैं। सबसे अन्त में लग्न रखी जाती है।
2. कुछ एक विद्वानों का मत है कि राशि भाव के आठ भाग कर, कक्षाओं में स्थापित करना चाहिए। कुछ एक का कहना है कि राशि के ही आठ भाग कर लेने चाहिएं। यदि भावों का प्रयोग किया जाये तो आरम्भ सन्धि से लेकर भाव मध्य तक के चार भाग और इसी प्रकार भाव मध्य से विराम सन्धि तक के चार भाग, कुल आठ, ऐसा कर लेना चाहिए। परन्तु पैरा 1 वाला क्रम ही अधिक उपयुक्त है।
3. सूर्य एक राशि में लगभग 30 दिन में चल पाता है। अत: वह एक कक्षा अर्थात् राशि के आठवें भाग, 3 अंश 45 कला की एक कक्षा को 30 × 8 अर्थात् 3 दिन 18 घंटों में चल पाएगा। इसी प्रकार चन्द्र एक कक्षा को 6¾ घंटों में, मंगल 5 दिन में, बुध 2½ दिन में, गुरु 1½ मास में, शुक्र तीन दिन में, शनि 3¾ मास में, राहु व केतु 2¼ मास में चलते हैं।
4. **जब कोई ग्रह गोचरवश किसी राशि की आठ कक्षाओं में से किसी ऐसी कक्षा से गुजरता है जिसमें कि इसको किसी ग्रह द्वारा बिन्दु की प्राप्ति**

होती है तो वह ग्रह उस कक्षा संचरण के समय शुभ फल करता है। साथ ही ध्यान रखें कि वह गोचर ग्रह नीच, अस्त अथवा शत्रु राशि में न हो।

5. चूँकि सभी ग्रह गोचर वश घूमते हैं, हो सकता है कि किसी राशि में एक से अधिक ग्रहों को एक ही कक्षा में कई अन्य ग्रहों द्वारा बिन्दु की प्राप्ति हो। जितने अधिक ग्रहों को बिन्दु की प्राप्ति होगी फल उतना ही उत्तम होगा। कक्षाओं में चार ग्रहों द्वारा बिन्दु की प्राप्ति से धन, 5 द्वारा सुन्दर स्वास्थ्य, धन, मान, भूषण आदि, 6 से राज्य और 7 से जातक राजाओं का राजा होता है।
6. जब कोई ग्रह गोचरवश किसी ऐसी कक्षा से गुजर रहा हो जहाँ इसको बिन्दु मिलता है तो शुभ फल इस गोचर ग्रह के कारकत्व के सम्बन्ध में होता है। दूसरे, यह फल ग्रह के जीव, मूल, धातु वर्गीकरणानुसार भी मिलता है। तीसरे, यह फल लग्न से गिनकर उस भाव के प्रभावों से भी सम्बन्धित होगा जिसमें से वह ग्रह गुजर रहा है और चौथे, उस भाव से भी सम्बन्धित होगा जोकि बिन्दु देने वाले ग्रह से गोचर ग्रह का होता है।
7. उदाहरण के लिए मान लीजिए कि गोचर वश सूर्य मीन राशि से जा रहा है और राश्यादि स्पष्ट 11.2°.4' है। **इसका अर्थ यह हुआ कि सूर्य राशि के पहले अष्टम भाग अर्थात् शनि की कक्षा (देखिए पैरा 1) से गुजर रहा है।** अब मान लीजिए कि मीन राशि में सूर्य को शनि अष्टक वर्ग में बिन्दु प्रदान करता है तो सूर्य उस समय शुभ फल देगा और वह फल सूर्य, शनि व मीन राशि सभी से सम्बन्धित होगा। सूर्य चूँकि आँख का कारक है तो जो वस्तु प्राप्त होगी वह देखने में सुन्दर होगी। सूर्य चूँकि 'मूल' का प्रतिनिधित्व करता है, वह वस्तु कोई 'मूल' श्रेणी की कपड़ा आदि होगी। शनि का चूँकि 'स्पर्श' से सम्बन्ध है, वह वस्तु छूने में अच्छी होगी और सूर्य चूँकि मीन राशि में मित्र गृही होने से हर्षित है, अत: वह वस्तु सुखद होगी। इस प्रकार सब सम्बन्धित ग्रहों आदि से गोचर का कक्षाओं द्वारा फल कहना चाहिए।

सूर्यादि ग्रहों का गोचरवश विभिन्न कक्षाओं से गुजरने का क्या फल होता है ? इसका विवरण हम नीचे दे रहे हैं—

सूर्य का सभी भावों में अनुकूल कक्षा में फल जहाँ बिन्दु प्राप्त हो

प्रथम कक्षा (शनि की)—स्वास्थ्य का उत्तम रहना, छोटे और बड़े सभी से मेल-मिलाप व मित्रवत् व्यवहार, पशु-धन की प्राप्ति, जमीन-जायदाद की प्राप्ति।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—राज्य और राज्य कर्मचारियों से लाभ, ज्ञान वृद्धि, आध्यात्मिक प्रगति, प्रताप वृद्धि, शत्रुओं पर विजय तथा धन वृद्धि।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—स्वर्ण, रत्न, आभूषण आदि की प्राप्ति, पुरुषार्थ के कार्य, विवेकपूर्ण आचरण, न्यायपूर्ण व्यवहार तथा राजपुरुषों से सम्पर्क।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—मान-कीर्ति में वृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सच्चरित्रता, राज्य कृपा व यज्ञीय कार्य।

पंचम कक्षा (शुक्र की)—गौ आदि पशु-धन की प्राप्ति, आध्यात्मिक प्रवृत्ति, स्त्री जाति से लाभ और सुख के साधनों की वृद्धि।

छठी कक्षा (बुध की)—बुद्धि तीव्रता, विद्या वृद्धि, यज्ञीय कर्मों में प्रवृत्ति, धन बाहुल्य, शास्त्र अध्ययन, शत्रु नाश तथा विजय।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—अन्तर्मुखी वृत्ति, राज्य कृपा, विज्ञान व अनुसन्धान में रुचि, स्त्रियों से लाभ तथा उत्तम स्वास्थ्य।

आठवीं कक्षा (लग्न की)—मान में विशेष वृद्धि, दृढ़ स्वास्थ्य, राज्य कृपा, धन प्राप्ति तथा राजपुरुषों से सम्पर्क।

सूर्य का सभी भावों में जहाँ इसे रेखा मिलें प्रतिकूल फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—नीच कर्म, रोग, राज्य से वैमनस्य, दुष्टवृत्ति, कृतघ्नता, निम्न श्रेणी के लोगों से वैर।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—धन की कमी, अज्ञानता के कार्य, धर्म में पाखण्ड, गर्भपात, पित्त के रोग।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—शत्रुओं द्वारा पराजय, शरीर पर चोट, मूर्खता के कार्य, अग्नि से दुर्घटना, आँख में कष्ट।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—रोग, अपमान, राज्य से हानि, निकृष्ट कार्य तथा पराजय।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—कामुकता, कायरता, धन की कमी, अस्वस्थता, निकृष्ट वातावरण, स्त्री वियोग।

छठी कक्षा (बुध की)—धोखा देना, विद्या में असफलता, बन्धुजनों से विरोध, पराजय, कायरता।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—निर्धनता, गम्भीर चिन्ता, रोग, खाने-पीने की चिन्ता, सामान्य जन से विरोध।

आठवीं कक्षा (लग्न की)—स्वास्थ्य हीनता, दुष्प्रवृत्ति, दु:ख, धन की कमी, अपमान, राज्य की ओर से चिन्ता।

चन्द्र का सभी भावों में बिन्दु प्राप्ति का फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—लोकप्रियता, निम्न श्रेणी के लोगों से लाभ, विवेकपूर्ण वैराग्य, भाग्य में वृद्धि, धार्मिक विषयों में रुचि, भूमि प्राप्ति।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—मानसिक शान्ति, घरेलू सुख साधनों का लाभ, राज कृपा प्राप्ति, ज्ञानवर्धक वार्ता में अभिरुचि, धन-ऐश्वर्य वृद्धि।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—उत्साह वृद्धि, बन्धु वर्ग तथा भाइयों को लाभ, जायदाद प्राप्ति, मित्र सुख, धन वृद्धि।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—राज्य की ओर से लाभ, मान वृद्धि, धन वृद्धि, महान् व्यक्तियों से सम्पर्क, अध्यात्म में अभिरुचि।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—राजपुरुषों का संग, विलास के साधनों की वृद्धि, सत्यप्रियता, स्त्री सम्पर्क में वृद्धि, विनम्रता, विवेक।

छठी कक्षा (बुध की)—विद्या में वृद्धि, स्त्री वर्ग से लाभ, लावण्य रूप प्राप्ति, शास्त्रीय चिंतन मनन, भाषण में पटुता, धन वृद्धि।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—जीवन स्तर में वृद्धि, मन की शान्ति, स्त्री वश से लाभ, धन बढ़े, उत्तम स्वास्थ्य, सुन्दर स्त्री की प्राप्ति।

आठवीं कक्षा (लग्न की)—धन में विशेष वृद्धि, व्यापार में सक्रियता, प्रसन्नता तथा मानसिक शान्ति, सम्पर्क में वृद्धि, जलीय पदार्थों से लाभ।

चन्द्र का अष्टक वर्ग में रेखा प्राप्ति का फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—दुर्बलता व शारीरिक क्षीणता, धन का अभाव, पराजय, अपमान, पाप-कर्मों में प्रवृत्ति, निम्न श्रेणी के लोगों से हानि, दुःख, मानसिक क्लेश, खाने-पीने की वस्तुओं में कमी।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—पाखण्ड वृत्ति, धन हानि, बुरे विचार, गुरुजनों का कोप, पुत्रों से नुकसान।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—पाप वृत्ति, भाई-बन्धुओं से वैर, राज्य की ओर से वैमनस्य, शरीरांगों पर चोट, आँख में कष्ट, पित्त रोग, अग्नि सम्बन्धी कार्यों से हानि।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—राजपुरुषों से भय, मित्रों द्वारा विरोध, स्वास्थ्य बिगड़ जाये, छाती में कष्ट, धन हानि।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—कामुकता, दुष्ट स्त्रियों का संग, स्त्री वर्ग से हानि, विलास की वस्तुओं के व्यापार से हानि, मान हानि, जलीय कार्यों से हानि, शत्रु संख्या में वृद्धि।

छठी कक्षा (बुध की)—विद्या में असफलता, बुद्धिहीनता, बंधुजनों से विरोध, कायरता, कपड़े आदि में हानि, स्त्री वर्ग से हानि, पराजय।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—धन ह्रास, मानसिक क्लेश, फेफड़ों रोग (Pleurisy), स्त्री वर्ग से हानि, निज वर्ग से भी हानि, स्वजन शत्रु हो जायें, जलीय पदार्थों के कार्यों से हानि, खाद्य पदार्थों के व्यापार से हानि।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—आर्थिक हानि, स्वास्थ्य दोष, दु:ख, क्लेश, भय, मतिभ्रम, स्वकीय कार्यों से हानि।

मंगल का अष्टक वर्ग में बिन्दु प्राप्ति का फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—जमीन-जायदाद प्राप्ति, उत्साह वृद्धि, विजय प्राप्ति, सुख वृद्धि, नौकरों से सुख, बुरे व्यक्ति भी लाभप्रद सिद्ध हों।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—गुरुजनों की कृपा से शक्ति में वृद्धि, मित्र वृद्धि तथा उनसे लाभ, राज्य कर्मचारियों से लाभ, प्रताप वृद्धि, ऊहापोह शक्ति में अभिवृद्धि, शरीर पुष्टि, बन्धुजनों का उत्कर्ष, विजय प्राप्ति, भूमि लाभ।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—पुरुषार्थ में विशेष वृद्धि, घर प्राप्ति, सेना के अफसरों से मेल-मिलाप, बन्धुजनों से लाभ, बुद्धि प्रखरता।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—पुरुषार्थ से लाभ, राज्य कृपा व मान, कार्य कुशलता, आध्यात्मिक रुचि, बिजली के सामान के व्यापार से लाभ, भूमि प्राप्ति।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—सद्व्यवहार में रुचि, कला के प्रति रुझान, स्त्री वर्ग से लाभ, विलास, सामग्री के व्यापार से लाभ, प्रमुख व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़े, उत्तम स्वास्थ्य।

छठी कक्षा (बुध की)—विद्या प्राप्ति, सूझ-बूझ की उत्तमता, बन्धुजनों से लाभ, कपड़े के कार्य से लाभ, विजय, शास्त्रों में अभिरुचि, व्यापार से लाभ।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—राज्य कर्मचारियों—विशेषतया रक्षा विभाग के लोगों से लाभ, उत्तम राजसी खाद्य पदार्थों की प्राप्ति, भूमि प्राप्ति, उत्साह वृद्धि, कार्य-कुशलता, बन्धु वर्ग की वृद्धि, मित्रों से लाभ।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—जमीन-जायदाद के क्रय-विक्रय से लाभ, बन्धु जनों से लाभ, अग्नि सम्बन्धी कार्यों से लाभ, पुरुषार्थ में विशेष वृद्धि, संकल्प शक्ति, प्रताप में वृद्धि।

मंगल का अष्टक वर्ग में रेखा प्राप्ति का फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—चोरों से डर, बुद्धि ह्रास, शत्रुओं की उत्पत्ति, बन्धुजनों से विरोध, रक्त विकार, दुष्ट जनों की संगत।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—बड़ों के कोप से शक्ति ह्रास, राज्य कर्मचारियों से वैमनस्य, पित्त रोग व पेट में कष्ट, धन हानि, विद्या का दुरुपयोग।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—भाई-बहन में वैर, स्वजनों से वैमनस्य, पाप में वृत्ति, पराजय, बुद्धि का दुरुपयोग।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—राज्य विरोधी कर्म से राज्य विरोध व दण्ड, आँख में कष्ट, पित्त रोग, क्रोध अधिक, पाप प्रवृत्ति में वृद्धि।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—अन्य स्त्रियों की ओर कामुकता दृष्टि, पाप प्रवृत्ति, स्त्रियों से हानि, शत्रु वृद्धि, स्त्री के कारण कष्ट, बुराई की ओर रुझान तथा बल प्रयोग।

छठी कक्षा (बुध की)—अकस्मात् शत्रु उत्पत्ति, बन्धुजनों का अपमान तथा नाश, धूर्त, बुद्धिहीनता, व्यापार में हानि, पुरुषार्थ करने पर भी विद्याहीनता।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—मित्रों से हानि, व्यय वृद्धि, पाप कर्मों में प्रवृत्ति, आँखों में कष्ट, धन ह्रास व कामुकता में वृद्धि।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—क्रूर कर्मों में प्रवृत्ति, झगड़े में पराजय, गंभीर शारीरिक कष्ट, भय, धन हानि, बिजली के कार्यों से हानि।

बुध का अष्टक वर्ग में बिन्दु प्राप्ति का शुभ फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—मित्रों व निम्न श्रेणी के लोगों से लाभ, आचार शुद्धि, गूढ़ विचार शक्ति, लोहे आदि धातु के कार्यों से लाभ।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—ज्ञान में अभिवृद्धि, परोपकार व शास्त्र अध्ययन में विशेष रुचि, तीर्थ-यात्रा, यज्ञ-कर्म, शारीरिक तेज में वृद्धि, विद्या प्राप्ति।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—तर्क शक्ति में विशेष वृद्धि, लाल वस्तुओं के व्यापार से लाभ, राज्य के क्षेत्र में कुशलता का प्रदर्शन, विजय, शौर्य वृद्धि, शत्रु पराजय, शुभ कर्मों में रुचि, युक्ति-युक्त वाणी का प्रयोग।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—आध्यात्मिक प्रगति, विद्या वृद्धि, यज्ञीय कर्मों में प्रवृत्ति, बन्धुजनों से प्रेम, बुद्धि कुशाग्रता व लेखों में गहनता।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—विलासिता के साधनों की उपलब्धि, स्त्री वर्ग से सद्भावना, विद्वज्जनों से प्रेम, सत्यप्रियता में अभिवृद्धि, वाणी में मिठास और सांस्कृतिक अभिरुचि।

छठी कक्षा (बुध की)—विशेष बुद्धि उपयोग, व्यापार वृद्धि, लेखन कला में रुचि, बन्धुजनों से लाभ, शत्रुओं पर विजय, खाद्य पदार्थों में वृद्धि, कपड़े के व्यापारियों से लाभ, वाद्य कला व ज्योतिष विद्या में रुचि।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—व्यापार से लाभ, सद्‌बुद्धि प्राप्ति, यज्ञीय कर्मों में प्रवृत्ति, स्त्री वर्ग से लाभ, शहरी जनता से लाभ, रूप लावण्य में अभिवृद्धि, कपड़े के व्यापार से लाभ।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—मान वृद्धि, आध्यात्मिकता में रुचि, यज्ञीय कर्मों में प्रवृत्ति, धन-धान्य वृद्धि, सन्तान को विशेष लाभ।

बुध का रेखा प्राप्ति पर विभिन्न कक्षाओं में अशुभ फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—बुद्धि का पाप की दिशा में प्रयोग, विचाराधीन भाव के गुणों की मन्दता (Paucity), बन्धुजनों से विरोध, बुद्धि मन्दता, विद्या में असफलता।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—पाखण्ड लिप्तता, राज्य दण्ड से व्यापार में हानि, गुरुजनों से मतभेद, आचार-विचार में बिगाड़, स्वार्थपरकता।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—व्यापार में अचानक हानि, पाप भावना में वृद्धि, सौन्दर्य में ह्रास, अन्तड़ियों का ऑपरेशन (Operation), राज्य कर्मचारियों से कष्ट।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—बुद्धि ह्रास, विद्या में असफलता, नम्रता का अभाव, पाखण्ड, व्यापार में हानि, स्वार्थपरकता।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—स्त्रीवर्ग से हानि, गन्दी वस्तुओं से प्यार, झूठ में प्रवृत्ति, बुद्धि का दुष्प्रयोग, सुसंस्कृत विचारों से दूरी।

छठी कक्षा (बुध की)—बुद्धि मन्दता, विद्या हानि, नम्रता का अभाव, धन की कमी, व्यापार में हानि, स्वार्थ की प्रवृत्ति व पराजय।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—शत्रु वृद्धि, परोपकार भावना में कमी, सन्तान को भाग्यहीनता, उल्टी बुद्धि, व्यापार में हानि, चिन्ता वृद्धि, सिरदर्द।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—चर्म रोग, जुआ आदि व्यसन, धन का अभाव, अचानक सिर में कष्ट।

गुरु का अष्टक वर्ग में बिन्दु प्राप्ति पर विभिन्न कक्षाओं में शुभ फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—दार्शनिक ज्ञान प्राप्ति, जमीन (Land) प्राप्ति, निम्न श्रेणी के लोगों से लाभ, शुद्ध आचार-विचार में लगाव, सुख वृद्धि, जन-साधारण से अधिक सम्पर्क।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—गृहस्थ सुखों में विशेष वृद्धि, धर्म और ज्ञान में अभिरुचि, राज्य की ओर से लाभ, धन वृद्धि, सत्कीर्ति, गुरुजनों से कृपा प्राप्ति।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—मित्रों के पुरुषार्थ से धन प्राप्ति, उत्साह में विशेष वृद्धि, पदोन्नति, जातक को भ्रातृ वर्ग से लाभ तथा भ्रातृ वर्ग को भी जातक से लाभ, सदाचार में रुचि।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—राज्यकृपा अथवा राज्य प्राप्ति, राज्य कर्मचारियों एवं अधिकारियों से सुख, आध्यात्मिकता में रुचि, ज्ञान में सूक्ष्मता, स्वर्ण आदि की प्राप्ति, मान वृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, शुभदर्शनों का सौभाग्य, धन वृद्धि।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—गुरुजनों से विशेष लाभ, कानून आदि के ज्ञान में वृद्धि, सत्याचरण, सदाचारी स्त्रियों से लाभ, मंत्रणा शक्ति में वृद्धि, सन्तान प्राप्ति, महात्मा जनों से सम्पर्क, व्यावहारिक सूझबूझ व वाहन प्राप्ति।

छठी कक्षा (बुध की)—हर प्रकार के ज्ञान-विज्ञान में रुचि, धन वृद्धि, सुख वृद्धि, विद्या में उन्नति, देह-सौख्य प्राप्ति, उपदेशादि देने की योग्यता, गुरुजनों का आदर।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—उत्तम स्वास्थ्य प्राप्ति, मन में शान्ति, मित्रों से लाभ, धन वृद्धि, गुरुजनों तथा ईश्वर में आस्था, स्मरण शक्ति की उत्तमता।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—सदाचारी व्यवहार, उत्तम स्वास्थ्य, मान में वृद्धि, राज्य की ओर से कृपा पात्रता, शास्त्र आदि के ज्ञान तथा सुख में वृद्धि व पठन-पाठन से लाभ।

गुरु का अष्टक वर्ग में विभिन्न कक्षाओं में रेखा प्राप्ति पर अशुभ फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—लोभ के कारण धन हानि, दुःख वृद्धि, आचार-विचार में त्रुटि, निम्न वर्ग के व्यक्तियों द्वारा राज्य को हानि।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—दुराचारी वृत्ति, दुःख प्राप्ति, गुरुजनों से विरोध, ज्ञान के दुरुपयोग से हानि, सन्तान को कष्ट।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—मित्रों द्वारा धन नाश, शारीरिक आघात, दुःख प्राप्ति, सन्तान कष्ट, राज्य से विरोध, दुष्कर्मों में प्रवृत्ति, मित्रों से हानि, गुरुजनों से विरोध।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—राज्य द्वारा धन हानि, राज कर्मचारियों से विरोध, मित्रों से वैमनस्य, धन की कमी, पेट में कष्ट, पुत्र से वियोग, गर्भपात।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—शत्रु उत्पत्ति, छिपकर पाप रत होने की प्रवृत्ति, स्त्री वर्ग से हानि, शत्रुओं से धन हानि, झूठ से अधिक लगाव।

छठी कक्षा (बुध की)—ज्ञान का दुरुपयोग, निष्फल वार्तालाप, पाचन-शक्ति का ह्रास, दूसरों से कपटपूर्ण व्यवहार, स्वार्थ सिद्धि व अधार्मिकता की ओर रुझान।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—धन हानि, मित्रों से विरोध, कफ दोष, कुपित होने से कष्ट, दुःख प्राप्ति, मानसिक अशान्ति, जनता द्वारा धन नाश।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—पाखण्ड में वृत्ति, अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी मारना, अपयश, मित्रों से दुःख, मित्रों द्वारा धन नाश।

शुक्र का अष्टक वर्ग में विभिन्न कक्षाओं में बिन्दु प्राप्ति फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—सदाचार प्राप्ति, स्त्री वर्ग से लाभ, मित्रों से लाभ, क्षेत्र प्राप्ति, सुख वृद्धि, निम्न श्रेणी के व्यक्तियों से लाभ।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—उत्तम मन्त्रणा शक्ति प्राप्ति, विशेष धन वृद्धि, सद्व्यवहार में रुचि, धार्मिक प्रवृत्ति, मानसिक शान्ति व आत्म-संयम प्राप्ति, ज्ञान वृद्धि।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—अति उत्साह प्राप्ति, बुद्धि प्रखरता, सत्य में रुचि, भ्रातृजनों से प्रेम, भाइयों को सुख वृद्धि, ब्राह्मणों की सेवा।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—उत्तम स्वास्थ्य, शत्रुओं से भी लाभ, आत्मिक शान्ति, राज-पुरुषों से मिलाप, सदाचरण।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—सन्तान प्राप्ति, सुन्दर वाहन प्राप्ति, सदाचरण, पशु-धन वृद्धि, स्त्री वर्ग से लाभ, भोग विलास के साधनों में वृद्धि, मन्त्रणा शक्ति का प्रयोग।

छठी कक्षा (बुध की)—मित्र प्राप्ति, सांस्कृतिक कार्यरत होना, स्त्री वर्ग से लाभ, विद्वानों से सम्पर्क, सत्यप्रियता, मन्त्रणा शक्ति, मुख पर लावण्य प्राप्ति, वाणी चातुर्य।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—कामुकता वृद्धि, स्त्री वर्ग से लाभ, यश, धन में वृद्धि, मन में शान्ति, सुन्दर खाद्य-पदार्थों की उपलब्धि, जन-साधारण से अधिक सम्पर्क।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—संगीत आदि कला से लाभ, आकृति में आकर्षकता, यश वृद्धि, ब्राह्मणों से प्रेम।

शुक्र का अष्टक वर्ग में विभिन्न कक्षाओं में रेखा प्राप्ति फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—पाप कर्मों में प्रवृत्ति, वीर्य दोष, मूत्रेन्द्रिय में कष्ट, सन्तान का ह्रास, स्त्री से पृथकता, झूठ-कपट के व्यवहार में वृद्धि।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—शत्रु उत्पत्ति, विद्वानों से विरोध, राज्य कर्मचारियों से वैमनस्य, अपनी जाति के व्यक्तियों द्वारा विरोध, पुत्रों से पृथकता।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—पाप कर्मों में प्रवृत्ति, कामुकता, आँखों में कष्ट, स्त्री को कष्ट, वाहन नाश, दण्ड अथवा चोट से कष्ट।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—राज्य की ओर से विरोध तथा दण्ड, आँख में कष्ट, पशु धन का नाश, धन में कमी, भोग सामग्री में कमी, वस्त्र तथा आभूषणों का नाश, मूत्रेन्द्रिय में कष्ट।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—दुष्टजनों का संग, गन्दे वातावरण में निवास, मुखाकृति में विकृति, सुख-साधनों का ह्रास, संतान को कष्ट, उत्साहहीनता।

छठी कक्षा (बुध की)—मित्रों से हानि, लेखन-कला में हानि, लेखक गणों से विरोध, विद्वानों से वैमनस्य, मन्त्रणा की व्यर्थता।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—स्त्री वर्ग से हानि, मानसिक व्यथा, कला के कार्यों में उदासीनता, कामुकता वृद्धि, वस्त्रादि के व्यापार से हानि, पत्नी से कष्ट।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—सन्तान तथा पत्नी से विरोध, संगीत तथा आमोद-प्रमोद के कार्यों में हानि, कामुकता में रति, असत्य व्यवहार, सुख का ह्रास, स्त्री से वैमनस्य।

शनि का विभिन्न कक्षाओं में बिन्दु प्राप्ति शुभ फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—धन तथा भूमि में वृद्धि, जन संपर्क में वृद्धि, निम्न श्रेणी के व्यक्तियों से लाभ, सदाचार में वृत्ति, स्त्री वर्ग से लाभ, धैर्य सम्पन्नता।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—क्षेत्र प्राप्ति, सदाचार में वृद्धि, जन साधारण में मान-सम्मान, सुख व उत्साह में वृद्धि।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—पशुधन व सम्मान में वृद्धि, शत्रुओं से लाभ, मकान-जायदाद प्राप्ति, प्रताप वृद्धि, भाइयों में सद्व्यवहार, कारखाने आदि से लाभ।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—राज्य से लाभ, पूंजीपतियों से लाभ, पदोन्नति, शत्रुओं से लाभ, सुख वृद्धि, विचारों में गम्भीरता।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—मित्रों से लाभ, स्त्री वर्ग से लाभ, पशुधन में विशेष वृद्धि, भृत्य वर्ग से लाभ, मित्र संख्या में वृद्धि।

छठी कक्षा (बुध की)—जमीन-जायदाद की प्रप्ति, मित्र संख्या में वृद्धि, स्त्री वर्ग से लाभ, शास्त्र अध्ययन में रुचि, सदाचार प्राप्ति, भृत्यों से लाभ।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—शत्रुओं द्वारा भी प्रेम का व्यवहार, लोहे-मशीनरी आदि के कार्यों से लाभ, सुख व भूमि की प्राप्ति, स्त्री वर्ग से लाभ, विवेक व वैराग्य की प्राप्ति।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—सुख व आयु वृद्धि, रोग निवृत्ति, भृत्यों से सेवा का लाभ, इंजीनियरिंग आदि कार्यों से लाभ।

शनि का विविध कक्षाओं में रेखा प्राप्ति का अशुभ फल

प्रथम कक्षा (शनि की)—पाप कर्मों में रति, दुःख प्राप्ति, भूमि नाश, भृत्यों से कलह, सामान्य जन द्वारा विरोध।

द्वितीय कक्षा (गुरु की)—पाप प्रवृत्ति, आचार-विचार में बिगाड़ आ जाना, पुत्रों से विरोध, राज्य से कष्ट, दुःख की उत्पत्ति, आय में कमी।

तृतीय कक्षा (मंगल की)—चोरी आदि से हानि, पाप में अधिक प्रवृत्ति, सिर दर्द, चोट आदि से कष्ट, भ्रातृ वर्ग से विरोध, भूमि नाश, पुरुषार्थहीनता, शत्रुओं द्वारा धन नाश।

चतुर्थ कक्षा (सूर्य की)—राज्य से चिन्ता, शत्रुओं द्वारा दुःख का भय, आँखों में कष्ट, भृत्यों द्वारा अवज्ञा, वृत्ति का त्याग, रोग।

पांचवीं कक्षा (शुक्र की)—मित्रों से बिगाड़, गन्दी वस्तुओं से प्यार, पत्नी से वैमनस्य, स्त्री वर्ग से हानि, मूत्रेन्द्रिय का रोग।

छठी कक्षा (बुध की)—विद्या में असफलता, विद्वानों से विरोध, बुद्धि की मन्दता, साहित्य में अरुचि, सिरदर्द, चपलता का ह्रास, उन्माद।

सातवीं कक्षा (चन्द्र की)—जड़ता, धन की कमी, स्त्री वर्ग से हानि, खाद्य पदार्थों की कमी, लम्बी बीमारी, आँखों में कष्ट, सीने में दर्द।

अष्टम कक्षा (लग्न की)—पाप में वृत्ति, वंचना में रुचि, कामुकता में वृद्धि, स्त्री वर्ग से हानि, मानसिक क्लेश, धन हानि, मान हानि व स्थान परिवर्तन।

त्रिकोण और एकाधिपत्य शोधन

पूर्वोक्त प्रकार से जब प्रत्येक ग्रह के अष्टक वर्ग में बिन्दुओं का निर्णय हो जाये तो उन बिन्दु संख्याओं में से कुछ संख्याओं का शोधन किया जाता है, अर्थात् उनको घटाया जाता है। यह शोधन अथवा घटाना दो प्रकार का होता है—एक को त्रिकोण शोधन कहते हैं, दूसरे को एकाधिपत्य शोधन। इन शोधनों का उपयोग आयु निर्धारण करने में तथा घटना काल निर्धारण में किया जाता है।

त्रिकोण शोधन—वह शोधन त्रिकोण राशियों में प्राप्त बिन्दु संख्या में किया जाता है। बारह राशियों की चार त्रिकोण (Triangles) इस प्रकार बनती हैं—

प्रथम त्रिकोण—मेष, सिंह तथा धनु।

द्वितीय त्रिकोण—वृषभ, कन्या तथा मकर।

तृतीय त्रिकोण—मिथुन, तुला तथा कुम्भ।

त्रिकोण शोधन के नियम

(i) **प्रथम नियम** — इन राशियों में से जिस राशि में कम-से-कम संख्या है। उस संख्या को तीन राशियों की संख्या से घटा दो। जो बिन्दु राशियों में शेष रह जायें उनको शोध्यावशिष्ट बिन्दु कहते हैं। जैसे श्रीमती इन्दिरा जी की जन्मकुण्डली में सूर्य को उसके अष्टक वर्ग में मेष 4, सिंह में 4 तथा धनु में 2 बिन्दु मिलते हैं तो त्रिकोण शोधन करने पर मेष, सिंह तथा धनु में क्रमशः 2, 2 तथा 0 बिन्दु रह जायेंगे।

- इसी प्रकार उनकी वृषभ, कन्या तथा मकर राशि में क्रमशः 5, 5, तथा 3 बिन्दु हैं जो कि त्रिकोण शोधन के अनन्तर अर्थात् प्रत्येक में से न्यूनतम संख्या 3 को घटाने के अनन्तर 2, 2, 0 रह जायेंगे।
- इसी प्रकार उनकी जन्मकुण्डली में सूर्य ही के अष्टक वर्ग में मिथुन, तुला तथा कुम्भ में क्रमशः 5, 5, 3 बिन्दु हैं। यहाँ भी 3 को प्रत्येक संख्या में से घटाने पर 2, 2, 0 बिन्दु बचे। इन्दिरा गांधी जी के सूर्याष्टक वर्ग में कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि में क्रमशः 3, 4 तथा 5 बिन्दु हैं। इसलिये त्रिकोण शोधन के अनन्तर इन राशियों में क्रमशः 0, 1, 2 बिन्दु रह जायेंगे।

(ii) **दूसरा नियम** — जब किसी राशि में किसी ग्रह के अष्टक वर्ग में शून्य बिन्दु प्राप्त हो तो त्रिकोण शोधन नहीं होता, क्योंकि न्यूनतम संख्या शून्य का घटाना नहीं बनता। जैसे पं. जवाहरलाल नेहरू के सूर्य के अष्टक वर्ग में वृषभ, कन्या तथा मकर में 6, 7 तथा 0 बिन्दु हैं तो त्रिकोण शोधन करने पर भी वे क्रमशः 6, 7, 0 ही रहेंगे।

(iii) **तीसरा नियम** — यदि त्रिकोण की तीनों राशियों में एक ही अंक संख्या हो तो सब अंको को हटा देना चाहिए। जैसे इन्दिरा जी की जन्म कुण्डली में बुध के अष्टक वर्ग में वृषभ, कन्या तथा मकर में 3, 3, 3 बिन्दु आते हैं तो त्रिकोण शोधन के अन्तर इनमें 0, 0, 0 बिन्दु रह जायेंगे।

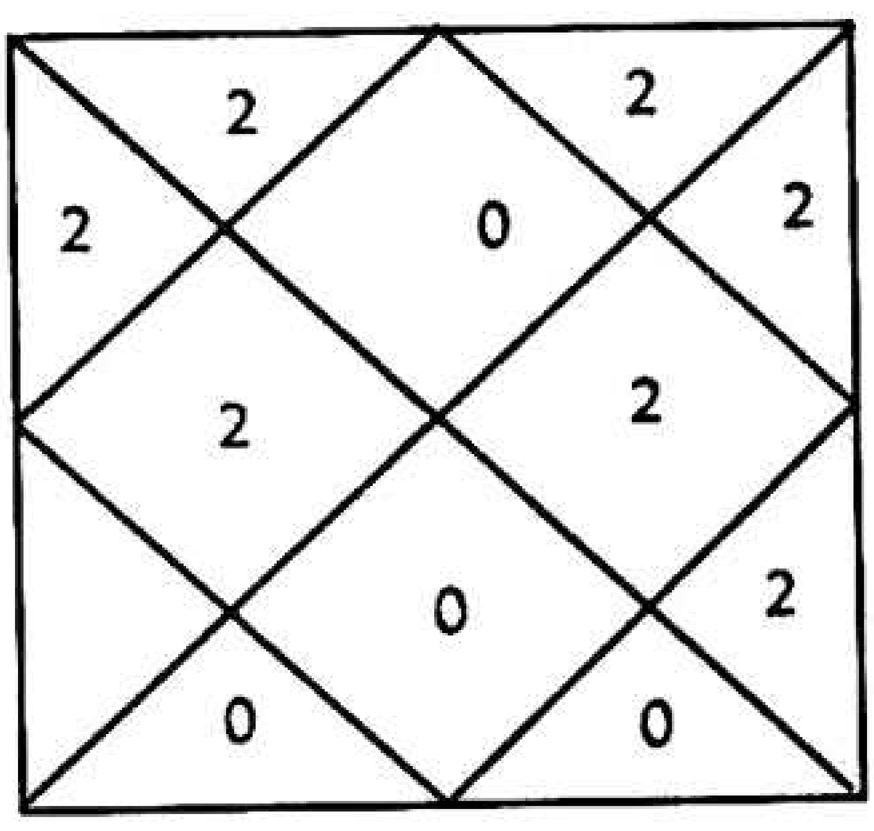
(iv) **चौथा नियम** — यदि त्रिकोण राशियों में दो में शून्य हो तो तीसरी में भी त्रिकोण शोधन के पश्चात् शून्य ही कर लें अर्थात् तीनों राशियों में शून्य होगा।

एकाधिपत्य शोधन

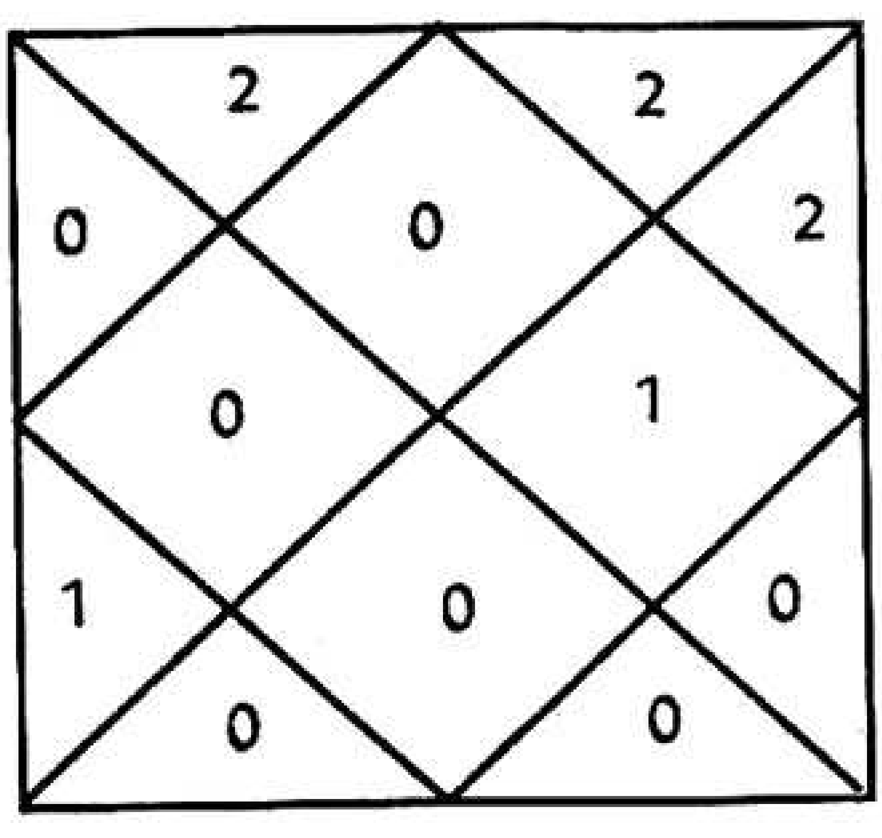
त्रिकोण शोधन के पश्चात् रही बिन्दु कुण्डली में एकाधिपत्य शोधन होता है। कर्क व सिंह को छोड़ कर दो-दो राशियों पर एक ग्रह का आधिपत्य होता है और उन्हीं पर एकाधिपत्य शोधन लागू होता है। यह इस प्रकार है।

1. कोई शोधन नहीं होता (a) यदि एक ग्रह की दोनों राशियों में से प्रत्येक में ग्रह हो, (b) यदि एक ग्रह की दो राशियों में से किसी एक में शून्य हो।
2. शोधन होता है यदि एक ग्रह की दो राशियों में से एक में ग्रह हो और दूसरी में (a) ग्रह अधिष्ठित राशि में यदि खाली राशि की तुलना में अधिक बिन्दु हों तो बाद वाली राशि को शून्य कर दें (b) ग्रह अधिष्ठित राशि में यदि खाली राशि की तुलना में कम बिन्दु हों तो खाली राशि के बिन्दुओं को ग्रह अधिष्ठित राशि के समान कर लें (c) यदि ग्रह अधिष्ठित राशि और खाली राशि में बराबर बिन्दु हों तो खाली राशि को बिन्दु शून्य कर लें।
3. यदि किसी ग्रह की दोनों राशियाँ खाली हों (a) दोनों में बिन्दु समान हों तो दोनों राशियों को बिन्दु शून्य कर लें। (b) यदि बिन्दु समान न हो तो अधिक बिन्दु वाली राशि को प्राप्त बिन्दु कम बिन्दु वाली राशि के समान कर लें।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की कुण्डली त्रिकोण व एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् निम्न होगी—



त्रिकोण शोधन पश्चात्



एकाधिपत्य शोधन पश्चात्

गोचर में शोध्य पिण्ड

गोचर में शोध्य पिण्ड़ों का उपयोग सर्वविदित है। इसके निर्णय के लिए कुछ संख्याओं का राशि गुणक व ग्रह गुणक का उपयोग होता है। इनके लिए ग्रह के भिन्नाष्टक वर्ग का उपयोग होता है। राशियों के गुणक निम्नलिखित हैं—

मेष	7	कर्क	4	तुला	7	मकर	5
वृष	10	सिंह	10	वृश्चिक	8	कुम्भ	11
मिथुन	8	कन्या	5	धनु	9	मीन	12

प्रत्येक राशि के सम्मुख लिखे अंक सदा स्थिर रहते हैं तथा दोनों शोधनों के पश्चात् उपलब्ध संख्या को गुणा किया जाता है। उपलब्ध संख्या राश्यांक या राशि पिण्ड होगी।

ग्रह गुणक निम्नलिखित हैं— सूर्य 5, चन्द्र 5, मंगल 8, बुध 5, गुरु 10, शुक्र 7, शनि 5। ये अंक सदा स्थित रहते हैं। दोनों शोधनों के पश्चात् प्राप्त ग्रह राशि स्थित अंक को ग्रह गुणक से गुणा करते हैं। प्राप्त संख्या **ग्रह पिण्ड** होगी।

वृश्चिक का राशि पिण्ड = 1 × 8 = 8

सूर्य का राशि पिण्ड = 1 × 5 = 5

अत: शोधन पिण्ड हुआ

राशि पिण्ड + ग्रह पिण्ड

8 + 5 = 13 शोध्य पिण्ड

इस प्रकार प्रत्येक ग्रह का शोध्य पिण्ड ज्ञात किया जा सकता जो गोचर विचार में बहुत ही महत्वपूर्ण है।

प्रत्येक दिन में दिन का सबसे अच्छा मुहूर्त शुभ कार्यों के करने के लिए कौन-सा है? इसका निर्णय भी कुण्डली में सूर्य का अष्टक वर्ग देता है। सूर्य से लेकर चार-चार राशि के तीन समूह निश्चित कर लें, जैसे सूर्य और उससे अगली तीन राशियों का पहला समूह, सूर्य से पांचवीं राशि और उनसे आगे तीन राशियों का दूसरा समूह और सूर्य से नवम राशि और उससे आगे तीन राशियों का तीसरा समूह। जिस समूह की चारों राशियों में कुल मिलाकर सबसे अधिक बिन्दु मिलते हों, उस राशि समूह द्वारा इंगित दिन के भाग में मांगलिक कार्य करने चाहिएं। यदि पहले समूह में बिन्दु अधिक हों तो दिन के पहले तृतीय भाग (लगभग 6 बजे से दस बजे प्रात: तक) में, यदि द्वितीय समूह से बिन्दु अधिक हों तो दिन के दूसरे भाग (लगभग दस बजे से दो बजे मध्याह्न तक) में, और तृतीय समूह में बिन्दु अधिक हों तो दिन के तीसरे भाग (दिन में 2 सायं 6 बजे तक) में मांगलीक कार्य

करने चाहिएं। दिन के भागों का निर्णय स्थानीय दिन मान से (जहां कि शुभ कार्य किया जा रहा है) करना चाहिये।

सूर्य गोचर मुहूर्त

जब जन्मकुण्डली के किसी भाव में अष्टक वर्ग में शून्य बिन्दु प्राप्त होते हों तो गोचरवश सूर्य जब उस राशि में आये तो उस समय विवाहादि मांगलिक कार्य नहीं करने चाहिएं, क्योंकि बिन्दु शून्य स्थान से जाता सूर्य कलह और दुःख देने वाला होता है। पराशर का वाक्य भी है—

"सूर्याष्टवर्ग यच्छून्यं मासं संवत्सरं प्रति
विवाह व्यवहारादि मासेऽस्मिन् वर्जयेत्सदा।
कलहो मास दुःखानि शून्यमासे भवन्ति च
एवमादि फलं ज्ञात्वा मासं प्रति समाचरेत्"

प्रत्येक दिन अर्थात् जन्म कुण्डली के अष्टक वर्ग में जिस राशि में शून्य बिन्दु है किसी वर्ष में सूर्य के उस राशि संचार के समय विवाह आदि मांगलिक कार्य नहीं करने चाहिएं क्योंकि ऐसे मासभर में व्यक्ति को दुःख और कलह रहती है।

यदि विद्या अथवा विज्ञान के शुभ समय का निर्णय करना हो तो गोचर में अष्टक वर्ग का उपयोग कीजिए। बुध के शुद्ध पिण्डों को लें और उसको उस बिन्दु संख्या से गुणा करें जो कि बुध को उससे द्वितीय स्थान से प्राप्त होती है। यह बिन्दु संख्या त्रिकोण शोधन तथा एकाधिपत्य शोधन से पूर्व होनी चाहिए। गुणन फल को 12 से विभक्त करो और शेष अंक निकालो। उस अंक को मेष राशि से गिनो, जहाँ पर समाप्त हो वह राशि उत्तम है। अर्थात् उस राशि की दशा अन्तर्दशा में अथवा जब उस राशि में गोचरवश गुरु आये तो उस समय विद्या-अध्ययन आदि उत्तम रहता है। यह नियम बुध सम्बन्धी अन्य बातों पर भी लागू हो सकता है, जैसे राजदूत बनकर जाना, अध्यापक नियुक्त होना, व्यापार का आरम्भ करना आदि।

भाइयों से लाभ कब

अष्टक वर्ग की गोचर पद्धति द्वारा यह भी ज्ञात किया जाता है कि किस वर्ष भाइयों से अधिकतम लाभ रहेगा। मंगल के शुद्ध पिण्डों को लें और उसको उस बिन्दु संख्या से गुणा करें जो उससे तृतीय स्थान हो (यह संख्या

एकाधिपत्य तथा त्रिकोण शोधन से पूर्व की होनी चाहिये)। गुणनफल को 12 पर विभक्त करें। बाकी जो अंक बचे उसे मेष राशि से गिनें। जहाँ पर समाप्त हो, उस राशि में गोचरवश जब बृहस्पति आयेगा तो उस वर्ष भाइयों से लाभ रहेगा।

सन्तान उत्पत्ति का समय

बृहस्पति के शुद्ध पिण्डों को लें, फिर देखें कि बृहस्पति से पांचवें भाव में उसको अपने अष्टक वर्ग में कितने बिन्दु मिलते हैं (ये बिन्दु त्रिकोण शोधन और एकाधिपत्य शोधन से पहले के होने चाहिएं) शुद्ध पिण्डों को और बिन्दु संख्या को गुणा करें और जो गुणनफल प्राप्त हो उसको 27 पर विभक्त करें। शेष निकालें, अब अश्विनी से गिनें जो नक्षत्र निकले उस पर से बृहस्पति जब गोचर प्रस्थान करेगा तब सन्तान प्राप्त होगी।

वर-वधू के मेलापक में अष्टक वर्ग

अष्टक वर्ग का प्रयोग वर और वधू के मेलापक में भी सहायक है। यदि वर की जन्म कुण्डली में जन्म राशि एक ऐसी राशि हो जिसको वधू की जन्म कुण्डली में सबसे अधिक बिन्दु प्राप्त होते हों तो विवाह के अनन्तर सुख समृद्धि रहेगी। इसी प्रकार यदि वधू की जन्मकुण्डली में उसकी जन्म राशि ऐसी राशि बनती हो कि उसे वर की कुण्डली में सबसे अधिक बिन्दु अष्टक वर्ग में प्रापत होते हैं तो भी विवाह के अनन्तर वर-वधू सुखी और समृद्ध रहेंगे।

जातक की मृत्यु का समय

शनि के शुद्ध पिण्ड निकालें। जन्मकुण्डली में शनि से आठवें स्थान में शनि के अष्टक वर्ग में जो बिन्दु त्रिकोण शोधन और एकाधिपत्य शोधन से पहले मिलते हों उनको शुद्ध पिण्डों से गुणा करें। गुणनफल को 27 से विभक्त करें। शेष को नक्षत्र समझकर अश्विनी से गिनें। जो नक्षत्र निकले उस पर से गोचरवश जब शनि प्रस्थान करता है तो जातक की मृत्यु होती है।

यही नियम दूसरे सम्बन्धियों—पिता आदि—पर भी लग सकता है। उदाहरणार्थ यदि पिता पर लगाना है और पिता की मृत्यु का काल ज्ञात करना है तो सूर्य के शुद्ध

पिण्ड लें और दूसरी ओर से सूर्य से नवम भाव में बिन्दु संख्या त्रिकोण शोधन और एकाधिपत्य शोधन से पूर्व की हो उसको लें। दोनों को गुणा करें। जो गुणनफल प्राप्त हो उसको 27 पर विभक्त करें। जो शेष बचे उसको नक्षत्र समझकर अश्विनी नक्षत्र से गिनें। जो नक्षत्र निकले उस पर से गोचर में शनि जब प्रस्थान करेगा तो पिता की मृत्यु होगी।

मृत्यु का मास जानने के लिए सूर्य के शुद्ध पिण्डों को उस बिन्दु संख्या से गुणा करें जो सूर्य को उसके अष्टक वर्ग में उससे अष्टम स्थान में मिलते हैं। गुणनफल को 12 से विभक्त करें। जो अंक बचे उतने भाव मेष राशि से गिनने पर जो राशि आये, सूर्य गोचरवश उस समय में मृत्यु होगी।

यही नियम दूसरे सम्बन्धियों पर भी लागू किया जा सकता है। उदाहरणार्थ भाई को लें। मंगल से तृतीय भाव को लें और उस में मंगल के अष्टक वर्ग के बिन्दु देखें। उस बिन्दु संख्या को एक स्थान पर रखें। दूसरे स्थान में वह बिन्दु संख्या लें जो उक्त तृतीय स्थान से अष्टम को प्राप्त होती है। दोनों को परस्पर गुणा करने से जो संख्या प्राप्त हो उसको 12 पर विभक्त करें। जो शेष बचे उसे मेष राशि से गिनें। जहां पड़े वह मृत्यु मास है। अर्थात् उस राशि में भाई की मृत्यु के समय सूर्य पड़ेगा।

8

गोचर और मुहूर्त

राहु काल, दिशा शूल, तिथियों का गोचर से सम्बन्ध, नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता तथा पूर्णा आदि शब्दों की व्याख्या

उस भाव राशि का निश्चय करें जिसको कि शनि के अष्टक वर्ग में सबसे कम बिन्दु मिलते हैं। जब दिन में इस भाव राशि का उदय हो तो उस दिन काल में कष्टादि का अनुभव हो। जब सूर्य गोचरवश इस राशि में से गुजरता है तो वह सारा मास कष्ट से गुजरता है।

दक्षिण भारत में 'राहु काल' को बहुत अशुभ माना जाता है। यह काल दिन के जिस समय में पड़े उसमें कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं करना चाहिए। राहु काल की तालिका जो लगभग (Approximately) शुद्ध है, नीचे दी जा रही है। बताए गए वारों में, बताए गए राहु काल में महत्त्वपूर्ण कार्य करना अशुभता देता है:

वार	राहु काल	दिन का भाग
रविवार	4.30 से सायं 6.00	अष्टम
सोमवार	7.30 से प्रातः 9.00	द्वितीय
मंगलवार	3.00 से सायं 4.30	सप्तम
बुधवार	12.00 से मध्याह्न 1.30	पंचम
गुरुवार	1.30 से दोपहर 3.00	षष्ठ
शुक्रवार	10.30 से मध्याह्न 12.00	चतुर्थ
शनिवार	9.00 से प्रातः 10.30	तृतीय

'राहु काल' दिनमान का आठवां भाग होता है और यह रविवार को अन्तिम अष्टम भाग, सोमवार को द्वितीय अष्टम भाग, मंगलवार को सातवां अष्टम भाग, बुधवार को पांचवां अष्टम भाग, गुरुवार को छठा अष्टम भाग, शुक्रवार को चतुर्थ अष्टम भाग और शनिवार को तृतीय अष्टम भाग होता है। सूक्ष्मतः 'राहुकाल' स्थानीय दिनमान का आठवां भाग होता है। यह स्थूल रूप से 12 घंटों का अष्टम भाग अर्थात् डेढ़ घंटा होता है जैसा कि तालिका में दिखाया होता है। यह तो केवल राहु काल के समीप का काल है।

गोचर और दिशा शूल

गोचर प्रकरण में दिशाशूल भी जिज्ञासा का विषय है प्रत्येक दिशा का कोई-न-कोई स्वामी ग्रह होता है। ये स्वामी नीचे दिखाए गए हैं :

दिशा	स्वामी ग्रह	विरुद्ध दिशा
पूर्व	सूर्य	पश्चिम
दक्षिण-पूर्व	शुक्र	पश्चिमोत्तर
दक्षिण	मंगल	उत्तर
दक्षिण-पश्चिम	राहु	पूर्वोत्तर
पश्चिम	शनि	पूर्व
पश्चिमोत्तर	चन्द्र	दक्षिण-पूर्व
उत्तर	बुध	दक्षिण
पूर्वोत्तर	गुरु	दक्षिण-पश्चिम

रविवार को पूर्व की दिशा में यात्रा करने से मनुष्य सूर्य के प्रभावों के अनुकूल यात्रा करता है। अतः उसको यात्रा में विघ्न बाधाएं नहीं आतीं और यदि आती भी हैं तो अपेक्षाकृत बहुत कम। यदि सोमवार को अपने स्थान से मनुष्य पश्चिमोत्तर दिशा की ओर यात्रा करता है तो यात्रा सुखपूर्वक होती है और यदि इसके बिल्कुल

विरुद्ध पश्चिमोत्तर की दिशा में यात्रा करता है तो कष्ट उठाता है, इसलिए रविवार को पश्चिम दिशा में, सोमवार को दक्षिण-पूर्व दिशा में, मंगलवार को उत्तर दिशा में, बुधवार को दक्षिण दिशा में, बृहस्पतिवार को दक्षिण पश्चिम दिशा में, शुक्रवार को पश्चिमोत्तर दिशा में और शनिवार को पूर्व की ओर यात्रा नहीं करनी चाहिए। जैसे नदी में बहाव के अनुकूल की दिशा में यात्रा विघ्नरहित होती है इसी प्रकार अनुकूल दिशा में ही यात्रा सुखकर रहती है।

यदि कोई गोचर ग्रह अस्त हो, अर्थात् सूर्य के बहुत समीप एक ही राशि में हो तो वह ग्रह अच्छा फल नहीं करता। इस सन्दर्भ में मुहूर्त चिन्तामणि प्रकरण 1, श्लोक 47 में बादरायण की उक्ति है—

गुरोरस्ते पतिं हन्याच्छुक्रास्ते चैव कन्यकाम्।
चन्द्रे नष्टे उभौ हन्यानस्मादस्तं विवर्जयेत्॥

अर्थात् जब गोचर का गुरु अस्त हो तो विवाह करने पर पति का नाश होता है और शुक्र अस्त के समय विवाह करने पर स्त्री का नाश होता है और यदि चन्द्रमा अमावस आदि तिथियों में अष्टमादि भाव का होकर नष्ट हो तो पति-पत्नी दोनों का नाश होता है। इसलिए 'अस्त' ग्रह को छोड़ दें। इस श्लोक से यह बात भी प्रमाणित होती है कि शास्त्रकारों के मत में गुरु पति का कारक है (न कि शुक्र)। जो लोग शुक्र को पति का कारक मानते हैं वे भूल में हैं।

गोचर में तिथियों की अनुकूलता

दिशाशूल के प्रकरण में हम अभी बता चुके हैं कि अनुकूल दिशा में यात्रा करना ग्रहों के बहाव के साथ चलना है और उनके विरुद्ध चलना कष्ट को बुलाना है। यही बात तिथियों पर भी लागू होती है। जैसी तिथि हो यदि काम भी उसी के स्वरूप के अनुकूल हो जाये तो हमको तिथि की अनुकूलता प्राप्त हो जाती है और उस तिथि में किया हुआ कार्य सिद्धि को प्राप्त हो जाता है। वास्तव में मुहूर्त शास्त्र हमें ग्रहों, तिथियों, नक्षत्रों आदि की अनुकूलता का दर्शन कराता है। तिथियां 30 होती हैं। 15 शुक्ल पक्ष की और 15 कृष्ण पक्ष की। परन्तु इन 30 तिथियों को पाँच-पाँच के 6 समूहों में बांटा गया है। प्रत्येक समूह में तिथियों के नामों का क्रम वही है। **जैसे शुक्ल पक्ष की पहली तिथि को 'नन्दा' दूसरी को 'भद्रा' तीसरी को 'जया' चौथी को 'रिक्ता' और पाँचवीं** को 'पूर्णा' कहते हैं। तिथि ज्ञात करने की

सरल विधि यह है कि चन्द्र स्पष्ट में से सूर्य स्पष्ट को घटाओ जो शेष बचे उसके अंशों को 12 से विभक्त कर दें। जो उत्तर आये वे तिथियां और उन का शेष अंश होता है। मान लीजिए कि किसी व्यक्ति की जन्मकुण्डली में चन्द्र स्पष्ट 7-22°-00 है और सूर्य स्पष्ट 3-18°-00 तो 7-22°-00 में से 3-18°-00 निकालें, तो शेष रहे 4 राशि 4 अंश जिसके कुल अंश हुए 124। इसको 12 पर विभक्त किया तो उत्तर मिला 10 पूर्ण तिथियाँ और 11वीं तिथि के 4 अंश। दूसरे शब्दों में यह एकादशी हुई। चूँकि चन्द्र सूर्य से आगे है, अतः यह शुक्ल पक्ष की एकादशी हुई। अस्तु, तो इसी प्रकार दूसरे समूह में **पहली तिथि नन्दा, दूसरी भद्रा, तीसरी जया, चौथी रिक्ता और पांचवीं पूर्णा होगी।**

तिथियों के नामों का यही नन्दा, भद्रा आदि क्रम **तीसरे, चौथे, पाँचवें और छठे सभी समूहों पर लागू होगा।**

याद रहे कि तिथियों के नन्दा, भद्रा आदि नाम उनके स्वामी ग्रहों के आधार पर रखे गए रखे हैं और इसीलिए अर्थपूर्ण हैं।

नन्दा (पहली तिथि)—इसका स्वामी शुक्र होता है जो हर प्रकार के आमोद-प्रमोद, विलास और शुभ कार्यों से सम्बन्धित है। इसलिए उसके स्वामित्व की तिथि का **नन्दा** नाम सारगर्भित और उपयुक्त है।

भ्रदा (दूसरी तिथि)—इसका स्वामी 'बुध' है। बुध आप जानते ही हैं कि विष्णु रूप है, जो भद्र और कल्याणकारी शुभ कर्मों की साक्षात्मूर्ति हैं। अतः बुध का इस तिथि पर स्वामित्व होने के कारण इसका नाम **भद्रा** युक्ति-युक्त है।

जया (तीसरी तिथि)—जया का अर्थ है जय दिलाने वाली अर्थात् युद्ध-भूमि में विजय दिलाने वाली। इस तिथि का यह नाम इसके स्वामी मंगल के कारण है। मंगल तो सेना का मुखिया है, यदि उसका विजय से सम्बन्ध रखा जाये तो क्या अतिशयोक्ति है?

रिक्ता (चतुर्थ तिथि)—रिक्ता शब्द का अर्थ है खाली, क्रोध रहित, धन रहित, अभावग्रस्त, थोड़ी, कम। 'मन्दो ज्यायान् ग्रहेषु' महर्षि जैमिनी की इस उक्ति के अनुसार शनि गुणों में कम और दोषों में सबसे अधिक है। जैसे सूर्य से दूर होने के कारण उसमें रश्मियों की कमी है, उसी प्रकार अन्य बहुत-सी कमियाँ हैं अतः शनि के स्वामित्व वाली तिथि का **रिक्ता** नामकरण उपयुक्त और वास्तविक है।

पूर्णा (पाँचवीं तिथि)—पूर्णा का अर्थ है पूर्ण, सम्पन्न, धनी, विस्तृत आदि। इस तिथि का स्वामी बृहस्पति है जो धनकारक, प्रसार, विस्तार या हर विद्या में पूर्ण ग्रह है। अब यदि हमें किसी फिल्म की शूटिंग पर जाना है अथवा किसी सिनेमाघर निर्माण की नींव रखनी है अथवा पिकनिक पार्टी पर जाना है तो शुक्रवार और नन्दा तिथि से अच्छा वार और तिथि कोई न होगी। यदि हमको कोई शुभ कार्य, जैसे दूसरों की भलाई, यज्ञ आदि करना है, गरीबों को खाना खिलाना है, धर्म स्थान में दान देने के लिए जाना है तो बुध की तिथि भद्रा से बढ़कर और बुधवार से बढ़कर इस कार्य के लिए कोई दूसरी तिथि व वार न होगा। यदि हमको शत्रु के विरुद्ध किसी सेना या रेजिमेन्ट में रिपोर्ट करनी है और हम जय और विजय के इच्छुक हैं या हम किसी फौजदारी मुकदमे में अपील दायर करवाना चाहते हैं अथवा और कोई क्रूर कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो जया तिथि और मंगलवार से अधिक उपयुक्त तिथि और वार न होगा। रिक्ता तिथि तो खाली तिथि है। इसमें शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

तिथियों के सम्बन्ध में इतना और ध्यान रहे कि चूँकि पहले और छठे समूह की तिथियाँ चन्द्र के सूर्य के समीप होने पर पड़ती हैं, इसलिए मुहूर्त में विशेष शुभ फल ही देने वाली नहीं होंगीं। इन तिथिों का पूर्ण फल तो तीसरे और चौथे समूह में मिल पायेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि गोचर में भी वही तिथि शुभतम है जिसके समय चन्द्रमा सूर्य से अधिक-से-अधिक दूर होता है। अत: निष्कर्ष यह निकला कि सबसे पहले मुहूर्त का वह दिन चुनो जिसमें चन्द्रमा बहुत बलवान् हो अर्थात् सूर्य से दूर हो और उसके बाद नन्दा आदि तिथियों में से कोई तिथि अपने कार्यानुरूप चुन लो और साथ ही वह वार भी जो उन तिथियों के अनुकूल हो।

उपरोक्त बात को मुहूर्तचिन्तामणि में इस प्रकार कहा है—

''नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता च पूर्णे तिथियथोऽशुभमध्यशस्ता: सितेऽसिते शस्त समाधमा: स्यु: सितज्ञभौमार्किगुणौ च सिद्धा:।''

अर्थात् नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा ये जो पाँच तिथियाँ हैं ये मिलकर एक समूह बनाती हैं। जब शुक्ल पक्ष हो तो पहले समूह की तिथियाँ अशुभ (चन्द्रमा सूर्य के सान्निध्य के कारण), दूसरे की मध्यम और तीसरे की शुभ फल करती हैं और जब कृष्ण पक्ष हो तो पहले समूह की शुभ, दूसरे की मध्यम और तीसरे की अशुभ होती हैं।

तिथि शुक्ल पक्ष			तिथि कृष्ण पक्ष
1. नन्दा			1. नन्दा
2. भद्रा			2. भद्रा
3. जया	अशुभ	शुभ	3. जया
4. रिक्ता			4. रिक्ता
5. पूर्णा			5. पूर्णा
6. —			6. —
7. —			7. —
8. —	मध्यम	मध्यम	8. —
9. —			9. —
10. —			10. —
11. —			11. —
12. —			12. —
13. —	शुभ	अशुभ	13. —
14. —			14. —
15. —			15. —

शुक्ल पक्ष में आप देखेंगे कि पहली पाँच तिथियाँ अशुभ हैं और कृष्ण पक्ष में आखिरी की। इसमें कारण यही है कि अशुभ तिथियों में चन्द्र सूर्य के समीप रहने से निर्बल होता है और इसीलिए अशुभ फल करता है और शुभ तिथियों में चन्द्र सूर्य से दूर होता है और इसीलिए बलवान् होकर शुभ फल करता है।

गोचर और जन्म नक्षत्र

(1) राशि-पथ (Zodiac) के 360 अंश होते हैं। इन्हीं अंशों के द्वादशांश अर्थात् 30 अंशों के भाग को राशि कहते हैं। इसी राशि-पथ के 360 अंशों को जब 27 हिस्सों में बराबर बांट दिया जाता है तो प्रत्येक हिस्सा 13 अंश 20 कला होता है। इसको नक्षत्र कहते हैं। राशि और अंश किस क्रम में आते हैं यह नीचे दिखलाया गया है। प्रत्येक नक्षत्र के चार बराबर भाग किये जाते हैं। प्रत्येक भाग का नाम पाद अथवा चरण है।

अश्विनी के 4, भरणी के 4 और कृत्तिका का 1, पाद मिलकर मेष राशि है।

कृत्तिका के 3, रोहिणी के 4, मृगशिरा के 2	वृषभ
मृगशिरा के 2, आर्द्रा के 4, पुनर्वसु के 3	मिथुन
पुनर्वसु का 1, पुष्य के 4 और आश्लेषा के 4	कर्क
मघा के 4, पू.फा. के 4, उत्तरा फा. का 1	सिंह
उत्तरा फा. 3, हस्त 4, चित्रा 2	कन्या
चित्रा 2, स्वाती के 4, विशाखा 3	तुला
विशाखा 1, अनुराधा 4, ज्येष्ठा के 4	वृश्चिक
मूल 4, पू. आषाढ़ा 4, उ. आषाढ़ा 1	धनु
उ. आषाढ़ा 3, श्रवण 4, धनिष्ठा 2	मकर
धनिष्ठा 2, शतभिषा 4, पूर्वा भाद्र 3	कुम्भ
पू. भाद्रपद 1, उ. भाद्रपद 4, रेवती 4 ।	मीन

(2) यदि आप अपनी जन्म राशि जानते हैं तो आप जान सकते हैं कि किस नक्षत्र की दशा जन्म समय पर प्रारम्भ थी। उन तीन नक्षत्रों में से वह नक्षत्र चुन लीजिए जिसकी दशा जन्म पर चल रही थी। जन्म पर किस नक्षत्र की दशा थी, इस बात का ज्ञान आपको निम्नलिखित तालिका से हो सकता है। इस प्रकार आप अपना नक्षत्र जान सकते हैं—

नक्षत्र	दशा का स्वामी
अश्विनी, मघा, मूल	केतु
भरणि, पू. फाल्गुनी, पू. आषाढ़ा	शुक्र
कृत्तिका, उ.फा., उ. आषाढ़ा	सूर्य
रोहिणी, हस्त, श्रवण	चन्द्र
मृगशिरा, चित्रा, धानिष्ठा	मंगल
आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा	राहु
पुनर्वसु, विशाखा, पू. भाद्रपद	गुरु
पुष्य, अनुराधा, उ. भाद्रपद	शनि
आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती	बुध

3. किसी मास में जब आपका जन्म नक्षत्र रविवार को पड़ता हो तो वह रविवार प्राय: आपको बेचैनी देने वाला, व्रथा भ्रमण करवाने वाला और कलह उत्पन्न करने वाला होगा।
4. किसी मास में जब आपका जन्म नक्षत्र सोमवार को पड़ता है तो प्राय: उस दिन आपको खाने-पीने तथा पहनने के लिए अच्छी वस्तुओं की प्राप्ति होगी। उस दिन धन में वृद्धि की सम्भावना रहेगी। जितना ही आपका जन्मकालीन चन्द्र बलवान और शुभ है उतनी ही अधिक आपको अन्न, धन आदि की प्राप्ति रहेगी।
5. किसी मास में जब आपका जन्म नक्षत्र मंगलवार को पड़ता है तो प्राय: आग के सम्पर्क में आने की सम्भावना अधिक रहती है, रक्षा विभाग के कर्मचारियों से मेल-मिलाप होता है, भाइयों से भी व्यवहार अधिक रहता है। वह दिन अधिक पुरुषार्थ पूर्वक व्यतीत होता है। गणित शिक्षा का अधिक अभ्यास होता है और बिजली के यन्त्रों के लेन-देन आदि से काम पड़ता है। यदि तिथि तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी हो तो फल और भी अधिक होता है।
6. किसी मास में जब आपका जन्म नक्षत्र बुधवार को पड़ता है और बुध आपकी जन्मकुण्डली में शुभ ग्रह गुरु आदि से प्रभावित है तो उस दिन आपके हाथों परोपकार के कार्य होते हैं, दूसरों के प्रति सद्भावना जागृत होती है। अपने सम्बन्धियों से सहयोग तथा लाभ रहता है। विद्या में अधिक मन लगता है। व्यापार अच्छे स्तर पर चलता है। यदि उस दिन तिथि द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी हो तो फल और भी अधिक होता है।
7. किसी मास में जब आपका जन्म नक्षत्र गुरुवार को पड़ता हो तो और गुरु आपकी जन्मकुण्डली में बलवान हो तो उस दिन आपको ज्ञान ग्रहण की प्रेरणा अधिक होगी, मन में शान्ति अधिक रहेगी, सुख की अनुभूति भी अधिक होगी, आचार्यों, गुरुओं, महात्माओं से सम्पर्क होगा। राज्य कर्मचारियों से सहयोग प्राप्त होगा, धन बढ़ेगा। यदि उस दिन पंचमी, दशमी अथवा पूर्णिमा हो तो ये घटनाएँ अधिक मात्रा में घटित होंगी।
8. किसी मास में जब आपका जन्म नक्षत्र शुक्रवार को पड़ता है और शुक्र आपकी जन्मकुण्डली में बलवान, शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो आपको विभिन्न प्रकार के आमोद-प्रमोद के अवसर प्राप्त होंगे। उत्तम वस्तुएं खाने और पहनने को मिलेंगीं। स्त्री वर्ग से अधिक सम्पर्क होगा। संगीत, नृत्यादि में अधिक रुचि रहेगी। यदि उस दिन प्रथमा, एकादशी तिथि भी पड़ती हो तो उक्त फल अधिक मात्रा में घटित होगा।

लेखक के निजी अनुभव

गुरु और शनि के आधार पर जीवन की समस्त सुखद और दु:खद घटनाओं का विवेचन, घटना का दिन निकालने की विधि उदाहरण सहित

1. ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन से हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि गोचर में प्राय: सभी सुखद घटनाओं का सम्बन्ध **गुरु ग्रह** से रखा गया है। इसी प्रकार जीवन की दु:खद घटनाओं का फल गोचर में प्राय: शनि द्वारा मिलता है। यह तो आप मौलिक रूप से जातने ही हैं कि सुख का कारक गुरु है और दु:ख का शनि। इसीलिए यह स्वाभाविक है कि गोचर में सब सुखद घटनाओं का, चाहे उसका सम्बन्ध शरीर से हा या मन से, अधिकार से हो या धन से, गुरु से, रखा गया है। इसी प्रकार गोचर की दु:खद घटनाओं को शनि से जोड़ा गया है।
2. जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति द्वारा जिन अच्छी या बुरी घटनाओं के घटित होने का संकेत हमको मिलता है, वे घटनाएं उपयुक्त दशा भुक्ति में घटित होती हैं। मान लीजिए कि हम इस बात का ठीक–ठीक निश्चय कर पाते हैं कि अमुक घटना अमुक ग्रह की महादशा और अमुक ग्रह की भुक्ति में घटेगी तो भी घटना का ठीक समय निर्धारित करना शेष रह जाता है क्योंकि कई भुक्तियां तो दो वर्ष से अधिक समय तक चलती रहती हैं और हमारे लिए समय की तारीख जानना अभीष्ट होता है।
3. किसी भुक्ति में संभावित घटना किस समय घटेगी यह विषय गोचर से सम्बन्धित है। जिस समय कोई शुभ घटना घट रही होती है तो उस गोचर के ग्रह ऐसी स्थिति में होते हैं कि जिससे उनका जन्मकालीन ग्रहों आदि की स्थिति से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, जिन जन्मकालीन ग्रहों द्वारा कि वह शुभ घटना प्रतिपादित होती है। उदाहरणार्थ यदि किसी व्यक्ति का विवाह आज होता है तो आज के ग्रह उस व्यक्ति की जन्मकुण्डली के दृष्टिकोण से विवाहप्रद होंगे। इतना ही नहीं, ये ग्रह आज की स्थिति भी ऐसी बना देंगे

कि व्यक्ति की लग्न से वे शुभ स्थानों अथवा शुभ दृष्टि में स्थित होकर विवाह का अनुमोदन करेंगे।

4. इसी प्रकार यदि जन्मकालीन ग्रह यह इशारा देते हैं कि व्यक्ति की अमुक दशा भुक्ति, जो इस समय चल रही है, चोट पहुँचाने वाली है और यदि उसको उस भुक्ति में चोट लगी है तो चोट वाले दिन में व्यक्ति की लग्न पर से देखे गए ग्रह जन्मकालीन उस अंग को भी हानिकर दीख पड़ेंगे जिस पर कि चोट आई है और आज की कुण्डली में भी उनका प्रभाव उसी तथ्य का द्योतक होगा।
5. यह है मूल सिद्धान्त जिसका सहारा लेकर हम घटनाओं के दिन का निश्चय करते हैं। अर्थात् पहले तो दशा भुक्ति से उस समय का निर्णय करते हैं जिस समय में घटना होती है और फिर भुक्ति के आरम्भ काल से ग्रहों की गोचर गति को देखकर इस बात का निर्णय करते हैं कि किस दिन उस गति द्वारा ऐसी स्थिति बनती है कि वह स्थिति जन्मकालीन प्रासव्य फल की जन्मकालीन ग्रहों तथा उस दिन के ग्रहों से उस घटना को देती है।
6. इस विषय का उदाहरण हम अपनी पुस्तक 'दशा फल रहस्य' (रंजन पब्लिकेशन्स, दरियागंज, दिल्ली) के अध्याय 8 से उद्धृत करते हैं ताकि विषय अधिक स्पष्ट हो जाये। विशेष व्याख्या के लिये इस पुस्तक का अवलोकन करें।
7. किसी व्यक्ति का जन्म 7/8–8–1908 को हुआ। जन्म समय में विंशोत्तरी महादशा में बुध के शेष वर्षादि 4–3–0 थे। ग्रह स्पष्ट इस प्रकार हैं : यह स्पष्ट लहरी (N.C. Lahiri) के पंचांग के अनुसार है। सूर्य 3.22°.25′, चन्द्र 7.26°.40′, मंगल 3.27°.21′, बुध 3.9°.28′, गुरु 3.29°.44′, शुक्र 2.15°.07′, शनि 1.17°.22′, राहु 2.10°.11′।
8. इस व्यक्ति का मुँह 12–1–1925, की सायं को पटाखे खेलते हुए बारूद में आग लग जाने से झुलसकर रह गया। उस समय शुक्र की महादशा में चन्द्र की भुक्ति चल रही थी। सबसे पूर्व हमें यह देखना है कि मुँह का आग से झुलस जाना क्या इस कुण्डली में शुक्र की महादशा और चन्द्र की भुक्ति में युक्ति–युक्त और संगत है? गोचर का प्रश्न तो बाद में हाथ में लिया जायेगा। शुक्र और चन्द्र दोनों जलीय ग्रह हैं। जलीय ग्रहों की दशा भुक्ति में आग का लगना कुछ असंगत–सा प्रतीत होता है, परन्तु यह सत्य है यदि हम

शुक्र और विशेषतया चन्द्र के आधिपत्य पर विचार करेंगे तो बात समझ में आयेगी। भुक्तिनाथ का फल मुख्य होता है, अतः हमको यह देखना होगा कि चन्द्र वास्तव में आग है न कि पानी। चन्द्र के आग होने का कारण यह है कि यह ग्रह एक ऐसी राशि का स्वामी है कि जिसमें सब ग्रह अग्नि द्योतक होकर बैठे हुए हैं। सूर्य और मंगल तो आग हैं ही। बुध उनके साथ मिलकर आग है जैसा कि इस ग्रह के मौलिक तारतम्याकरण के स्वरूप से आप जानते हैं। रह गया गुरु, सो केतु अधिष्ठित राशि का स्वामी है।

9. इस प्रकार हमने देखा कि कर्क राशि का स्वामी वास्तव में महान् अग्नि रूप है और इसीलिए इसका प्रभाव जहाँ पड़ेगा वहाँ आग लग सकती है। अब देखना यह है कि चन्द्रमा कहाँ-कहाँ आग लगा सकता है। एक तो चन्द्रमा की दृष्टि वृषभ राशि पर है जो कि काल पुरुष में दूसरी राशि होने से मुख का प्रतिनिधित्व करती है। दूसरी बात यह है कि भुक्तिनाथ सदा महादशानाथ पर अपना प्रभाव डालता है। यह नियम है (देखिए हमारी 'दशाफल रहस्य')। इस नियमानुसार चन्द्र का अग्निमय प्रभाव वृषभ राशि के स्वामी (मुख) शुक्र पर भी पड़ रहा है। दो संख्या के भाव पर केतु की नवम दृष्टि का अग्निमय प्रभाव पहले ही है। द्वितीयेश स्वयं सूर्य है जो पुनः आग के प्रभाव में है, क्योंकि जैसा हम देख चुके हैं मंगल, बुध, गुरु जिनके साथ सूर्य स्थित है, अग्नि रूप है।
10. तो इस बात का पूर्ण निश्चय हो गया कि शुक्र महादशा, चन्द्र भुक्ति में मुख पर आग लग सकती है। अब प्रश्न यह है कि शुक्र में जो चन्द्र की भुक्ति का समय अर्थात् 1 वर्ष 8 मास है, इनमें किस तारीख को इस दुर्घटना के होने की सम्भावना है। चन्द्र की भुक्ति का आरम्भ तब हुआ जब उसकी आयु 15-7-0 वर्ष थी। यह तारीख 8-3-1924 बैठती है, अतः हमको 8-3-1924 के बाद की 1 वर्ष 8 मास की गोचर स्थिति का अध्ययन करना होगा।
11. गोचर में 8-3-1924 को दु:ख कारक शनि देव का प्रभाव मुख्यतया हमको अध्ययन करना है जिनका प्रत्येक दुर्घटना में हाथ रहता है, तुला राशि के दशम अंश में थे। इनको कम-से-कम तुला राशि के ऐसे अंश पर आना चाहिए जहाँ से आप जन्मकालीन द्वितीयेश सूर्य (मुख) से केवल चार अंश पर हों। सूर्य चूँकि जन्मकुण्डली में 23वें अंश पर है, शनि देव को 19 अंश पर तो होना ही चाहिए। शनि देव तुला राशि के 19वें अंश में 28-12-1924 को प्रवेश करते हैं। उस समय केतु भी मकर के 2 अंश पर है जो कि सूर्य

पर प्रभाव डालने के लिए उपयुक्त है। केतु की दृष्टि वृषभ (मुख) पर भी पड़ती है।

12. अब शुक्र जो कि वृषभ राशि का स्वामी है और मुख का कारक भी, उसको शनि की दृष्टि में होना चाहिए ताकि वह भी आग पकड़ सके, क्योंकि शनि गोचर में केतु अधिष्ठित राशि के स्वामी (मकर के स्वामी) होने से केतु की आग अपने अन्दर रखता है। शुक्र 10-1-1925 को धनु में प्रवेश करता है और शनि की तृतीय दृष्टि में आता है। बस, अब केवल चन्द्र को देखना है कि वह कब शरीर रूप होकर शनि और केतु की लपेट में आता है। चन्द्र कर्क राशि में ही आकर शनि केतु द्वारा पीड़ित हो सकता है। वह कर्क राशि में 10-1-1925 ही को प्रवेश कर जाता है, परन्तु उसे केतु अथवा शनि के प्रभाव में भी तो होना चाहिए तभी शरीर का अग्नि से सम्पर्क होगा। चन्द्र 12-1-1925 की सायं को केतु से 4 अंश दूर कर्क में होता है। बस, उसी समय आग लग जाती है। इस प्रकार पहले दशा भुक्ति द्वारा और फिर गोचर में उपयुक्त दुःखद स्थिति ढूँढ़कर, हम घटनाओं की तारीख का पता लगा सकते हैं। गोचर सम्बन्धी अन्य घटनाओं का उदाहरण देखने के लिए हमारी पुस्तक '**दशा फल रहस्य**' का अध्याय 8 देखिए।